सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू सपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराडकर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, ब्योहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित क्षेत्रेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेशप्रसाद मौलवी फाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्रनाथ "अश्क", डा० ताराचंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश वर्मा, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', प० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', डा० पीताम्बरदत्त बड्थ्वाल, डा० [illegible]न्द्र वर्मा, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि।

कहानी-संग्रह

मोपासाँ की कहानियाँ

फ्रान्स के विश्व-प्रख्यात कहानी लेखक गाइ दे मोपासाँ की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ।

इलाचन्द्र जोशी

यदि आप अभी तक इस सिरीज़ के ग्राहक नहीं बने हैं, तो ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए; या पुस्तक के पृष्ठभाग पर दी हुई सूची में से अपनी पसंद की पुस्तकें चुनकर अपने स्थानीय पुस्तक-एजेंट से लीजिए।

सरस्वती-सिरीज़ नं० १४

मोपासाँ की कहानियाँ

इलाचन्द्र जोशी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

प्रस्तावना

छोटी कहानी के लेखकों की गणना में मोपासां और चेखोव के नाम सबसे पहले आते हैं। मोपासां ने सैकड़ों कहानियाँ लिखी हैं, और उसकी प्रत्येक कहानी अपनी निजी विशेषता रखती है। उसकी कोई भी कहानी आप ऐसी नहीं पावेंगे जो चुटीली, रसीली और रोचक न हो। इसमें सन्देह नहीं कि मोपासां चेख़ोव के समान जीवन का मार्मिक द्रष्टा नहीं रहा है, और गहराई में डुबकियाँ लगाने की चेष्टा उसने कभी नहीं की है। पर जहाँ तक केवल कहानी-कला का सम्बन्ध है वहाँ वह अपना सानी नहीं रखता। प्रस्तुत संकलन में उसकी चुनी हुई कहानियो का अनुवाद किया गया है। अनुवादक का विश्वास है कि इस संग्रह को पढ़ लेने के बाद मोपासां के कला-वैचित्र्य की प्राय: सभी विशेषताओ से पाठक परिचित हो जावेंगे।

विषय-सूची

प्रेमोन्माद

मार्क्विस बर्त्रां के यहाँ भोज के अवसर पर ग्यारह शिकारी, आठ स्त्रियाँ और एक स्थानीय डॉक्टर एक सुन्दर, सुसज्जित टेबिल के चारो ओर बैठे हुए थे। सारा कमरा मोमबत्तियो के प्रकाश से जगमगा रहा था।

भोज जब समाप्ति पर था तो सहसा किसी ने प्रेम की चर्चा छेड़ दी। इस सम्बन्ध मे वाद-विवाद चल पडा कि कोई मनुष्य सच्चे हृदय से एक से अधिक बार प्रेम कर सकता है या नही? ऐसे व्यक्तियो के जीवन से उदाहरण दिये जाने लगे जिन्होने आजीवन केवल एक व्यक्ति से प्रेम किया है, और साथ ही कुछ व्यक्तियो ने ऐसे लोगो का भी उल्लेख किया जो अपने जीवन में एक से अधिक व्यक्तियो से प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर चुके है। अधिकाश पुरुषो ने इस बात पर जोर दिया कि प्रेम एक रोग की तरह है, जो एक ही व्यक्ति पर कई बार पूरी शक्ति से आक्रमण कर सकता है, यहाँ तक कि उसे मृत्यु का शिकार भी बना सकता है।

पर स्त्रियो की धारणा कुछ दूसरे प्रकार की थी। इस सम्बन्ध में स्वभावत उनकी भावुकता वास्तविकता को दबाने की चेष्टा कर रही थी। उनका यह कहना था कि सच्चे प्रेम का अनुभव कोई भी मनुष्य जीवन मे दो वार नही कर सकता। उनकी सम्मति में वास्तविक प्रेम बिजली की

तीव्रता से जब एक बार हृदय को स्पर्श कर लेता है, तो उसकी प्रचण्ड ज्वाला से हृदय ऐसा झुलस जाता है कि फिर वह दूसरी बार किसी गहरे भाव की मार्मिकता का अनुभव करने योग्य नही रह जाता ।

पर मार्क्विस, जो जीवन मे कई बार प्रेम का शिकार बन चुका था, स्त्रियो के इस अनुभव का महत्त्व स्वीकार करने के लिए कदापि तैयार नही था। उसने कहा—"मै दावे के साथ कह सकता हूँ कि मनुष्य एक से अधिक बार अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रेम कर सकता है। जिन व्यक्तियो ने प्रेम के कारण अपने प्राणो की बलि दे दी है, उनके उदाहरणो से मेरी बात खण्डित नही हो जाती। मै आप लोगो को विश्वास दिलाता हूँ कि यदि ऐसे व्यक्ति क्षणिक आवेश मे आकर आत्महत्या करने की मूर्खता न करते, तो उन्हे जीवन मे नये सिरे से प्रेम करने के अवसर मिलते रहते। उनके प्रत्येक बार के प्रेम की अनुभूति वैसी ही उत्कट और उग्र होती, जैसी पहले बार हुई थी। शराबियो और प्रेमियो की दशा एक-सी होती है। जिस व्यक्ति को एक बार शराब का आनन्द मिल चुका है, वह फिर-फिर उसका रस ग्रहण किये बिना न रहेगा, उसी प्रकार जिस व्यक्ति ने एक बार प्रेम किया है, वह दूसरी बार प्रेम किये बिना न रहेगा। पर वास्तव मे यह बात प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर हो करती है।"

इस विवाद की ठीक-ठीक मीमासा न होते देख सबने यह प्रस्ताव किया कि डॉक्टर को मध्यस्थ बनाया जाय। वे जो सम्मति दे, उसी को अन्तिम निर्णय मान लिया जाय। पर डॉक्टर ने कहा—"मुझे खेद है कि मै इस सम्बन्ध मे अपनी कोई निश्चित सम्मति नही दे सकता। पर हाँ, मै मार्क्विस की इस बात से सहमत हूँ कि यह बात प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर करती है। कुछ भी हो, मै एक ऐसी स्त्री के जीवन

से परिचित हूँ जिसका प्रेम पचपन वर्ष तक अटूट बना रहा। उसके इस आमरण प्रेम की कथा बडी मार्मिक है। उस स्त्री को शायद आप लोग जानते होगे। वह टूटी हुई कुर्सियो की मरम्मत किया करती थी और वर्ष मे एक बार हमारे इलाके मे आकर चक्कर लगा जाया करती थी। जिस व्यक्ति से वह प्रेम करती थी वह हमारे ही कस्बे का दवा-फरोश है, जिसका नाम है मोशियो शूके।"

डॉक्टर ने जब पचपन वर्षव्यापी अटूट प्रेम की बात कही थी तो स्त्रियो की भावुकता उमड चली थी और उनके मुखो मे उल्लास की एक दीप्त आभा झलकने लगी थी। पर ज्यो ही उन्होने सुना कि इस सच्ची कहानी की नायिका कुर्सियो की मरम्मत करनेवाली एक साधारण स्त्री है और नायक एक साधारण दवा-फरोश तो उनका उत्साह एकदम ढीला पड गया। उनके मुखो मे घृणा-भरी रेखाओ की सिकुडन यह जता रही थी कि प्रेम के पुलक का सच्चा अनुभव करने के अधिकारी केवल उच्च कुलो के धनी व्यक्ति ही हो सकते है।

पर डॉक्टर ने उनकी इस उदासीनता की परवा न की और कहता चला गया —

"इस स्त्री के मा-बाप कुर्सियो की मरम्मत करने का व्यवसाय करते थे और प्रतिवर्ष विभिन्न स्थानो मे भ्रमण करते रहते थे। अपने जीवन में कभी एक दिन के लिए भी उसे किसी घर मे सोने का सौभाग्य प्राप्त नही हुआ। लढिया की तरह की एक घोडा-गाडी में ही वे लोग रहते, खाते और सोते थे।

"जब वह बहुत छोटी थी तो फटे-पुराने और गन्दे कपडे पहनकर इधर-उधर दौडा करती। गाँव के एक किनारे मे उसके मा-बाप डेरा डालते थे। घोड़े को खोल दिया जाता और वह सडक के एक किनारे

चरता रहता, कुत्ता अपने पाँवो के नीचे अपनी नाक छिपाये सोता, वह छोटी छोकरी हरी दूब मे लोटती रहती और उसके मा-बाप किसी घने पेड की छाँह मे बैठकर टूटी कुर्सियो की मरम्मत करते रहते। जब वह छोकरी अपने मा-बाप के पास से हटकर कुछ दूर खेलने चली जाती तो उसका बाप क्रोध से भरे कर्कश कण्ठ मे चिल्लाकर कहता—'चण्डाल छोकरी ! इधर आती है कि नही ?' अपने माता-पिता के मुखो से स्नेह के इसी तरह के शब्द वह सुना करती थी।

"जब वह कुछ बडी हुई, तो वह गाँव के भीतर जाकर फेरी लगाते हुए चिल्लाती जाती—'टूटी कुर्सियो की मरम्मत ! टूटी कुर्सियाँ !' धीरे-धीरे गाँव के बहुत-से आवारा फिरनेवाले छोकरो से उसकी जान-पहचान हो गई। पर जब वह उनसे खेलती या बाते करती तो उनके मा-बाप उन्हें डाँट बताते और उस गन्दी और हीन-जाति की भिखारिन छोकरी के पास फटकने से निषेध करते। फल यह हुआ कि गाँव के छोकरे उससे घृणा करने लगे। वे जब उसे देखते तो उस पर ईंट-पत्थर बरसाने लगते।

"कुछ स्त्रियाँ उसकी दशा देखकर पिघल जाती और समय-समय पर उसे कुछ पैसे दे दिया करती। उन पैसो की चर्चा वह अपने मा-बाप से न करती और अपने पास छिपाकर रखती। उसकी आयु तब ग्यारह वर्ष की हो चली थी।

"एक दिन जब वे लोग हमारे इलाके मे चक्कर लगा रहे थे, तब कब्रिस्तान की दीवार के पीछे उस छोकरी ने शूके को देखा। उस समय शूके एक छोटा-सा लडका था। वह बिलख-बिलखकर रो रहा था। कारण यह था कि किसी ने उसके पास से दो आने पैसे छीनकर ले लिये थे। उस लड़की ने अपने जीवन मे प्रथम वार किसी अच्छे घराने के लडके

को इस प्रकार व्याकुल देखा था। वह उसके पास गई और जब उसे लडके के रोने का कारण मालूम हुआ, तो उसने अपने सञ्चय की कुल पूँजी—प्राय आठ आने—उसके हाथ मे रख दिये। लडका इतने अधिक पैसे अप्रत्याशित रूप मे पाने के कारण अत्यन्त प्रसन्न हो उठा। लडकी ने बडे स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरा और बडे मीठे-मीठे शब्दो में उसे पुचकारने लगी। लडका पैसे गिन रहा था, इसलिए उस गन्दी छोकरी के दुलार पर उसने कोई आपत्ति नही की। पर लडकी इस भय से कि कही कोई उसे उस लडके के साथ देख ले और लडके पर फटकार पडे, शीघ्र ही उस स्थान से भागकर चली गई।

"महीनो तक वह उस कब्रिस्तान और उस लडके की बात सोचती रही और उसी विषय का स्वप्न देखती रही। दूसरे वर्ष जब वह फिर अपने मा-बाप के साथ इस ओर आई तो उसी लड़के मे फिर मिलने की आशा करके वह इधर-उधर से माँगा हुआ अथवा मजदूरी में से बचाया हुआ कुछ पैसा जमा करके अपने साथ लेती आई। प्राय. डेढ रुपया उसने जोड रक्खा था। वह गाँव मे आते ही दवा-फरोश के लडके को खोजने लगी। पर जब उसने उसे रग-बिरगी शीशियो से सुसज्जित दूकान में शीशे की खिडकियो के पीछे खडे देखा, तो उसके पास जाने का साहस उसे नही हुआ। पर उसकी दुकान के ठाठ देखकर उस लडके के प्रति उसका प्रेम और बढ गया।

"एक वर्ष बाद वह जब फिर आई तो शूके उसे एक स्कूल के पिछवाडे लडको के साथ गोली खेलते हुए दिखाई दिया। वह चुपके से उसके पास गई। उसका हाथ पकडकर धीरे-से खीचकर एक एकान्त स्थान में उसे ले गई और अपना सञ्चित द्रव्य—प्राय तीन रुपया—चुपके से उसके हाथ मे रखकर वह भागकर चली गई। शूके को उसके पिता

ने इतने पैसे कभी एक साथ नही दिये थे। उन्हे पाकर उसका चेहरा अकृत्रिम प्रसन्नता से चमक उठा।

"चार वर्षो तक निरन्तर वह अपना सब सञ्चित द्रव्य शूके को देती रही। उसने कभी उसके दिये हुए पैसो को ग्रहण करने से अस्वीकार न किया। उस लडकी के लिए उन पैसो का मूल्य केवल इसी बात पर था कि उनसे वह अपने मनचाहे व्यक्ति को प्रसन्न कर पाती थी। पर शूके उन पैसो के वास्तविक महत्त्व से परिचित था। उनसे वह बढिया-बढिया मिठाइयाँ खा सकता था अथवा अपने शौक की रग-बिरगी चीजे मोल ले सकता था। इसलिए वह प्रतिवर्ष उस छोकरी की बाट बडी उत्सुकता से देखा करता था। उसकी इस उत्सुकता का परिचय पाकर वह लडकी आनन्द से फूली न समाती थी।

"पर कुछ समय बाद स्कूल की पढाई के लिए शूके को गाँव छोडकर जाना पडा। लडकी को जब यह बात मालूम हुई तो उसने बडे ढग से अपने मा-बाप को फुसलाकर इस बात के लिए राजी किया कि वे इस गाँव मे चक्कर लगाने का समय बदल डाले। जिस अवसर पर स्कूलो मे लम्बी छुट्टियाँ होती थी उन्ही दिनो वह अपने माता-पिता के साथ इस ओर आई। इस बार उसने दो वर्ष बाद शूके को देखा। उसमें आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तन हो गया था और शहर मे रहने से उसका रूप-रग और बात-व्यवहार का ढग सब-कुछ बदल गया था। शूके ने जब इस बार उसे देखा तो वह जूते मचमचाता हुआ उसकी ओर पीठ करके चल दिया। उसके व्यवहार से स्पष्ट ही लडकी के प्रति घृणा टपकती थी। बेचारी इस घटना से ऐसी मर्माहत हुई कि दो दिन तक रोती रही। तब से उसका जीवन घोर दुःखमय बन गया।

"पर उसने इस गाँव मे आना न छोडा। प्रतिवर्ष वह नियमित रूप

से आती थी और आने पर प्रतिदिन एक बार शूके के पास से होकर गुजरती थी। पर वह उसकी ओर एक बार आँख उठाकर भी न देखता। इससे उसके मर्म मे गहरी चोट पहुँचती थी, सन्देह नही; पर इसी कारण उसका प्रेम भी उस दवाफरोश के लड़के के प्रति दिन पर दिन अधिकाधिक बढ़ता चला जाता था। उसके उस पागल प्रेम की तीव्रता का ठीक-ठीक अन्दाज़ लगाना कठिन है। उसकी मृत्यु के पहले जव मैं उससे मिला था, तो उसने मुझसे कहा था—"डॉक्टर साहव, ससार मे मैं केवल एक ही पुरुष को जानती हूँ, दूसरे पुरुष का अस्तित्व ही मेरे लिए कभी नही रहा। वह पुरुष कौन है, यह आप जानते ही है।"

"कुछ समय बाद उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई। वह अकेली अपनी जीविका का निर्वाह करती रही। पर अपने साथ उसने दो भयकर आकृतिवाले खूँख्वार कुत्ते पहरा देने के लिए रख लिये ताकि कोई दुष्ट प्रकृतिवाला व्यक्ति उसे अकेली देखकर तग करने का साहस न करे।

"एक दिन जब वह गाँव मे आई, तो उसने देखा कि शूके एक युवती स्त्री का हाथ पकडे अपनी दूकान से नीचे उतर रहा है। वह शूके की स्त्री थी। उसने हाल ही मे विवाह किया था। इस दृश्य से उसे ऐसा धक्का पहुँचा कि वह उसी दिन सध्या के समय एक तालाव मे कूद पड़ी। एक मछुवे ने उसे कूदते हुए देख लिया था। वह उसे पानी में से निकालकर शूके की फार्मेसी में ले गया। शूके ने स्वय उसकी दवा-दारू की। जब वह होश में आई तो शूके ने उसे हलकी फटकार बताते हुए कहा—"ऐसा पागलपन अब से फिर कभी न किया करना।"

"शूके का उससे बोलना ही उसे स्वस्थ करने के लिए यथेष्ट था। शूके का एक-एक शब्द आनन्द के वाण की तरह उसके मर्म मे प्रवेश

कर गया और वर्षों तक शूके की वह एक अत्यन्त साधारण-सी बात उसके कानों मे गूँजकर अपनी प्रिय स्मृति से उसे पुलकित करती रही।

"उसका सारा जीवन इसी निर्विचित्र गति से बीतता चला गया। वह कुर्सियो की मरम्मत करती जाती और शूके की बात सोचती रहती। प्रतिवर्ष वह शूके को शीशे की खिडकियो के पीछे देखती और दूर ही से एक झलक देखकर पुलकित होकर चली जाती। धीरे-धीरे उसने शूके की दूकान से बेकाम की चीजें खरीदना आरम्भ कर दिया। इस उपाय से वह उसे निकट से देखकर और उसके मुँह से दो-एक शब्द सुनकर अपने को धन्य समझती। जो दवाये वह खरीदती वे उसके किसी काम न आती, उन्हे गाँव के किनारे नाले मे जाकर फेक देती। पर अपने पैसो का इससे अच्छा उपयोग भी कोई दूसरा उसे नही सूझता था।

"अन्त मे एक दिन उस खानाबदोश स्त्री की मृत्यु हो गई। मै पहले ही कह चुका हूँ कि उसकी मृत्यु के समय मै उसके पास ही था। मृत्यु के पहले अपने जीवन की सारी करुण-कहानी विस्तार मे मुझे सुनाने के बाद उसने इतने वर्षो से सञ्चित किया हुआ अपना सब धन उस व्यक्ति को समर्पित करने की इच्छा प्रकट की, जिसे वह इतने वर्षो से निरन्तर प्रतिपल चाहती आई थी। उसने मुझसे कहा—"मैने अपने जीवन मे कठोर परिश्रम से जो कुछ कमाया है, बीच-बीच मे स्वय उपवास करके जो कुछ बचाया है, वह सब केवल एक व्यक्ति के लिए—आप जानते है, मै किसके सम्बन्ध मे कह रही हूँ ?"

"उसने दो हजार तीन सौ सत्ताईस फ्रा मेरे हाथ मे रख दिये। जब वह मर गई तो सत्ताईस फ्रा मै उसके अन्तिम सस्कार के लिए पुरोहित के पास छोडकर शेष दो हजार तीन सौ फ्रा (प्राय डेढ हजार रुपया) लेकर मै दूसरे दिन शूके के यहाँ पहुँचा। दोनो पति-पत्नी मध्याह्न-भोजन

समाप्त करके आमने-सामने बैठे हुए गप्पे लडा रहे थे। दोनों हृष्ट-पुष्ट, सुखी और स्वस्थ दिखाई देते थे। मैंने कुछ हिचकिचाते हुए उस दु खी स्त्री के प्रेम का सच्चा इतिहास उनके आगे कह सुनाया।

"ज्योंही शूके को यह मालूम हुआ कि वह नीच कुल की खानाबदोश स्त्री उससे मन-ही-मन प्रेम करती रही है तो उसे ऐसा जान पडा जैसे किसी ने उसका घोर अपमान कर दिया। वह मारे क्रोध के अपने पाँवो को फर्श पर पटकने लगा। उसकी स्त्री भी बौखला उठी और कहने लगी—"वह भिखारिन इन्हे चाहती रही है! वह भिखारिन! वह भिखारिन!"—क्रोध के कारण उससे और कुछ कहते न बना।

"शूके बड़ी बेचैनी के साथ कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक टहलता हुआ खीझ के कारण हकलाकर बोला—"यह मामला क्या है, क्या आप बतला सकते हैं, डॉक्टर साहब? मुझे तो यह बात ऐसी भयकर लगती है कि उसका वर्णन नही हो सकता! यदि मुझे इस बात का कुछ भी भान पहले होता तो मै पुलिस की सहायता लेकर उसे गिरफ्तार करवा के छोडता! ओह! उसका इतना बड़ा साहस कि वह मुझसे प्रेम करती रही!"

"मेरे पवित्र सन्देश का ऐसा बुरा प्रभाव उन लोगो पर पडेगा, इसकी कल्पना मैने नही की थी। मै झेपकर चुप रह गया। पर फिर मैने सोचा कि मै जिस काम के लिए आया हूँ उसे पूरा करके जाना मेरा कर्त्तव्य है। इसलिए मैने कहा—उसने मुझसे यह अनुरोध किया है कि उसने अपने जीवन में जो साधारण-सी पूँजी जोडी है वह सब मै आपको दे दूँ। उसने दो हजार तीन सौ फ्रा मुझे दिये है। यह रकम आपको देने के लिए ही मै आपके पास आया था। पर चूँकि उसके प्रेम की बात सुनकर आप अपने को अपमानित समझते हैं, इसलिए मेरी विनम्र सम्मति यह है कि यह रक़म किसी दातव्य संस्था को प्रदान कर दी जाय।

"इस समाचार से दोनो पति-पत्नी ऐसे विस्मित हुए कि विभ्रान्त दृष्टि से मेरी ओर देखते रह गये। मैंने उनके इस भाव के प्रति उदासीनता प्रकट करते हुए अपनी जेब से सोना, चाँदी और ताँबे के सिक्को का ढेर निकालकर मेज पर रख दिया और कहा—"ये है उसके दिये हुए रुपये। अब बताइए, इनके सम्बन्ध मे, आपकी क्या राय है? क्या आप इन्हें स्वीकार करेंगे या　　।

"श्रीमती शूके ने पहले अपनी सम्मति प्रकट की। उसने कहा—"चूँकि उस स्त्री की यह अन्तिम इच्छा थी, इसलिए इसे अस्वीकार करना उसके प्रति अन्याय करना होगा।"

"उसके पति ने कुछ झेंपते हुए कहा—'इस धन को यद्यपि हम लोग अपने काम में नही ला सकते, पर उसकी अन्तिम इच्छा को ठुकराना भी अनुचित है। इससे हम बच्चो के लिए कुछ चीजे मोल लेगे।"

मैंने रुखाई से कहा—"जैसी आपकी इच्छा है।"

"मैंने अधिक कुछ कहना बेकार समझकर वह सब रुपया उन्हे दे दिया और अपने घर वापस चला गया।"

दूसरे दिन शूके मेरे यहाँ आया और बोला—"उस स्त्री का छकडा भी तो शायद यही कही पडा होगा। वह पुरानी चीज किसी के क्या काम आ सकती है! उसे आप हमें दे दीजिए।"

मैंन कहा—"आप बडी प्रसन्नता से उसे अपने पास रख सकते है।"

"मेरी बात सुनकर उसे वास्तव मे बडी प्रसन्नता हुई। वह जब जाने लगा तो मैंने उसे वापस बुलाया और कहा—"वह अपना बुड्ढा घोडा और दो कुत्ते भी छोड गई है, क्या आप उन्हें भी ले जाने की कृपा करेंगे?" पर उसने कहा कि वे जानवर उसके किसी काम न आयेंगे और उन्हे ले

जाने से अस्वीकार कर दिया। इस समय वे दोनो कुत्ते मेरे पास हैं, और घोडा गाँव के पादडी ने ले लिया है।

"शूके ने उस छकडे को तोड़कर अपने साग-सब्जी के बाग में उससे एक 'शेड' तैयार करवा लिया है और उस स्त्री के रुपयो से रेलवे शेयर खरीद लिये है।"

यहाँ पर डॉक्टर ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा—"अपने जीवन मे सच्चे और स्थायी प्रेम का इसी एकमात्र जीते-जागते दृष्टान्त का परिचय मुझे प्राप्त हुआ है।"

मार्विवस की पलक आँसुओ से भीगी हुई थी। उसने एक लम्बी साँस भरकर कहा—"इसमें सन्देह नही कि सच्चा प्रेम केवल स्त्रियो के ही जीवन मे पाया जाता है।"

हार

वह एक देहाती डॉक्टर की लडकी थी। जब उसके पिता की मृत्यु हो गई तो उसकी मा उसे पैरिस ले गई। पैरिस मे उसकी मा के जितने सगे-सम्बन्धी थे, उन सबसे उसकी मा ने उसका परिचय कराया। इस उपाय से वह अपनी लडकी के लिए कोई योग्य वर प्राप्त करने की आशा रखती थी। दोनो मा-बेटी के निर्धन होने पर भी उनका शील-स्वभाव सहज, सुन्दर और सुरुचि का परिचायक था।

लडकी जैसी सुन्दर थी वैसी ही गुणवती भी थी। उसके व्यवहार में एक ऐसी शालीनता और स्वाभाविक शिष्टता पाई जाती थी कि कोई भी सुरुचिपूर्ण अनुभवी व्यक्ति उसकी प्रशसा किये बिना नही रह सकता था। उसके सलज्ज मुख में अभिनव लावण्य के अतिरिक्त एक सरस स्निग्धता और कोमल कमनीयता का भाव सब समय टपकता रहता था और उसके अधरो पर जो एक अव्यक्त-सी मुसकान सब समय खेलती रहती थी, वह जैसे उसकी अन्तरात्मा की पवित्रता का आभास झलकाती रहती थी। चारो ओर उसके रूप-गुण की प्रशसा फैल गई और लोगो को समय-समय पर यह कहते सुना जाता था—"जो व्यक्ति इससे विवाह करेगा वह अवश्य ही भाग्यशाली होगा, क्योकि इससे अच्छी स्त्री दूसरी मिल नही सकती।"

मोशियो लाँताँ उससे पहले-पहल अपने दफ्तर के उप-प्रधान के यहाँ मिले थे। उसे देखते ही वे प्रेम के शिकार बन गये। मोशियो लाँताँ की वार्षिक आय प्रायः ढाई हजार रुपये थी। उन्होने सोचा कि इतनी आय

यद्यपि यथेष्ट नही है; पर फिर भी इतने से दो प्राणी अपना जीवन-निर्वाह कर सकते हैं। उन्होने उस सुन्दरी से विवाह का प्रस्ताव किया और उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

मो० लाँताँ ऐसी सर्वगुणसम्पन्ना स्त्री को पाकर बड़े प्रसन्न हुए। वह घर-गिरस्ती के सब कामो को ऐसे सुचारु रूप मे निभाती थी कि देखकर आश्चर्य होता था। कम खर्च में वह घर का ऐसा ठाठ बनाये रहती कि मालूम होता जैसे किसी बडे रईस के यहाँ उसका विवाह हुआ हो। अपने पति की छोटी-से-छोटी आवश्यकता पर भी वह विशेष ध्यान देती थी और सब समय उस पर अपने सहज प्यार और दुलार-भरी बातो की बौछार करती रहती। उसके व्यक्तित्व मे एक ऐसा विचित्र आकर्षण था कि विवाह के छ. वर्ष बाद भी मो० लाँताँ को ऐसा अनुभव होने लगा जैसे अपनी स्त्री के प्रति उनका प्रेम विवाह के प्रथम दिन की अपेक्षा भी अधिक बढ गया है।

केवल दो बाते वे अपनी स्त्री के स्वभाव मे ऐसी पाते थे जो उन्हें विशेष पसन्द नही आती थी—एक तो थियेटर के प्रति उसका प्रेम और दूसरे नकली गहनो का शौक। कुछ परिचिता महिलाये उसके लिए थियेटर मे एक बाक्स रिज़र्व करा लेती थी और उसके पति को विवश होकर उसका साथ देना पडता था। पर दूसरे के पैसो से प्राप्त किये जानेवाले विनोदो का पक्षपाती वे नही थे और अपनी स्त्री का साथ देते हुए उन्हें सकोच होता था। इसके अतिरिक्त नाटको से उन्हे विशेष प्रेम भी नही था।

कुछ समय बाद मो० लाँताँ ने अपनी स्त्री से अनुरोध किया कि वह अपनी किसी सगिनी को साथ लेकर नाटक देखने जाया करे। पहले तो श्रीमती लाँताँ ने इस बात का विरोध किया; पर अन्त मे वह राज़ी हो गई।

मो० लाँताँ भी इस एक बहुत बडे झंझट मे मुक्ति पाकर बहुत प्रसन्न हुए।

नाटक देखने के शौक के साथ ही साथ श्रीमती लाँताँ का झुकाव सजाव और श्रृंगार की ओर बढता चला गया। इसमे सन्देह नही कि उसके पोशाक-पहनावे में अभी तक पहले की-सी ही सादगी पाई जाती थी; पर अपने कानो मे अब वह जो लोलक पहने रहती थी उनके नीचे अब बडे-बडे चमकदार पत्थर लटका करते थे, जो सच्चे हीरो की तरह उज्ज्वल और भडकीले दिखाई देते थे। अपने गले मे वह झूठे मोतियो की लडियाँ पहनने लगी थी और बाँहो मे नकली सोने के बाजूबन्द।

मो० लाँताँ उससे बार-बार स्नेहपूर्ण स्वर मे समझाते हुए कहते—"जब तुम असली हीरो को खरीदने मे समर्थ नही हो, तो नकली हीरो का मोह त्यागकर तुम्हे अपनी स्वाभाविक सुन्दरता और शालीनता से ही सन्तुष्ट रहना चाहिए, क्योकि ये दो गुण ही स्त्री के वास्तविक श्रृंगार है।"

पर वह अपने पति के इस उपदेश को अपनी सरल, स्निग्ध मुसकान से टाल जाती और कहती—"तुम्ही बताओ, मै क्या करूँ? मुझे गहनो का शौक बचपन से है। वह अब किसी प्रकार नही छूटता। यही एकमात्र दुर्बलता मेरे स्वभाव मे है। अपनी प्रकृति को बदलना मेरे लिए कठिन है।"—यह कहकर वह अपने गले से झूठे मोतियो का हार निकालकर उसे अपने पति की आँखो के आगे करके प्रेमपूर्ण दुष्टता के साथ दोनो हाथो मे पकडे रहती और कहती—"तनिक देखो तो सही, ये कैसे सुन्दर है! ऐसा जान पडता है जैसे असली मोती हो!"

मो० लाँताँ मुस्कराते हुए कहते—"तुम्हारी रुचि भी कैसी निराली है?"

जब कभी पति-पत्नी जाडे के दिनो मे अँगीठी के पास बैठे रहते तो श्रीमती लाँताँ अपने नकली गहनो से भरे चमडे के बक्स को खोलकर उसमें एक-एक

करके सब गहने निकालकर पास ही एक मेज पर उन्हे सजाकर रखती और सतृष्ण नेत्रो से बहुत देर तक एकटक उनकी ओर देखती रहती। उसकी उस उत्सुकता-भरी दृष्टि से ऐसा जान पडता जैसे उसके जीवन की विशेष सुखद स्मृतियाँ उन गहनो से सम्बन्धित है। इसके बाद वह सहसा मोतियो का एक हार उठाकर अपने पति के गले में पहना देती और दुष्टतापूर्वक मुस्कराती हुई कहती—"इस समय तुम एक विचित्र स्वाँग से लग रहे हो!"—यह कहकर उत्कट प्यार और दुलार से मो० लाँताँ के बालो को सहलाने लगती।

एक दिन सर्दी बडे कडाके की पड रही थी। श्रीमती लाँताँ उस दिन रात को जब नाटक देखकर आई, तो उसे सर्दी ने पकड़ लिया। उसे ज्वर आ गया। आठ दिन तक वह बिस्तर पर पडी रही और इसके बाद उसकी मृत्यु हो गई।

पत्नी की इस आकस्मिक मृत्यु से मो० लाँता को ऐसा धक्का पहुँचा कि वे शोक से अत्यन्त विह्वल हो उठे और एक ही महीने मे उनके सिर के सब बाल पक गये। वे व्याकुल होकर दिन-रात केवल रोया करते। उन्हे ऐसा जान पड़ता जैसे उनके हृदय को कोई प्रतिपल अत्यन्त निर्दयता से चीरकर फाडे खाता है। पत्नी की प्रन्येक मुसकान, प्रत्येक गति, प्रत्येक दुलारभरी बात अपनी स्मृति से उनके मर्म को छिन्न करती रहती।

समय ज्यो-ज्यो बीतता गया, त्यो-त्यो मो० लाँताँ का दुख घटने के बदले और बढता चला गया। दफ्तर मे जब कोई उनसे उनकी स्त्री की चर्चा छेड बैठता तो तत्काल उनकी आँखो से बरबस आँसू उमड़ पडते। सारा ससार उन्हें अपनी जीवन-सगिनी के बिना सूना जान पडने लगा और चारो ओर निराशा ही निराशा दिखाई देने लगी।

अन्त में एक दिन उन्होने यह अनुभव किया कि पत्नी के बिना रात-दिन के जीवन की पार्थिव समस्या भी अब उनसे ठीक तरह से हल नही हो पाती। श्रीमती लाँताँ अपने पति की अत्यन्त साधारण आय को न जाने किस आश्चर्यजनक रूप से सहेज-सहेजकर खर्च करती थी कि उसके पति को कभी एक दिन के लिए भी किसी बात के अभाव का अनुभव नही हुआ बल्कि वह उतनी ही आय से बहुत-सी अनावश्यक चीजो को भी जोडकर मरी थी। पर अब मो० लाँताँ ने देखा कि उनका अपना ही निर्वाह उतने से नही हो पाता। उनकी पत्नी कैसे भोजन और पान की बढ़िया-बढिया सामग्री लाकर उन्हें खिलाती थी और स्वय भी खाती थी, यह बात उनकी समझ ही मे नही आ पाती थी।

मो० लाँताँ को कर्ज लेना पडा और धीरे-धीरे उनकी निर्धनता ने विकट रूप धारण कर लिया। यहाँ तक नौबत आई कि एक दिन उनकी जेब म एक बेला भी कोई चीज मोल लेने के लिए न रहा। उन्होने घर की कोई चीज बेचकर कुछ रुपयो का प्रबन्ध करने का निश्चय किया। अकस्मात् उन्हे याद आया कि उनकी स्त्री के नकली गहने उनके पास रखे पड़े हैं। इन गहनो के प्रति उनके मन मे प्रारम्भ से ही एक प्रकार के विद्वेष का भाव वर्त्तमान था। वे गहने उनके मन में पत्नी के सम्बन्ध की सुखद स्मृति जगाने के बदले उसकी हठकारिता और कुरुचि की याद दिलाते थे। अपने जीवन के अन्तिम दिनो तक वह नित्य ऐसे नये, चमकीले और भडकीले गहनो को खरीदकर अपने बक्स का बोझ भारी करती चली गई थी, जिनका मूल्य उसके पति की आँखो में कुछ भी नही था। इसलिए मो० लाँताँ ने उन गहनो को बेच देने का सकल्प किया।

सबसे पहले उन्होने कई लडियोवाले हार को बेचना चाहा। उसका मूल्य छ सात फ्रा (प्रायः चार रुपया) होगा, ऐसा अनुमान उन्होने

लगाया। उसे अपनी जेब मे डालकर वे एक जौहरी की दुकान मे आ घुसे। नकली मोतियो का हार जौहरी को दिखाते हुए उन्हें बड़ा सकोच होने लगा, पर जी कडा करके उन्होने उसे निकालकर अन्त मे जौहरी के आगे रख ही दिया।

"यह हार कितने का होगा, क्या आप बताने की कृपा करेगे?"—मो० लाँताँ ने पूछने का साहस किया।

जौहरी हार को उठाकर बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से उसे परखने लगा। उसे अच्छी तरह से उलट-पुलटकर परखने मे कुछ समय लग गया। मो० लाँताँ अधीर होकर यह कहना ही चाहते थे कि "मै जानता हूँ कि इस नकली मोतियो के हार का मूल्य अधिक नही हो सकता;" पर जौहरी उनके मुँह से एक शब्द निकलने के पहले ही बोल उठा—"महाशय, इस हार का मूल्य पन्द्रह हजार फ्रा के लगभग है। पर इसे खरीदने के पहले मैं यह जानना चाहूँगा कि आपको यह हार कहाँ से मिला है।"

मो० लाँताँ आँखे फाड़-फाड़कर जौहरी की ओर देखते रह गये। उन्हें अपने कानो पर विश्वास नही हुआ। हकलाते हुए उन्होने कहा—"क्या आप निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि इसका मूल्य इतना है?"

जौहरी बोला—"इससे कोई अधिक दे, तो आप जाकर पता लगा सकते है। पर यदि पन्द्रह हजार मे आपको देना हो, तो मुझे ही दीजिएगा।"

मो० लाँताँ भौंचक्के-से रह गये और हार को जेब मे डालकर वे बाहर चले आये। इस सम्बन्ध मे वे कुछ सोचने-समझने के लिए अवकाश चाहते थे। कुछ समय बाद वह रू-द-ला-पे नामक सड़क मे एक दूसरे जौहरी की दूकान मे गये। उस दूकान के मालिक ने ज्यो ही वह हार देखा, त्यो ही वह बोल उठा—"खूब! इस हार से मै भली-भाँति परिचित हूँ। यह मेरी ही दूकान से खरीदा गया था।"

मो० लाँताँ ने पूछा—"आपने किनने को इसे बेचा था ?"

उत्तर मिला—"बीस हज़ार को। पर अब मै इसके लिए अठारह हज़ार फ्रा आपको दे सकता हूँ। इसके पहले मुझे यह मालूम हो जाना आवश्यक है कि यह हार आपके पास कहाँ से और कैसे आया।"

मो० लाँताँ ने कहा—"पर—पर—मैं अभी तक इस सन्देह मे पड़ा हुआ हूँ कि यह नकली चीज़ है।"

जौहरी ने उसका नाम और पता पूछा। इसके बाद उसने अपना पुराना रजिस्टर देखा। देखने के बाद उसने कहा—"ठीक है। यह हार श्रीमती लाँताँ को उसी पते पर भेजा गया है, जो आपने अभी बताया है।"

मो० लाँताँ भौचक्का-सा जौहरी की ओर देखता रह गया। जौहरी को उनके मुख का वह भाव देखकर चोरी का सन्देह होने लगा। उसने कहा—"आप इस हार को चौबीस घटे के लिए यही छोड जाइए, मैं आपको एक रसीद देता हूँ।"

मो० लाँताँ ने वैसा ही किया और डगमगाते पाँवो से और भ्रान्त चित्त से वे बाहर चले आये। बाहर आकर वे आकाश-पाताल की बाते सोचने लगे। उनकी स्त्री वह हार उनकी साधारण आय से रुपये बचाकर कभी नही खरीद सकती, इतना तो ध्रुव निश्चय था। अवश्य ही किसी ने उसे वह उपहार के रूप में दिया होगा। पर कौन है वह व्यक्ति जिसने इतना मूल्यवान् हार उसे प्रदान किया है ? और यह उपहार किस कारण से उसे दिया गया है ?

सोचते-सोचते वे सड़क के बीच मे खडे हो गये। एक भयकर सन्देह उनके मन में काँटे की तरह गड़ गया। साथ ही यह सम्भावना भी उनके मन मे जाग पड़ी कि उनकी स्त्री के जितने भी गहने उनके पास है वे सब उसे उपहार के रूप मे प्रदान किये गये होगे। उनका सिर चक्कर

खाने लगा, सारी पृथ्वी, सारा आकाश उन्हे घूमता हुआ दिखाई देने लगा। वे अचेत होकर गिर पडे। जब होश आया, तो उन्होने अपने को एक दवाखाने में पड़ा पाया।

किसी तरह वे घर पहुँचे और अपने कमरे मे जाकर सब किवाड़ बन्द करके वे बिलख-बिलखकर रोने लगे।

दूसरे दिन रात-भर की अनिद्रा के बाद वे जब उठे, तो दफ्तर जाने के योग्य उन्होने अपने को नही पाया। ऐसे भयकर धक्के के बाद दफ्तर मे जाकर काम करना असम्भव नही, तो कठिन अवश्य था। सहसा उन्हे याद आया कि जौहरी के यहाँ उनकी स्त्री का हार पडा हुआ है। हार की याद आ जाने से उनके मन मे फिर एक बार स्त्री के प्रति सन्देह का भूत जाग पड़ा, और उन्होने सोचा कि उस हार को लेने नही जावेगे। पर इतना मूल्यवान्-हार जौहरी के यहाँ यो ही छोड देना भी ठीक नही मालूम हुआ। इसलिए कपडे पहनकर वे दूकान की ओर चल पड़े।

बडा सुहावना दिन था। स्निग्ध, स्वच्छ, नील आकाश ऊपर से सारे नगरवासियो के ऊपर मधुर मुस्कान की बौछार कर रहा था। धनी पुरुष, जिन्हे ससार के रात-दिन के कर्मचक्र के पीडन से कोई सरोकार न था, अपनी बग्घियो मे सवार होकर सैर करने के लिए निकल पडे थे। उनमे से कुछ अपनी जेबो मे हाथ डालकर बागो में टहल रहे थे। उनके मुखो से सुख और सन्तोष के भाव स्पष्ट झलक रहे थे।

मो० लाँताँ सोचने लगे—"धनी लोग ही वास्तव में सुखी है। धन रहने से मनुष्य बडा से बडा दु ख भी सहज मे भूल सकता है। जहाँ चाहे वहाँ भ्रमण कर सकता है, जैसा चाहे वैसा कर सकता है। काश कि मै धनी होता!"

उन्हे भूख लग रही थी, पर उनकी जेब खाली थी। उन्हे फिर से

हार की याद आई। अठारह हजार फ्रा ! इतनी बडी रकम से एक मनुष्य का जीवन बन सकता है।

सोचते-सोचते वे जौहरी की दूकान के पास पहुँचे। पहले तो भीतर जाने मे उन्हे कुछ झिझक मालूम हुई, पर भूख ने जोर मारा, और वे लाज-शर्म सब एक घूंट मे पीकर भीतर घुसे। जौहरी ने उनका बडा स्वागत किया और उन्हे एक कुर्सी पर बिठाकर उसने कहा—"मैंने जाँच करके आवश्यक बातो का पता लगा लिया है। मैंने आपके हार के लिए जो रकम देने को कही थी, उतना मै बडी प्रसन्नता से आपको देने के लिए तैयार हूँ।"

मो० लाँताँ ने अपनी स्वीकृति प्रकट की। जौहरी ने हजार-हजार फ्रा के अठारह नोट उन्हे दे दिये और उनसे रसीद ले ली। नोट लेकर मो० लाँताँ जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि अचानक उन्हे एक बात याद आई। कुछ सकोच के साथ उन्होने जौहरी से कहा—"मेरे पास और भी कुछ जवाहरात है, जो मुझे उसी जरिये से प्राप्त हुए है। क्या आप उन्हे भी खरीदना पसन्द करेगे ?"

जौहरी ने कहा—"अवश्य।"

मो० लाँताँ घर गये, और एक घटे बाद लौटकर बहुत-से जवाहरात अपने साथ लेते आये।

हीरे के लोलको का मूल्य बीस हजार फ्रा बताया गया; चूडियाँ पैंतीस हजार की निकली, अँगूठियाँ सोलह हजार की; नीलमो और पुख-राजो के एक सेट का मूल्य चौदह हजार आँका गया, मूल्यवान् पत्थरो से जडा एक सोने का हार पंतालीस हजार का निकला। इस प्रकार कुल रकमो का जोड एक लाख तैतालीस हजार फ्रा तक पहुँचा।

जौहरी ने व्यग्य और परिहास के स्वर मे कहा—"जिस व्यक्ति से

आपको ये गहने मिले है, मालूम होता है उन्होने अपनी जीवनकी सारी कमाई मूल्यवान् पत्थरो के सञ्चय मे लगा दी।"

पर मो० लाँताँ ने इसका उत्तर बड़े गम्भीर शब्दो मे दिया। उन्होने कहा—"यह अपनी पूँजी को किसी दूसरे रूप मे सुरक्षित रखने का एक ढग है।"

उस दिन मो० लाँताँ ने एक प्रतिष्ठित भोजनालय मेजाकर बढ़िया खाना खाया और दामी शराब पी। इसके बाद वे एक बड़े पार्क में वायु-सेवन के लिए निकल पडे। बग्घियो मे सवार स्त्री स्त्री-पुरुषो को देखकर अब उनके मन मे ईर्ष्या उत्पन्न नही होती थी। वे मन ही मन उन लोगो को सम्बोधित करके कहते थे—"मै भी अब तुम्ही लोगों के समान धनी हो गया हूँ। मेरे पास इस समय प्राय दो लाख फ्रा नकद पडे हुए हैं।"

सहसा उन्हे अपने दफ्तर की याद आई। वे एक किराये की गाडी मे सवार होकर सीधे दफ्तर की ओर चल दिये। वहाँ अपने प्रधान से जाकर वे मिले, और बोले—"मै नौकरी से इस्तीफा देने के लिए आपके पास आया हूँ। मुझे अभी तीन लाख फ्रा की वसीयत प्राप्त हुई है।"

अपने भूतपूर्व साथियो से हाथ मिलाकर कुछ देर तक मो० लाँताँ उनसे गप्पे लड़ाते रहे। इसके बाद वहाँ से चले गये और 'काफे आग्ले' मे जाकर उन्होने डटकर भोजन किया। वहाँ वे एक प्रतिष्ठित रईस की बगल में बैठे थे और बात ही बात मे उन्होने उसे सूचित कर दिया कि उन्हे चार लाख फ्रा की वसीयत मिली है।

उस दिन वे नाटक देखने भी गये। अपनी इच्छा से नाटक देखने वे अपने जीवन मे आज प्रथम बार गये। उस दिन जो खेल खेला गया वह यद्यपि बहुत साधारण था, पर उन्हे उसे देखकर बड़ा आनन्द प्राप्त

हुआ। नाटक देखने के बाद वे नाच-रंग में सम्मिलित होकर रात-भर आनन्द की तरंगों में बहते रहे।

छ: मास बाद उन्होंने दूसरा विवाह किया। उनकी वह नई स्त्री बड़ी सच्चरित्रा थी और उनकी पहली स्त्री की तरह चिकनी-चुपड़ी बातें करना ही जानती थी। इसलिए मो० लाँताँ उससे प्रसन्न न थे।

पादड़ी का लड़का

गाराद्रू नामक एक छोटे-से बन्दरगाह के निवासियों ने जब देखा कि पादड़ी विल्वा मछलियाँ मारकर नाव खेते हुए वापस चला आ रहा है, तो वे नाव को किनारे लगाने मे उसकी सहायता करने के उद्देश्य से घाट के निकट आ पहुँचे।

पादड़ी अकेला था। उसकी आयु यद्यपि अट्ठावन वर्ष की हो चली थी, तथापि वह पतवारो को बडी दृढता के साथ चला रहा था। उसके लम्बे चोले के आस्तीन लौटाये हुए थे, उसकी छाती पर के बटन खुले थे, उसकी तिकोनिया टोपी उसकी बगल में रक्खी पडी थी। उसके सिर पर काग की बनी हुई एक गमलानुमाँ टोपी पड़ी हुई थी। उसका रग-ढग और आकृति-प्रकृति देखकर ऐसा जान पडता था कि वह उपासना के मत्रों का उच्चारण करने की अपेक्षा रहस्य और रोमाञ्चपूर्ण कार्यों के लिए अधिक उपयुक्त है।

ठीक ताल और लय के साथ दृढता और स्थिरतापूर्वक नाव को खेता हुआ वह चला आ रहा था। जब उसकी नाव अन्त मे किनारे पर आ लगी, तो जो पाँच व्यक्ति उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे वे अपने माननीय पुरोहित के स्वागत के लिए आगे बढ़े। उनके मुखो से प्रेम और श्रद्धा टपक रही थी। एक ने पूछा—"जान पड़ता है आपने काफी मछलियाँ पकडी हैं।"

पादडी विल्वा ने गमलानुमाँ टोपी सिर पर से उतारकर तिकोनिया टोपी पहनी, छाती के बटन लगा लिये और आस्तीनो को ठीक कर लिया।

इस प्रकार उसने फिर से गाँव के धर्माधिकारी का रूप धारण कर लिया। इसके बाद उसने कहा—"हाँ, मैंने आशा से अधिक मछलियाँ पकडी हैं, यह देखो।"

पाँचो व्यक्तियो ने (जो कि सबके सब मछुवे थे) नाव के पास जाकर विशेषज्ञो की दृष्टि से मछलियो को एक-एक करके देखा। उनमें छोटी, मोटी, लम्बी, साँप के आकार की—कई प्रकार की मछलियाँ थी। एक मछुवा बोला—"श्रीमान् जी, मैं इन मछलियो को आपके घर पहुँचा दूँगा।"

"धन्यवाद।" कहकर पादडी एक-एक करके सबसे हाथ मिलाकर घर की ओर चल दिया। एक मछुवा मछलियो को लिये हुए उसके साथ साथ चला। जुलाई के महीने की कडी धूप मे जैतून के पेडो की छाया से होता हुआ पादडी विल्बा चला जा रहा था। गाँव की कच्ची सडको की धूल धुएँ की तरह उड-उडकर उसके कपडो मे जमा होती जाती थी।

इस गाँव मे आये उसे बीस वर्ष से अधिक हो चुके थे। गाँव के एक-एक पेड से वह परिचित हो गया था। शान्तिपूर्ण जीवन बिताने के लिए उसने जो यह विशेष स्थान चुना था, उसके प्रति उसके मन में बडी ममता उत्पन्न हो गई थी, और वह चाहता था कि उसी गाँव मे उसकी मृत्यु हो।

किसी समय वह एक ससारी मनुष्य था, और मार्क्विस विल्बा के नाम से परिचित था। बत्तीस वर्ष की आयु मे अपनी एक प्रेमिका के व्यवहार से दु खित होकर उसने धार्मिक जीवन बिताने का निश्चय किया। तभी से वह पादड़ी बन बैठा।

जिस उच्च कुल मे उसका जन्म हुआ था वह जैसा ही धनी था वैसा

ही धार्मिक भी था। इस वंश के लोग अपने लडको को या तो सेना मे भेजा करते थे या धार्मिक संस्थाओं मे। इन्ही दो पेशो को वे विशेष गौरव की दृष्टि से देखते थे। कुछ लोग वकालत के पेशे को भी महत्त्व देते थे। विल्बा की मा ने उसे किसी धार्मिक सस्था मे प्रवेश करने की सलाह दी थी। पर उसके पिता को यह बात पसन्द न आई। अन्त में उसे पैरिस भेज दिया गया। वहाँ वह कानून की शिक्षा प्राप्त करने लगा।

पढाई के समाप्त होने के पहले ही उसके पिता की मृत्यु हो गई। उसकी मा भी पति के शोक से खिन्न होकर कुछ ही समय बाद चल बसी। वह अकस्मात् एक बहुत बडी सम्पत्ति का अधिकारी हो गया। कानून की शिक्षा अधूरी छोडकर वह सुख और सन्तोष का जीवन बिताने के उद्देश्य से घर वापस चला आया।

वह जैसा ही रूपवान् था, वैसा ही स्वस्थ था। साथ ही उसका शील-स्वभाव इतना अच्छा था कि उससे मिलनेवाला प्रत्येक व्यक्ति उससे प्रसन्न रहता था।

एक मित्र के यहाँ आने-जानेवाली एक सुन्दरी अभिनेत्री से जिस दिन उसका परिचय हुआ, उसी दिन से वह उसे तन, मन और प्राण से चाहने लगा। शीघ्र ही उसके इस प्रेम ने ऐसा उत्कट रूप धारण कर लिया कि उसे दबाये रहना उसके लिए असम्भव हो उठा।

अभिनेत्री ने अपने प्रथम दिन की नाट्य-कला से ही जनता मे जो ख्याति प्राप्त कर ली थी, उसका जादू भी मार्क्विस विल्बा के मस्तिष्क मे अपना गहरा प्रभाव डाल रहा था। वह सुन्दरी अवश्य थी, पर उसके स्वभाव में एक ऐसी मूलगत विकृति थी, जो उसकी श्रेणी की युवतियो में सहज रूप से पाई जाती है। यह होने पर भी उसके मुख में सरलता का ऐसा आवरण सब समय छाया रहता था, जो विल्बा को विशेष रूप से

प्रिय था। उस कलापूर्ण नारी ने प्रारम्भ से ही उसे ऐसी कलाबाजियों के चक्कर मे डाला कि वह उन्मत्त प्रेम के आवेश से विह्वल होकर उसके चरणो मे अपना सब कुछ समर्पित करने के लिए तत्पर हो उठा। उस पागल प्रेम की ज्वाला उसकी भावुकता के झकोरो से ऐसे दुर्निवार वेग से धधकती चली गई कि उसकी लपटो ने चारो ओर से उसे घेर लिया। इस प्रेम की परिणति निश्चय ही विवाह मे हो जाती। पर बीच में एक दिन अकस्मात् विल्बा को इस बात का पता लगा कि उसके जिस मित्र ने उस अभिनेत्री का परिचय उससे कराया था, उसके साथ वह पहले से ही शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती चली आई है।

जिस समय विल्बा की आँखो के आगे यह भयकर सत्य उद्घाटित हुआ, उस समय उसकी प्रेमिका गर्भवती थी। वह क्रोध से पागल हो उठा था, और उस धोखेबाज स्त्री को उसके गर्भ के बच्चे के साथ ही मार कर समाप्त कर देना चाहता था। ज्यो ही उसने उसका गला घोट डालने के लिए अपना हाथ बढाया, त्यो ही वह कलामयी चतुरा नारी बोल उठी—"मुझे मत मारो। मेरे पेट में तुम्हारा नही, बल्कि 'उसका' बच्चा है!"

यह अप्रत्याशित बात सुनकर विल्वा सहमकर रह गया! उसने भ्रान्तभाव से कहा—"बच्चा! उसका है!"

"हाँ।"

"नही, तुम झूठ बोलती हो!"

"मै सच कहती हूँ, यह उसी का बच्चा है। मै तुम्हारे साथ इतने वर्षों से हूँ, पर गर्भवती मै इसी बार हुई। इसी से तुम अनुमान लगा सकते हो।"

यह तर्क काम कर गया। विल्वा को विश्वास हो गया कि वह उस वेश्या के बच्चे का पिता नही हो सकता। इस बात से उसे एक

प्रकार का सन्तोष हुआ। उसने चैन की-सी साँस ली, और हत्या की भावना उसके मन से हट गई। उसने कहा—"तुम अभी मेरे सामने से चली जाओ! सावधान, अब कभी मुझे अपना मुँह मत दिखाना।"

वह भय से थरथराती हुई चुपचाप वहाँ से चली गई। इस घटना के बाद विल्बा ने फिर कभी उसे नही देखा। उसने स्वय अप्रिय स्मृतियो को भुलाने के उद्देश्य से उस स्थान को छोड़ दिया और दक्षिण की ओर चला गया। मध्य-सागर के किनारे एक सुन्दर घाटी के बीच एक गाँव मे आकर ठहरा। समुद्र के किनारे की वह एकान्त शान्ति उसे बहुत पसन्द आई। वहाँ वह पूरे अठारह महीने रहा। अपने दु:ख, शोक, निराशा और विषाद से सन्तप्त हृदय को किसी कदर शान्त करने का प्रयत्न करता रहा। पर उस विश्वासघातिनी कुलटा नारी के संग मे उसके जो दिन बीते थे उनकी स्मृति बिच्छुओ के डको की तरह प्रतिपल उसके हृदय को बिद्ध करती रहती थी।

फिर भी वह अपने मन को समझाने की चेष्टा करता रहा, और धीरे-धीरे उसके मन मे वैराग्य की शान्ति का उदय होता चला गया। धर्म की ओर उसका झुकाव बढ़ता गया। उसे ऐसा अनुभव होने लगा कि ससार धोखे की टट्टी के अतिरिक्त और कुछ नही है, और धार्मिक जगत् मे प्रवेश किये बिना उससे छुट्टी पाना असम्भव है। वह भगवान् को नियमित रूप से भजने का अभ्यास डालने लगा, और प्रतिदिन किसी गिर्जे के पास जाकर घुटने टेककर सच्चे मन से ईश्वर से अपने पापो के लिए क्षमा-याचना करता हुआ वह काफी देर तक ध्यान-मग्न रहता।

इस प्रकार उसके मन में अपनी वेश्या प्रेमिका के प्रति आसक्ति का जो भाव था वह भगवत्-प्रेम के रूप में बदल गया, और उसके चित्त मे शान्ति और आनन्द का आभास प्रकट होने लगा। कुछ समय बाद

उसने किसी गाँव में जाकर पादडी का जीवन बिताने का निश्चय किया। इसी निश्चय के फलस्वरूप वह पूर्वोक्त गाँव का पादडी नियुक्त होकर वहाँ रहने लगा। गाँववाले उसके सुन्दर व्यक्तित्व और प्रेमपूर्ण व्यवहार से मुग्ध हो गये। पर उसमे अभी तक उसके पूर्व जीवन की विशेषताये वर्तमान थी। वह बडा कर्मठ था, और खेल-कूद मे बडी दिलचस्पी लेता था। स्त्रियो से वह इस प्रकार घबराने लगा था जिस तरह छोटे-छोटे बच्चे हौवा के नाम से भयभीत हो उठते है।

(२)

पादडी विल्बा गिर्जे के पास ही एक छोटी-सी कुटिया मे रहता था। वह कुटिया जैतून के पेडो के एक खेत के बीच मे थी। ज्यो ही वह मछुवे को साथ लेकर अपने दरवाजे पर पहुँचा, त्यो ही उसने अपनी नौकरानी को आवाज दी—"मार्गेरीत!"

"आप आगये है!"

"हाँ, यह लो मै तुम्हारे लिए बहुत-सी मछलियो को पकडकर लाया हूँ। इन्हे मक्खन मे पकाना। समझी? पिघले हुए मक्खन मे।"

मार्गेरीत लम्बे कद की स्त्री थी। उसके सिर पर एक छोटी-सी टोपी थी, जिसकी चोटी पर काले मखमल का फुन्दन ऊपर को उठा हुआ दिखाई देता था। उसने कहा—"पर आज तो मैने मुर्गी तैयार कर रक्खी है।"

"कुछ भी हो, मछलियाँ तुम्हे बनानी ही होगी, क्योकि ये ताजी है।"

मछलियो को उठाकर ज्यो ही मार्गेरीत जाने लगी, त्यो ही उसे एक बात याद आगई। उसने कहा—"आपसे मिलने के लिए एक आदमी तीन बार यहाँ आ चुका है।"

"आदमी ? किस प्रकार का आदमी ?"

"मुझे तो आवारा-सा लगता था।"

"कोई भिखारी तो नही था ?"

"जी नही; हाँ, सम्भव है। मैं ठीक कह नही सकती। पर उसकी शक्ल किसी बदमाश, गुण्डे की-सी दिखाई देती थी।"

पादडी विल्बा ने अपनी नौकरानी की इस बात पर हँस दिया। वह जानता था कि मार्गेरीत बहुत डरपोक है, और साधारण-सी बात से अथवा किसी भी अपरिचित पुरुष को देखकर बहुत भयभीत हो उठती है।

जो मछुवा उसके साथ आया था उसे कुछ पैसे देकर पादडी ने विदा किया। इसके बाद ज्यो ही वह हाथ-मुँह धोने की तैयारी करने लगा त्यो ही नौकरानी रसोई के कमरे से सामने की ओर इशारा करते हुए बोल उठी—"यह देखिए, वह आ रहा है।"

पादडी ने देखा, फटे-पुराने कपड़े पहने एक अपरिचित व्यक्ति उसके घर की ओर धीमे पगो से चला आता है। उसने अपने मन में कहा—"इसमे सन्देह नही कि यह व्यक्ति गुण्डा-सा लगता है।"

अपरिचित व्यक्ति अपनी जेब मे हाथ डाले हुए और पादडी की ओर दृष्टि किये हुए चला आ रहा था। वह युवा था। उसकी लम्बी दाढी के बाल घुँघराले दिखाई देते थे। उसके सिर के लम्बे बाल एक गन्दी फ़ल्ट टोपी के नीचे लहरा रहे थे। वह एक लम्बा, लाल रग का ओवरकोट पहने था। उसके पतलून टखनो के पास फट गये थे, और वह एक विशेष प्रकार की घास के बने जूते पहने हुए चोरो की तरह नि शब्द पगो से चल रहा था।

जब वह पादड़ी के पास पहुँचा, तो उसने अपनी फटी-पुरानी टोपी उतारी, जिससे उसके मुख की रूप-रेखा स्पष्ट दिखाई देने लगी।

उसके म्लान और क्षीण मुख की बनावट से ऐसा जान पड़ता था कि कुछ समय पहले तक उसकी आकृति सुन्दर दिखाई देती रही होगी, पर बाद मे दुश्चरित्र जीवन बिताने अथवा भर-पेट भोजन न मिलने के कारण उसके मुख का सारा सत्त्व जैसे किसी ने निचोड लिया हो।

अपरिचित व्यक्ति ने अभिवादन किया और पादडी ने उसके उत्तर मे अस्पष्ट शब्दो मे कुछ कहा। वह इस सोच मे पड़ा था कि इस विचित्र रूप-रंगवाले व्यक्ति को 'महाशय' कहकर सम्बोधित करना चाहिए या नही। वह 'गुण्डा' एक रहस्यपूर्ण दृष्टि से पादड़ी विल्बा को एकटक देख रहा था। पादडी को वह दृष्टि बडी सन्देहात्मक लगती थी, उसे ऐसा जान पड़ता था कि जैसे कोई अज्ञात शत्रु उसका भेद लेने आया हो।

अन्त मे उस आवारे ने कहा—"क्या आप मुझे जानते है ?"

पादडी ने आश्चर्य के साथ उत्तर दिया—"मै ? मैंने तुम्हे अपने जीवन मे पहले कभी नही देखा है।"

"पर इस समय तो देख रहे है ! जरा ध्यानपूर्वक देखे तो सम्भव है आप मुझे पहचान जायें ।"

"व्यर्थ है ! मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हे आज मै प्रथम बार देख रहा हूँ।"

"यह आप सच कहते है। पर मै एक व्यक्ति का चित्र आपको दिखाऊँगा जिसे आप अवश्य ही पहचान लेगे।"

यह कहकर उस आवारे ने अपनी टोपी सिर पर डाली, और अपने ओवरकोट के बटन खोले। ओवरकोट के नीचे वह कोई कपडा नही पहने था, और नगी छाती दिखाई देती थी। भीतर की जेब से उसने एक पुराना लिफाफा निकाला। लिफाफे के भीतर से एक कार्ड-

साइज का फोटो निकाला। फोटो इतना पुराना हो गया था कि उसका सारा कागज पीला पड़ गया था, और स्थान-स्थान मे घिस भी गया था।

उस चित्र को दिखाते हुए आवारे ने विचित्र ढग से मुस्कराते हुए कहा—"इस व्यक्ति को तो आप अवश्य ही पहचानते होगे।"

पादडी ने दो पग आगे बढकर ध्यानपूर्वक उस धुंधले चित्र को देखा। देखकर वह स्तब्ध रह गया। यह उसका अपना चित्र था जिसे उसने कई वर्ष पहले अपनी प्रेमिका को दिया था। उसके मुँह से एक शब्द नही निकला। उसके मन मे तरह-तरह की कल्पनाये दौड़ने लगी।

आवारे ने कहा—"कहिए, पहचाना आपने इस व्यक्ति को—जिसका फोटो इस कार्ड मे खिंचा हुआ है ?"

पादडी ने हकलाते हुए कहा—"हाँ, मैंने पहचान लिया है।"

"किसका है यह चित्र ?"

"यह मै हूँ—यह मेरे पिछले दिनो का फोटो है।"

अच्छी बात है, अब आप एक बार इस चित्र को देखें, और एक बार मेरी ओर। यह कहकर वह बेहूदे ढंग से मुस्कराया।

पर पादड़ी ने पहले ही देख लिया था कि जो आवारा उसके सामने खडा है उसकी आकृति कार्ड मे चित्रित व्यक्ति की आकृति से एकदम मिलती-जुलती है। ऐसा मालूम होता था जैसे वे दोनो भाई-भाई हो। पर वह अभी तक इस रहस्य का मर्म ठीक-ठीक नही समझ पाया था। उसने कहा—"पर तुम मुझसे चाहते क्या हो ?"

गुण्डे ने अत्यन्त कटुता के साथ उत्तर दिया—"मैं सबसे पहले यह चाहता हूँ कि आप मुझे पहचाने।"

"अच्छी बात है। तुम ही बताओ कि तुम कौन हो ?"

"मैं कौन हूँ ?"—बडे आश्चर्य का भाव दिखाकर गुण्डे ने कहा—"राह मे चलते-फिरते किसी भी व्यक्ति से पूछिए, वह आपको बता देगा कि मैं कौन हूँ। अपनी नौकरानी से पूछ देखिए, यदि आपकी इच्छा हो, तो आप मेयर से भी पूछ सकते हैं। यह चित्र देखते ही वह पहचान जायगा और आपकी अज्ञता पर हँसेगा। पिता जी, यह कहिए कि आप जान-बूझकर अपने लडके को पहचानना नही चाहते।"

यह सुनते ही बूढा पादडी ऐसा चौका, जैसे आकाश से गिर पडा हो। उसने कराहने की-सी आवाज मे कहा—"नही, यह बात कभी सच नही हो सकती।"

"सच नही हो सकती। अच्छा। तब आप बात को इस तरह उडा देना चाहते हैं। पर झूठ के लिए अब कोई गुजाइश नही रही, यह स्मरण रखिए।" यह कहते हुए गुडा क्रोध से काँप रहा था, दाँतो को पीस रहा था, और मुट्ठी को जोर से दबाये हुए धमकी का-सा भाव दिखा रहा था।

पादडी के मन पर से सन्देह धीरे-धीरे हट रहा था। फिर भी उसने कहा—"मेरे कभी कोई लडका नही था।"

"आपकी कोई प्रेमिका भी कभी नही रही ?"

पादडी ने बिना किसी झिझक के उत्तर दिया—"हाँ, मेरी एक प्रेमिका अवश्य थी।"

गुडा बोला—"और जब आप उसे छोड़कर चले गये, तो उस समय क्या वह गर्भवती नही थी ?"

यह सुनते ही बुड्ढे के मन के अतल गह्वर के भीतर पचीस वर्षों से दबा हुआ क्रोध आग्नेयगिरि के भयकर विस्फोट की तरह बाहर निकलने को उद्यत हो उठा। आज तक वह उसके ऊपर क्षमा, त्याग और धार्मिक

भावनाओ का स्तूप खडा करके उसे भूला हुआ था; पर इस गुंडे ने सुरंग खोदकर उस गड़े मुर्दे को उखाड दिया। उसने काँपते हुए स्वर मे कहा—"मैंने उस स्त्री को इसलिए त्याग दिया कि उसने मेरे साथ विश्वासघात किया। उसका जो बच्चा होनेवाला था उसका पिता मैं नही, कोई दूसरा व्यक्ति था। यदि यह बात न होती, तो मैं उसकी हत्या कर डालता।"

अपरिचित युवक पादडी की भावुकतापूर्ण और आवेश से भरी हुई बात सुनकर कुछ देर तक सन्न रह गया। इसके बाद उसने पूछा—"आपसे यह किसने कहा कि वह बच्चा आपका नही, किसी दूसरे का है ?"

"स्वयं उसने—उसी स्त्री ने—यह बात मुझसे कही।"

"ओह ! तब मा ने जान-बूझकर यह गलत बात आपको बताई।"

बुड्ढे ने कुछ शान्त होकर कहा—"तुमसे किसने कहा कि तुम मेरे ही लडके हो ?"

"मृत्यु के कुछ समय पहले स्वय उसने मुझे यह सूचना दी और इसके अतिरिक्त इसे देखकर मेरे मन मे कोई सन्देह न रहा।" यह कहकर फिर वही पुराना फोटो उसने बुड्ढे को दिखाया।

पादडी ने उस आवारे से अपने विगत जीवन की आकृति का मिलान किया। दोनो मे बहुत-सी बातो मे आश्चर्यजनक साम्य देखकर उसके मन में रह-रहकर एक टीस-सी उठ रही थी। जैसे कोई भूला हुआ घोर दुष्कर्म उसकी स्मृति में जाग पडा हो। विगत जीवन का एक-एक चित्र उसकी आँखो को बड़ी शीघ्रता से अपनी झलक दिखा जाता था और उसके हृदय को अत्यन्त निर्दयता से क्षत-विक्षत कर रहा था। वह सोच रहा था कि उस झूठी, दुराचारिणी, पापिनी नारी ने केवल प्रेम के सम्बन्ध मे उसे धोखा नही दिया, बल्कि अपने गर्भ के बच्चे के सम्बन्ध में

भी झूठ बोलकर उसे इतने वर्षों तक भ्रम में रक्खा और आज उस धोखे का फल प्रत्यक्ष उसके सामने खडा है—आवारा फिरने-वाला, चोरो की-सी शक्लवाला यह गुंडा पुत्र के रूप मे उसके सम्मुख उपस्थित है। इस मनुष्य-देहधारी विषैले कीडे को—जिसकी आकृति उससे मिलती-जुलती थी—क्यो गर्भावस्था मे ही उसने कुचल न डाला, पश्चात्ताप की यह भावना रह-रहकर पादडी के हृदय को निर्ममता से कुरेदने लगी। पर साथ एक रहस्यमय स्नेह, एक अपूर्व ममता का-सा भाव बरबस उसे उस गुडे की ओर आकर्षित भी कर रहा था।

उसने कहा—"चलो, हम लोग किसी एकान्त स्थान मे चले। इस सम्बन्ध मे मै विस्तृत रूप से सब बाते जानना चाहता हूँ।"

गुंडा व्यग्यपूर्वक हँसा और बोला—"अच्छी बात है, चलिए, मुझे कोई आपत्ति नही है। मै इसी लिए तो आया ही हूँ।"

दोनो साथ-साथ चले, और जैतून के खेत मे जा पहुँचे। सूर्य अस्त हो चुका था। उस एकान्त सध्या में उस रहस्यमय गुण्डे को साथ लेकर जब पादड़ी एक निस्तब्ध स्थान में पहुँचा तो उसके मन में एक विश्वव्यापी विषाद का भाव हृदय के एक छोर से दूसरे छोर तक छा गया।

विगत जीवन की मर्मघाती स्मृतियो को मथित करते हुए उसने कहा—"तो तुम्हारी मा की मृत्यु हो चुकी है।" जिस नारी ने उसके सारे जीवन को विषमय बना डाला था, उसकी मृत्यु के सवाद से बुड्ढे के मन मे एक प्रकार के सतोष की भावना अवश्य जगी थी, पर साथ ही प्रथम-मिलन के क्षणो मे उसने उसकी आत्मा मे जिस अलौकिक पुलक का संचार किया था उसकी स्मृति उसे कल्पनातीतरूप मे विकल कर रही थी।

गुण्डे ने उत्तर दिया—"जी हाँ, मेरी मा मर चुकी है। प्राय तीन वर्ष हो चुके है।"

"तब इतने दिनो तक तुम मेरे पास क्यो नही आये ?"

"बहुत-सी रुकावटें थी । फिर भी मैं आता—पर क्षमा कीजिए, मैं कल सुबह से भूखा हूँ। इस समय अधिक बोलने मे मै असमर्थ हूँ।"

बुड्ढे के हृदय मे करुणा का उच्छ्वास उमड पडा। उसने इस बार सच्चे स्नेह से उसका हाथ पकड़ा और कहा—"चलो, खाना खाया जाय।"

मार्गेरीत अत्यन्त उत्कण्ठित-सी दरवाज़े पर खडी थी । पादडी विल्बा ने उससे कहा—"मार्गेरीत, जल्दी दो आदमियो के लिए खाना लगाओ, जल्दी।"

एक अपरिचित गुण्डे का इस प्रकार सत्कार होते देख मार्गेरीत और अधिक चिन्तित हो उठी। पादड़ी विल्बा और उसका नया साथी मेज़ के दोनो ओर दो कुर्सियो में आमने-सामने बैठ गये। मार्गेरीत ने करम-कल्ले के झोल से भरी दो तश्तरियाँ मेज़ पर रख दी। आवारा एक भूखे कगाल की तरह एक चम्मच से झोल को पेट मे डालता चला गया। पादडी को न कुछ खाने की इच्छा रह गई थी, न पीने की। उसके मन मे एक निराला ही तूफान मच रहा था।

(३)

पादडी बडे ध्यान से अपने अतिथि को भोजन करते हुए देख रहा था। अचानक उसने पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है ?"

आवारे ने उत्तर दिया—"पिता का कोई पता न होने से मेरा कोई वशगत उपनाम नही है। मा जिस व्यक्ति के साथ रहती थी उसके दोनो क्रिश्चियन नामो को जोडकर मेरा नामकरण कर दिया गया। मैं अब फिलिप आगुस्त के नाम से परिचित हूँ।"

पादडी के मुख का रंग पीला पड गया। उसने दबी हुई जवान से पूछा—"ऐसा नाम क्यो रक्खा गया?"

आवारा बोला—"इसका अनुमान आप सहज ही मे लगा सकते है। आपके चले जाने पर मा ने आपके प्रतिद्वन्द्वी को यह विश्वास दिलाना चाहा कि मै उसी का बेटा हूँ। पर जब मै पन्द्रह वर्ष का हुआ, तो मेरी आकृति आपसे ऐसे स्पष्टरूप से मिलने लगी कि उस दुष्ट ने मुझे अपना बेटा मानने से अस्वीकार कर दिया। इसलिए मेरे नाम के साथ उसका वशगत उपनाम नही, वल्कि उसका दूसरा क्रिश्चियन नाम भी जोड दिया गया। और यदि मेरी आकृति किसी से मिलती-जुलती हुई न होती, अथवा मै एक तीसरे बदमाश का लडका होता, तो मेरा नाम पडता-'विस्काउन्ट फिलिप आगुस्त द प्रावालो', पर मैने स्वय अपना नाम रक्खा है 'अभागा'।

पादडी के हृदय पर जो पाषाण-भार-पहले से ही पडा था, वह बढता चला जाता था। उसे ऐसा जान पडता था कि जैसे उसका दम घुटा जा रहा हो। जो वाते वह सुन रहा था, उनसे उसकी मर्मवेदना उतनी नही वढ रही थी, जितनी उनके कहे जाने के ढग से। वह गुण्डा बिना किसी लज्जा या झिझक के जिस तरह की वाते कर रहा था, उनमे उसे एक प्रकार का बीभत्स रस मिल रहा था। निर्लज्जतापूर्ण व्यग्य से भरी उसकी प्रत्येक वात पादडी के कोमल मर्म पर अत्यन्त निर्दयता से कोडे मार रही थी। उस गुण्डे के और अपने बीच वह एक अतल भयकर व्यापी नारकीय गह्वर का व्यवधान पा रहा था। वह सोचने लगा—क्या वास्तव मे उसके सामने वैठा वह आवारा उसका लडका है?

आवारे ने कहा—"क्या खाने की और कोई चीज घर पर नही बनी है?"

मार्गेरीत रसोई-घर में थी, जो कि उस कमरे से काफी दूरी पर था। पादडी ने एक चमडे की मूठवाले डडे से काँसे की एक घडीपर कई चोटे मारी। घटे की तरह वह शब्द गूँज उठा। थोडी देर वाद नौकरानी वहाँ आ पहुँची। वह गुण्डे को बडी शका और भय की दृष्टि से देख रही थी। वह मछली तल कर लाई थी। पादडी ने आवारे की तश्तरी मे अधिक से अधिक टुकडे डाल दिये, और उस घोर दु ख मे उसके मन मे गर्व का एक हल्का-सा भाव जाग पडा, जब उसने कहा—"मैंने इस मछली को स्वय पकडा है।"

मार्गेरीत को उसने दो बोतल बढिया अगूरी शराव लाने की आज्ञा दी। वह अनिच्छापूर्वक लाने चली गई। जाते समय उसने एक वार घृणा और क्रोध की दृष्टि से आवारे की ओर देखा।

शराब के नाम से फिलिप आगुस्त का चेहरा चमक उठा। उसने कहा—"वाह, आज की दावत बडी सुन्दर रहेगी। बहुत दिनों वाद मुझे खाने-पीने को इस प्रकार की वढिया चीजे मिल रही है।"

वह मछली के तले हुए टुकडो को कगाल की तरह चट करता जाता था। पादडी उसकी ओर एकटक देखता हुआ घृणा और स्नेह, क्रोध और करुणा के भावो के द्वन्द्व के आघात-प्रतिघात का अनुभव कर रहा था।

नौकरानी आई और शराब की बोतलो को मेज पर रखकर वही खडी रही। वह अपने मालिक को उस बदमाश के साथ अकेले छोडना नही चाहती थी। पर पादडी ने उसे डपटकर चले जाने के लिए कहा। विवश होकर उसे जाना पडा।

पादडी नाममात्र को एक छोटा-सा टुकडा बीच-बीच मे मुँह में डाल लेता था। अपनी परित्यक्ता प्रेमिका के सम्बन्ध मे बहुत-सी बाते जानने की इच्छा उसके मन को विकल कर रही थी।

उसने पूछा—"किस रोग से तुम्हारी मा की मृत्यु हुई ?"

"क्षय-रोग।"

"कै महीने रोग से पीडित रही ?"

"अठारह महीने।"

"उस समय क्या वह अकेली रहती थी ?"

"नही, वह उस समय भी उसी के साथ थी।"

बुड्ढा चौंक पडा। उसने पूछा—"किसके साथ ? प्रावालो के साथ ?"

"जी, हाँ।"

पादडी ने हिसाब लगाया कि जिस नारी ने उसे धोखा देकर उसका जीवन नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, वह उसके प्रतिद्वन्द्वी के साथ पूरे तीस वर्ष तक बडी सचाई और एकनिष्ठता के साथ रही।

अपने हृदय की वेदना को कुरेदते हुए उसने पूछा—"क्या वे दोनो एक दूसरे से सतुष्ट थे ?"

फिलिप आगुस्त ने विकृत रूप से हँसकर कहा—"हाँ, एक प्रकार से सतुष्ट ही थे, पर मै जो बीच-बीच मे बात विगाड देता था। मैं कौन्ट प्रावालो की आँखो का काँटा था।"

यह कहकर उसने अपने गिलास मे बोतल से शराब उँडेली। शीघ्र ही उसने उसे समाप्त कर डाला, और फिर दूसरी बार गिलास भरकर पीने लगा। उसकी आँखे चमकने लगी और नशा ज़ोर पकडने लगा। पादडी ने यह सोचकर कि नशे की हालत मे वह अपने मन की सच्ची बातें बता देगा, स्वय अपने हाथ से उसका गिलास फिर एक बार भरा। फिलिप आगुस्त पीता चला गया।

मार्गेरीत उबाला हुआ मुर्गा लाई और उसे मेज़ पर रखकर वह

आवारे की ओर फिर एक बार गौर से देखने लगी। इसके बाद वह कुछ क्रोध-भरे स्वर मे अपने मालिक से बोली—"ज़रा उसकी ओर देखिए तो सही, वह नशे मे चूर हो गया है।"

पादडी ने कहा—"तुमसे कौन पूछता है? तुम यहाँ से जाओ!"

वह चली गई और जाते समय ज़ोर मे किवाड बन्द करके अपना क्रोध प्रकट कर गई।

पादडी ने फिलिप आगुस्त से पूछा—"तुम्हारी मा ने मेरे बारे मे तुमसे कभी कुछ कहा?"

'मरने के कुछ ही समय पहले उसने मुझसे प्रथम बार आपकी चर्चा की थी। उसने कहा था कि आपके आदर्श और विचार इस तरह के है कि कोई भी स्त्री न तो आपको प्रसन्न कर सकती है न स्वय प्रसन्न रह सकती है।"

"अच्छा, इस बात को छोडो। तुम अपने सम्बन्ध मे बताओ। तुम्हारी उस घर मे कैसी निभती थी?"

"पहले तो ठीक ही चल रहा था, पर बाद मे वहाँ मेरी पटी नही। मेरी नटखटपने की कुछ आदतें है। उनसे तग आकर मा ने मुझे निकाल दिया, और दोनो ने मिलकर मुझे एक रिफार्मेटरी (सुधार-गृह) मे बन्द करवा दिया। रिफार्मेटरी से लौटने के बाद मैंने ऐसे-ऐसे उपद्रव किये, ऐसे-ऐसे चक्करो में रहा कि माउन्ट क्रिस्टो का लेखक भी उनकी कल्पना न कर पाता।"

उसके मुख मे एक ऐसी घृणित मुसकान छाई हुई थी, जो पादडी को बरबस अपनी प्रेमिका के मुख के भाव की याद दिलाती थी।

नशा बढने के साथ ही उसकी अधिक बोलने की प्रवृत्ति भी बढ रही थी। वह अपनी करतूतो का वर्णन करने के लिए उत्सुक दिखाई देता था। उसने कहा—"एक बार मैंने एक गाडी मे सोये हुए एक पूरे

परिवार को रात के समय एक नदी मे डुबो दिया। मै बडी सफाई से घोडे को फुसलाकर गाडी को नदी के बीच में ले गया—ऐसे चुपके से लाया कि किसी की नीद टूटने न पाई। घोडे को मैने एक नाव पर खडा कर दिया। कुछ समय बाद घोडे ने चौककर ऐसी उछल-कूद मचाई कि सब लोग पानी मे गिरकर डूब गये! सुधार-गृह मे जाने के बाद मैने इससे भी भयकर काड किये है। पर मै आपको केवल एक ही किस्सा सुनाऊँगा। पिता जी, मैंने आपके साथ किये गये अन्याय का बदला चुका लिया है।

अन्तिम बात उसने बडे गर्व के साथ कही, पर पादडी की आत्मा उसे सुनकर काँप उठी। फिलिप आगुस्त किस्सा सुनाना ही चाहता था कि पादडी ने कहा—"अभी नही, जरा ठहरकर।" उसने फिर एक बार घडी पर डडा मारकर उसे बजाया। जब नौकरानी आई, तो उसने उससे लैम्प ले आने के लिए कहा। जब लैम्प आ गया, और नौकरानी ने पनीर और फल लाकर मेज पर रख दिये, तो पादडी ने उसे चले जाने को कहा। जब वह चली गई, तो पादडी ने कहा—"अब तुम अपना किस्सा सुना सकते हो।"

फिलिप आगुस्त कहने लगा—"मा ने मरने के कुछ समय पहले तक आपका नाम मुझे नही बताया था, और मुझसे यह कह रक्खा था कि 'तुम्हारा असली पिता मर चुका है, और उसके पास एक कौडी भी नही थी, पर मरते समय उसने आपका नाम-धाम सब मुझे बता दिया। उसके साथी—कौन्ट प्रावालो ने जब यह सुना तो वह मा से बोला—'रोजेट, तुम बडी भारी भूल कर रही हो! बडी भारी भूल!' माँ उसकी यह बात सह न सकी। उस दशा में उसका चेहरा तमतमा आया, और उसने कहा—'तब तुम ही क्यो उसका कोई ठिकाना नही लगा देते! मेरे मरने के बाद वह सड़क मे भीख माँगता फिरेगा, इसकी कल्पना भी असह्य है।"

मा की यह बात सुनकर वह पागलो की तरह झल्ला उठा। उसने कहा—'इस लुच्चे-लफगे, बदमाश और शराबी की सहायता करने को तुम मुझसे कहती हो! इस गुण्डे को मै एक कौडी भी अपनी गाँठ से कभी नही दूँगा।'

"इसके दो दिन बाद मा की मृत्यु हो गई। मै और 'वह' दोनो साथ-साथ उसे कब्रिस्तान मे पहुँचाने गये। वह धाडे मार-मारकर रो रहा था। अन्तिम क्रिया समाप्त हो जाने के बाद हम दोनो साथ-साथ घर वापस आये। उस समय तीसरा कोई व्यक्ति घर पर नही था। उसने मुझसे रोते हुए कहा—'मैं तुम्हारी मा के अन्तिम अनुरोध का खयाल करके तुम्हे एक हजार फ्रा देना चाहता हूँ।' यह कहकर उसने एक डेस्क का दराज खोलकर उसमें से हजार फ्रा का एक नोट निकालकर मुझे दिया। पर मैंने देखा कि उस दराज के भीतर और भी बहुत से नोट पडे है। उन नोटो को देखकर मेरी छाती पर साँप लोटने लगे। मैंने सहसा उसका गला पकड लिया और उसे जोर से दबाने लगा। उसका दम घुटने लगा और आँखे बाहर को निकल आईं। मैंने जब देखा कि वह अब प्राय समाप्ति पर है, तो एक कपडे से उसका मुँह बन्द करके और हाथ-पाँव बाँधकर मैंने उसके शरीर पर से सब कपडे उतार लिये। हाहा! हाहा! मैंने आपका बदला चुका लिया, पिता जी "

फिलिप आगुस्त को खाँसी आ गई। पर उसके मुँह मे अकृत्रिम और अमानुषिक उल्लास की एक भयकर मुसकान झलक रही थी। पादडी विल्बा को उसकी वह बीभत्स मुसकान देखकर बार-बार उस नारी की याद आ जाती थी, जिसने अपनी विकृत मनोवृत्ति का परिचय देकर उसे पागल-सा बना दिया था।

उसने पूछा—"इसके बाद क्या हुआ?"

"इसके बाद? हाँ, ठीक है। जाडे के दिन थे। भीतर अँगीठी में आग जल रही थी। मैंने एक सीख को उसमे गरम किया। जब वह लाल हो गई, तो उसे निकालकर उससे मैंने उस दुष्ट के नगे शरीर पर क्रास के जलते हुए चिह्न बना दिये—आठ या दस ऐसे चिह्न बनाये। वह असह्य यातना के कारण अपने हाथ-पाँव छटपटाने लगा। पर मैंने अच्छी तरह से उसके हाथ-पाँव बाँध रक्खे थे, और मुँह भी! इसके बाद मै दराज से एक-एक हजार के बारह नोट और निकालकर चलता बना।

"इस घटना के तीन दिन बाद मै पेरिस के एक फ़ैशनेबुल भोजनालय मे गिरफ्तार कर लिया गया। मैंने सोचा था कि अपनी बदनामी के डर से वह पुलिस मे खबर नही देगा। पर वह इस मामले मे भी निर्लज्ज निकला। खैर, तीन वर्ष के लिए मुझे जेल की हवा खानी पड़ी। यही कारण था कि मै इतने दिनो तक आपके पास न आ सका।"

इसके बाद फिलिप आगुस्त ने फिर शराब पीना आरम्भ कर दिया। उसकी ज़बान लडखडाने लगी थी। उसने कहा—"पिता जी, अब मैं एक पादडी का लडका बन गया हूँ, यह कैसी प्रसन्नता की बात है! आप अब मेरे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे न? मैंने आपका बदला चुकाया है! उस बूढे कौन्ट की खूब खबर ली है! क्यो, ठीक है न?"

पादडी विल्बा के सिर पर एक बार अपनी दगाबाज़ प्रेमिका की हत्या कर डालने का जो भूत सवार हुआ था, उसी तरह के पागलपन ने फिर एक बार उसे घर दबाया। बीस वर्ष के धार्मिक जीवन ने उसके हृदय के उत्तप्त रक्त को ठण्डा कर दिया था, पर अब वह फिर सहसा अत्यन्त तीव्रता से खौल उठा। उसके पुत्र के रूप मे वह जो नृशस और जघन्य दुराचारी उसके सामने बैठा हुआ था, उसके विरुद्ध ऐसा भयकर विद्रोह तूफानी प्रवेग से उसके भीतर जाग पड़ा कि उसे दबाना उसके लिए कठिन

हो उठा। भाग्य के इस क्रूर परिहास ने उसे अधिक खिझा दिया कि जिस व्यक्ति की आत्मा से उसकी आत्मा का रञ्चमात्र भी सम्बन्ध नही है, वह वास्तव मे उसका पुत्र है, और उसके मुख की आकृति उसी से मिलती-जुलती है, यद्यपि उसके मुख के हाव-भाव उस नष्टा नारी के-से है जिसनें इस दुष्कर्मी को जन्म दिया है। जिस जीवन की स्मृति को भुलाने के लिए उसने अपने को इतनी दूर इस एकान्त स्थान मे आकर निर्वासित किया, इतने दिनो तक जिसे भूला भी रहा, आज पचीस वर्ष बाद अकस्मात् दुर्भाग्य के धूमकेतु की तरह यह—उसका पुत्र—नरक के किस अज्ञात अन्धकारमय कोने से आ पहुँचा! उस नरक की ओर उसे भी वह घसीटे लिये जा रहा है!

सहसा उसके भाव ने पलटा खाया। अपना जी कड़ा करके उसने यह निश्चय किया कि प्रारम्भ मे ही इस दुष्कर्मी को यह जता देना होगा कि उसका स्थान कहाँ पर है। दाँतो को पीसते हुए क्रोध से काँपते हुए उसने कहा—"देखो जी, तुम अपनी रामकहानी मुझे सुना चुके हो, अब मेरी भी बात तुम्हें सुननी होगी। मै तुम्हे एक विशेष स्थान बताऊँगा जहाँ तुम्हे रहना होगा। बिना मेरी आज्ञा के तुम उस स्थान को छोड़कर नही जा सकोगे। मैं तुम्हे प्रतिमास कुछ रुपये भेज दिया करूँगा। पर मैं अधिक नही भेज सकता, क्योकि मेरे पास अब कुछ भी शेष नही रह गया है। यदि तुम एक बार भी मेरी आज्ञा का उल्लघन करोगे, तो तुम्हारे साथ मेरा सम्बन्ध सदा के लिए टूट जायगा, और तुम्हे उसका फल भोगना पडेगा।"

फिलिप आगुस्त नशे मे चूर होने पर भी पादडी की धमकी का मर्म समझ गया। उसके भीतर का दुष्कर्मी फिर एक बार विकट रूप मे जाग पडा। उसने कहा—"पिता जी, मेरे साथ चालबाजी से काम न चलेगा।

कमरे में पहुँचे, तो उन्होंने वास्तव मे फर्श को खून से लथपथ पाया। रक्त की क्षीण धारा बहते हुए सोए हुए आवारे के पास तक पहुँच गई थी। उसका एक पाँव और एक हाथ उस रक्त के ऊपर पड़े हुए थे। बाप-बेटे दोनो सोए हुए थे। बाप का गला छुरे से कटा हुआ था, और वह चिरकाल के लिए कभी न टूटनेवाली निद्रा मे मग्न हो चुका था। बेटा शराब के नशे की नीद से अचेत पड़ा था।

पुलिस के दो सिपाहियो ने उस शराबी के दोनो हाथो मे हथकड़ियाँ पहना दी और वह धक्का देकर जगाया गया। आँखो को मलकर उसने अपने सामने जो दृश्य देखा उससे वह हक्का-बक्का रह गया। शराब का नशा अभी तक उस पर सवार था। इसके बाद उसने जब पादड़ी के मृत शरीर को देखा, तो वह आतक से चकित हो उठा।

गाँव के मेयर ने थानेदार से पूछा—"यह गुण्डा इतनी देर तक चम्पत क्यो न हुआ?"

थानेदार ने उत्तर दिया—"देखते नही, शराब ने उसे किस कदर बेबस बना डाला है!"

थानेदार की बात सबको जँच गई। किसी के मन मे यह कल्पना क्षण भर के लिए भी उदित नही हुई कि सम्भवत· पादड़ी विल्बा ने आत्म-हत्या की है।

त्रिया-चरित्र

उस समय मैं वैदेशिक मत्री के पद पर काम कर रहा था। मै प्रतिदिन प्रातःकाल शाँ-एलीजी के बागो मे भ्रमण किया करता था। मई का महीना था। नई-नई कलियो से महकनेवाली भीनी-भीनी सुगन्धि से अपने मस्तिष्क को तर करता हुआ मैं टहला करता था।

कुछ दिनों से एक सुन्दरी युवती नित्य उस ओर टहलती हुई मुझे दिखाई देती थी। वह बीच-बीच मे कनखियो से मेरी ओर कटाक्षपात करती रहती थी। एक दिन प्रात काल मैंने उसे एक बैंच पर बैठे हुए देखा। वह अपने हाथ मे एक पुस्तक लेकर ऐसा भाव दिखा रही थी जैसे वह उसे पढने मे तन्मय हो। मेरे मन मे उससे बाते करने की उत्सुकता जोर मार रही थी। मैं उसकी बगल मे बैठ गया। पाँच मिनट के वार्तालाप के बाद ही हम दोनो में घनिष्ठता हो गई।

इसके बाद प्रतिदिन हम दोनो नियमित रूप से उसी बाग मे मिलते और बहुत देर तक बातें करते रहते। उसने अपना जो परिचय दिया उससे पता चला कि वह किसी सरकारी आफिस मे काम करनेवाले एक क्लार्क की स्त्री है। उसने यह भी कहा कि उसका जीवन बहुत दुखी है, क्योकि उसके पति का वेतन अल्प होने से ससार के सुख का कोई साधन उसे प्राप्त नही हो पाता।

मैंने भी उसे अपना ठीक-ठीक परिचय दे दिया। उसने आश्चर्य का भाव दिखाया और यह जताया कि इतने उच्च पद के व्यक्ति से परिचय होना उसके लिए सौभाग्य की बात है।

मेरा परिचय पाने के दूसरे ही दिन वह आफिस में मुझसे मिलने चली आई। इसके वाद वह नियमित रूप से आफिस में मुझसे मिलने आती। आफिस के निम्न कर्मचारियो ने उसका नाम श्रीमती लिओ रख दिया। लिओ मेरा क्रिश्चियन नाम है।

तीन महीने तक मैं अत्यन्त घनिष्ठ रूप से उससे मिलता रहा। एक दिन मैंने देखा कि उसकी आँखें रक्त के समान लाल हो उठी हैं, जिससे यह जान पडता था कि वह वहुत रोई है। उसकी पलकें भीगी हुई थी और आँखो में आँसू चमक रहे थे। उसका गला रुँधा हुआ था और वह कुछ वोल न पाती थी। मैंने बार-बार उसमे यह प्रार्थना की कि अपने दु ख का कारण वह मुझसे न छिपावे।

अन्त मे उसने हकलाते हुए कहा—"मैं—मैं—मुझको गर्भ रह गया है।"

यह कहकर वह सिसक-सिसककर रोने लगी। यह समाचार सुनकर मै वहुत घवरा उठा। मुझे ऐसा जान पडा जैसे किसी ने मेरे कलेजे पर गहरी चोट मार दी। मैंने किसी प्रकार अपने को सँभाला, और हाँफते हुए कहा—"पर—पर—तुम तो विवाहित हो, क्यो ?"

उसने कहा—"यह सच है, पर मेरे पति इस समय इटली गये हुए हैं। उन्हें वहाँ गये दो महीने हो चुके, और अभी कुछ समय तक उनके वापस आने की कोई आशा नही है।"

मैं किसी भी उपाय से इस उत्तरदायित्व से छुटकारा पाना चाहता था। मैंने कहा—"तुम विना विलम्व के अपने पति के पास इटली चली जाओ।"

मेरी वात सुनकर एक प्रकार की लज्जा के-से भाव से उसका मुख लाल हो आया। उसने अस्फुट स्वर में कहा—"ठीक है, पर—पर—"

वह अपनी बात को पूरा करने मे सकोच का अनुभव कर रही थी। पर मै समझ गया। मैंने एक लिफाफे मे कुछ नोट भरकर उसके हाथ में थमा दिये। उतना रुपया इटली की यात्रा के लिए आवश्यकता से अधिक था।

* * *

आठ दिन बाद उसने जिनोआ से मुझे एक पत्र लिखा। दूसरे सप्ताह उसका एक पत्र मुझे फ्लोरेंस से मिला। इसके बाद लेगार्न, रोम, नेपल्स आदि इटालियन शहरो से मुझे उसके पत्र मिलते रहे। अपने एक पत्र मे उसने लिखा था—

"मेरे प्रियतम, मै स्वस्थ और प्रसन्न हूँ। मेरे सम्बन्ध में चिन्ता किसी बात की न करना। पर जब तक यह सारा मामला समाप्त नही हो जाता, तब तक मै तुम्हारे पास लौटना नही चाहती। कारण यह है कि इस समय मेरे शरीर का रंग-ढग ऐसा विकृत हो गया है कि तुम मुझे देखते ही मुझसे घृणा करने लगोगे। मेरे पति को तनिक भी सन्देह नही हुआ है। अभी उन्हें कुछ समय तक इटली मे ही रहना है। जब तक मै इन सब चक्करो से छुट्टी नही पा जाती तब तक फ्रांस मे लौटने का विचार मेरा नही है।"

आठ महीने बाद वेनिस से उसने ये तीन शब्द लिखकर भेजे—"लडका उत्पन्न हुआ है।"

इसके बाद एक दिन वह अकस्मात् मेरे अध्ययन के कमरे मे आ उपस्थित हुई। इस बार वह पहले की अपेक्षा भी अधिक स्वस्थ और सुन्दर बनकर आई थी। हम दोनो का पूर्व सम्बन्ध फिर नये सिरे से स्थापित हो गया।

मन्त्रि-पद से अलग होकर—मैं रू-द-ग्रेनेल नामक सडक मे रहने लगा। वहाँ वह मेरे पास आकर समय-समय पर अपने बच्चे की चर्चा चलाती रहती। पर मै उस बच्चे मे तनिक भी दिलचस्पी नही लेता

फा० ४

था। फिर भी बीच-बीच मे मैं उसके हाथ मे नोटो का एक पुलिन्दा देते हुए कहता—"इसे अपने बच्चे के लिए खर्च करना।"

दो वर्ष इसी तरह बीत गये। पर वह प्रतिदिन अपने 'प्यारे बच्चे' की चर्चा मेरे आगे चलाती रहती। उसका नाम उसने मेरे ही नाम पर 'लिओ' रक्खा था। कभी-कभी वह आँखो में आँसू भरकर कहती—"तुम उसकी तनिक भी चिन्ता नही करते। तुम उसे एक बार देखना तक नही चाहते। इससे मुझे कितना कष्ट होता है, तुम नही जानते।"

अन्त में उसकी इस प्रकार की बाते सुनते-सुनते मैं तंग आगया, और एक दिन मैने निश्चय किया कि उसके (और स्वभावत. अपने) बच्चे को देखने जाऊँगा। यह तय हुआ कि वह शाँ-एलीज़ी मे बच्चे को हवा खिलाने ले जायगी, और वही मै उसे देखूँगा।

पर जब मैं जाने की तैयारी करने लगा तब अचानक मेरे मन मे एक विचार उठा, जिसके कारण मै रुक गया। मैने सोचा—बच्चे को देखकर यदि मेरे मन में उसके प्रति स्नेह का भाव उमड आया (जैसा कि स्वाभाविक है, क्योकि आखिर वह मेरा ही बच्चा है, मेरे ही रक्त से सम्बन्धित है, भले ही वह मूर्ख क्लर्क उसे अपना बच्चा समझता हो) तो मै बन्धन में पड़ जाऊँगा। इससे तो उसे न देखना ही अच्छा है।

इतने मे मेरे कमरे का दरवाज़ा खुला, और मेरे भाई ने भीतर प्रवेश किया। उसने मेरे हाथ मे एक गुमनाम पत्र दिया। वह पत्र उसे सुबह मिला था। उसमे लिखा था—

"अपने भाई को यह सूचित करके सावधान कर दीजिए कि रू-काज़ेट में रहनेवाली जिस स्त्री से उनका सम्बन्ध है वह उनकी अज्ञता पर धृष्टता-पूर्वक हँस रही है, उनसे कह दीजिए कि उस स्त्री के सम्बन्ध मे जाँच-तहकीकात करे।"

इसके पहले मैंने अपने इस प्रेम-सम्बन्ध की बात किसी से नही कही थी। उक्त पत्र पढ़कर मैंने अपने भाई से आदि से अन्त तक सारा हाल कह सुनाया। इसके बाद मैंने कहा—"मुझे इस विषय मे अधिक बाते जानने की कोई उत्सुकता नही रह गई है। पर फिर भी तुम जाकर पता तो लगा लो कि बात क्या है।"

जब मेरा भाई पता लगाने गया तब मैने अपने मन मे कहा—"वह मुझे किस रूप मे धोखा दे सकती है ? क्या उसके और भी कोई प्रेमी है ? यदि है तो इससे मेरा क्या बिगडता है ? मेरे साथ उसका व्यवहार अच्छा है, यही यथेष्ट है। इसके अतिरिक्त मैं जितना रुपया उस पर खर्च करता हूँ वह अधिक नही है।"

मेरा भाई शीघ्र ही वापस चला आया। उसने कोतवाली मे जाकर उसके पति के सम्बन्ध की सभी बातो का पता लगा लिया था—वह 'होम डिपार्टमेंट' मे एक क्लर्क है, अपने काम का विशेषज्ञ है, उसका विवाह एक बहुत सुन्दरी स्त्री से हुआ है, पर वह स्त्री अपने निजी कामो में इतना अधिक रुपया खर्च करती है जो उसके पति की हैसियत के बाहर है।

इसके बाद मेरा भाई उसके घर गया। उस समय वह कही बाहर गई हुई थी। चौकीदार के हाथ मे कुछ रुपये थमाकर मेरे भाई ने उससे उस स्त्री के सम्बन्ध मे एक-एक करके बहुत-सी बाते पूछी। उसका पहला प्रश्न यह था—"उसका बच्चा इस समय कै साल का है ?"

"उसके तो कोई बच्चा नही है, मोशियो।"

"क्यो, लिओ नाम का बच्चा कहाँ है ?"

"नही मोशियो, आप गलती पर है।"

"मेरा आशय उस बच्चे से है जो दो वर्ष पहले इटली में उत्पन्न हुआ था।"

"वह इटली कभी नही गई मोशियो! पिछले पाँच वर्षों से उसने यह मकान एक दिन के लिए भी नही छोडा है।"

मेरे भाई ने अत्यन्त विस्मित होकर इस सम्बन्ध में विशेष रूप से जाँच की। अन्त मे यह बात निश्चित रूप से प्रमाणित हो गई कि वह स्त्री न कभी इटली गई और न कोई बच्चा उसके हुआ।

मेरे भी आश्चर्य की सीमा न रही। पर मैं अत्यन्त धैर्य के साथ पूर्ण रूप से इस प्रहसन के अन्तिम रहस्य से परिचित होना चाहता था। इसलिए मैंने अपने भाई से कहा—"मै उसी के मुँह से सब प्रश्नो का ठीक-ठीक उत्तर जानना चाहता हूँ मै कल उसे यहाँ बुलाऊँगा, पर बाते उससे तुम करोगे। यदि मुझे विश्वास हो गया कि उसने मुझे इस तरह धोखा दिया है, तो तुम उसे ये दस हजार फ्रा दे देना। इसके बाद मै फिर कभी उसका मुँह नही देखूँगा। बहुत हो चुका।"

आश्चर्य की बात यह है कि केवल एक ही दिन पहले मै उस स्त्री से और उसके 'बच्चे' से पिण्ड छुडाने की इच्छा रखता था। पर अब जब बिना किसी झझट के उसके प्रति सारे उत्तरदायित्व और सब चिन्ताओ के भार से मुक्त होने का समय आया तब अपने को एक विचित्र परिस्थिति में पाकर मै बौखला उठा।

दूसरे दिन मैंने अपने अध्ययन के कमरे मे अपने भाई को बिठा दिया। वह ठीक समय पर आई, और नित्य की तरह मुझे वहाँ बैठा समझकर मुझे अपने भुज-बन्धन मे जकडने के उद्देश्य से दोनो हाथो को फैलाये हुए बडी शीघ्रता के साथ कमरे में घुसी। पर वहाँ एक अपरिचित व्यक्ति को देखकर सहम गई।

मेरे भाई ने अभिवादन करते हुए कहा—"श्रीमती जी, मुझे क्षमा कीजिएगा, आज अपने भाई के बदले मुझे आपके स्वागत के लिए यहाँ

बैठना पडा है। पर मेरे भाई ने मुझे आपसे कुछ ऐसे प्रश्न करने का भार सौंपा है जिन्हे स्वय करने मे उसे कष्ट का अनुभव होता।"

पहले कुछ क्षणो तक तो वह स्तब्ध और विस्मय-विमूढ-सी रही। उसके बाद वह सँभल गई और मेरे भाई के सामने एक कुर्सी पर बैठ गई।

मेरे भाई के प्रथम प्रश्न के उत्तर मे उसने स्पष्ट शब्दो मे कहा—"यह बात सच है; मेरे कभी कोई बच्चा नही हुआ।"

मेरे भाई ने कहा—"हमें इस बात का भी पता लग चुका है कि आप कभी इटली नही गई।"

यह प्रश्न सुनते ही उसकी इतने दिनों से छिपी हुई निर्लज्जता का बाँध टूट पड़ा और वह खिलखिलाती हुई बोली—"बिलकुल सच है; मै इटली भी कभी नही गई।"

मेरा भाई उस बेहया स्त्री का रग-ढग देखकर स्तब्ध था। उसने चुप-चाप जेब से एक लिफाफा निकालकर उसके आगे रखते हुए कहा—"मेरे भाई ने यह रुपया आपको देने के लिए कहा है और साथ ही आपको यह भी सूचित कर देना चाहा है कि अब आपसे उसका कोई सम्बन्ध न रहा।"

लिफाफा चुपचाप अपनी जेब मे डालते हुए उसने अपने मुख को कुछ गम्भीर बनाकर कहा—"तो क्या अब मै आपके भाई से एक बार भी नही मिल सकती हूँ?"

"नही, श्रीमती जी, अब यह असम्भव है।"

उसने बडे रूखे ढग से कहा—"इस बात के लिए मुझे दु ख है, क्योकि मै उसे चाहती थी।"

मेरे भाई ने जब देखा कि सारा मामला बिना वाद-विवाद के समाप्त हो गया है तब उसने अपना कौतूहल मिटाने के उद्देश्य से मुस्कराते हुए कहा—"अच्छा श्रीमती जी, अब आपको यह बताने में सम्भवतः कोई

आपत्ति नही होगी कि आपने इतना बडा जाल क्यो रचा? इटली की यात्रा और बच्चे का किस्सा गढकर इतना लम्बा चक्कर क्यो चलाया ?"

मेरे भाई की ओर आश्चर्य से देखते हुए उसने कहा—"क्या आप अभी तक इतनी साधारण-सी बात को नही समझ पाये है ? आप क्या यह विश्वास करते है कि मेरे समान एक साधारण हैसियतवाली स्त्री आपके भाई के समान एक नामी और विख्यात मत्री और उच्च कुल के धनी व्यक्ति को यो ही तीन वर्ष तक अपने वश मे कर लेती ? कूटबुद्धि और प्रपञ्च के बिना यह बात कैसे सम्भव हो सकती!"

यह कहकर वह उठी। मेरे भाई ने उसके जाने के पहले एक और प्रश्न किया—"पर बच्चा ? उसके सम्बन्ध मे मेरे भाई को धोखे मे रखने का क्या उपाय आपने सोचा था ? क्या किसी दूसरे के बच्चे को दिखाने का प्रबन्ध आपने कर रक्खा था ?"

"नही तो क्या!—मेरी बहन का एक बच्चा है, उसी को मै दिखाती। मुझे सन्देह होता है कि मेरी उसी बहन ने ही आपको वह गुमनाम पत्र लिखा होगा!"

"खैर! पर इटली से जो पत्र मेरे भाई को मिले, उनका रहस्य क्या है ?"

"ओह! वे पत्र! वे किससे लिखाये गये और कैसे भेजे गये, इसका रहस्य मै आपको नही बता सकती।"

यह कहकर एक व्यग-भरी मुस्कान से मेरे भाई का अभिवादन करते हुए वह धीर, शान्त पगो से वहाँ से चली गई। ऐसा जान पडता था जैसे एक अभिनेत्री अत्यन्त स्वाभाविकता के साथ अपना अन्तिम पार्ट अदा कर गई हो।

तब से इस प्रकार की स्त्रियो के सम्बन्ध में बहुत सावधान और चौकन्ना रहता हूँ।

अपमान का बदला

जर्मनो ने सारे फ्रास पर अधिकार जमा लिया था। सारा देश कुश्ती में पटके गये पहलवान की तरह हाँफ रहा था। अकाल और अशान्ति के दीर्घ पीड़न के बाद पेरिस से नई सीमाओ को रेलगाडियाँ चलने लगी थी। यात्री लोग गाड़ी की खिडकियो से विनष्ट खेतो और जलाये गये गाँवो का दृश्य देखते चले जाते थे । स्थान-स्थान में जर्मन-सिपाही पीतल के भुत्तेवाले टोप पहने, घोड़ो पर या मकानो के बाहर कुर्सियो पर बैठे चुरट पीते हुए दिखाई देते थे। जिन-जिन शहरों से होकर रेलगाड़ी जाती थी वहाँ जर्मन-सेनाये कवायद करती हुई दिखाई देती थी।

दुबुई नाम का एक प्रतिष्ठित व्यापारी भी स्विट्ज़रलैंड से अपनी स्त्री और लड़की को लाने के उद्देश्य से एक गाडी मे सवार होकर चला जा रहा था। जर्मनो के आक्रमण से पहले ही उसने उन लोगो को युद्ध के अत्याचारो से बचने के लिए स्विट्ज़रलैंड भेज दिया था। जब जर्मनो ने पेरिस को घेर रक्खा था तब दुबुई राष्ट्रीय स्वयसेवक के रूप मे अपनी प्रिय नगरी की रक्षा के कार्य मे नियुक्त था।

युद्ध के कारण उसे जो आर्थिक और मानसिक कष्ट सहन करना पडा था, उसने उसके हट्टे-कट्टे शरीर को अधिक हानि नही पहुँचाई थी। एक प्रकार के दार्शनिक त्याग की भावना उसके मन मे समा गई थी। फिर भी जर्मनो के पाशविक अत्याचार की चर्चा चलते ही उसका रक्त खौलने लगता था।

फ्रास की सारी भूमि मे फैले हुए दाढीधारी सशस्त्र जर्मन-सिपाहियो

को देखकर उसके मन मे भय और क्रोध की भावनाये साथ-साथ जागरित हो रही थी। वह अपने भीतर असमर्थ भावुकता से पूर्ण राष्ट्रीयता का अनुभव कर रहा था और साथ ही आत्म-रक्षा की मनोवृत्ति उसे उदासीन भाव से सब-कुछ सहन करते रहने को बाध्य कर रही थी।

उसी डिब्बे में दो अँगरेज यात्री भी बैठे हुए थे और अपनी भाषा मे न मालूम क्या बडबडाते जाते थे। बीच-बीच मे अपना 'गाइड-बुक' देखकर वे उसमे उल्लिखित नामो का उच्चारण जोर से स्पष्ट शब्दो में कर रहे थे।

अकस्मात् गाडी एक छोटे-से देहाती स्टेशन मे आकर ठहरी। एक जर्मन-अफसर अपनी कमर मे बँधी हुई तलवार को झनझनाते हुए उछलकर गाडी के फुटबोर्ड मे चढ गया। वह कद का लम्बा था और एक चुस्त पोशाक पहने था। उसकी लम्बी और ऊपर को उठी हुई मूँछे और घनी दाढी के बाल पीले रग के थे और सिर के बाल इतने लाल दिखाई देते थे कि जान पडता था जैसे उनमे आग लग गई हो!

दोनो अँगरेज बडे कौतूहल के साथ उस जर्मन-अफसर को देखने लगे। दुवुई ने एक सवाद-पत्र उठाकर उसे पढने का बहाना करके उसके प्रति अवज्ञा का भाव प्रकट किया। पर वास्तव मे उसके मन की दशा उस समय ऐसी हो रही थी, जैसे किसी पुलिस कर्मचारी के सामने एक चोर की होती है।

गाडी फिर चलने लगी। अँगरेज यात्री आपस में बाते करते जाते थे और बीच-बीच मे युद्ध के वास्तविक क्षेत्रो का पता लगाने के उद्देश्य से खिड़की से बाहर झाँकते रहते थे। एक बार ज्यो ही उनमे से एक व्यक्ति ने क्षितिज की एक विशेष दिशा की ओर उँगली उठाते हुए अपने साथी को उस विशेष गाँव के सम्बन्ध में कुछ विशेष बताना चाहा; त्यो ही जर्मन-

अफसर अपनी लम्बी टाँगो को आगे फैलाकर फ्रेंच भाषा मे बोल उठा—"उस गाँव मे हमने एक दर्जन फ्रेंच सिपाहियो को जान से मार डाला, और सौ से अधिक फ्रासीसियो को कैद किया है।"

अँगरेज़ो की उत्सुकता बढी। उन्होने कहा—"अच्छा, यह बात है! उस गाँव का नाम क्या है।"

उत्तर मिला—"फार्सबुर्ग।"

जर्मन ने बाद मे यह कहा—"इन फ़ासीसी गुण्डो के कान पकड-पकड़-कर हमने उन्हे अच्छा नाच नचाया।"

यह कहकर वह दुबुई की ओर कनखियो से देखता हुआ अत्यन्त बेहूदा ढंग से मुस्कराने लगा।

गाडी बढी चली गई। रास्ते मे जो-जो मकान मिलते थे वे सब जर्मन-सिपाहियो से घिरे हुए थे। विजयी जर्मन-सिपाही सडको पर, खेतो के किनारे, फाटको के सामने, होटलो के बाहर बाते करते हुए दिखाई देते थे। फ़ास की सारी भूमि को वे टिड्डी-दल की तरह छाये हुए थे।

अफसर अपने दाये हाथ को बडी फुरती के साथ झटकते हुए बोला—"यदि मुझे प्रधान सेनापति बना दिया जाता, तो मै पेरिस पर अधिकार जमाकर उसे एक सिरे से दूसरे सिरे तक जला देता और एक भी फ्रासीसी को जीता न छोडता। फ्रास का कोई चिह्न मै रहने न देता।"

अँगरेज यात्री केवल "हूँ!" कहकर रह गये।

अफसर कहता चला गया—"बीस वर्ष बाद सारा योरप हमारे अधिकार मे आ जायगा। जर्मनो के विरुद्ध यदि योरप के सब देश एक साथ उठ खडे हो तो भी वे उससे पार नही पा सकते।"

अँगरेज़ यात्रियो को स्पष्ट ही यह बात पसन्द न आई। पर वे उत्तर में बोले कुछ नही। उनके मुखो पर एक ऐसी निश्चलता छा गई कि ऐसा

जान पडता था जैसे वे मोम के पुतले हो। जर्मन-अफसर अपनी बात पर स्वय अट्टहास करता हुआ फ्रास और फ्रासीसियो के प्रति घोर घृणा का भाव प्रकट करने लगा। अपने दलित शत्रु को इस तरह कठोर वाक्यवाणों से अपमानित करते हुए उसे स्पष्ट ही एक प्रकार का अमानुषिक आनन्द प्राप्त हो रहा था। वह फासीसी सिपाहियो की शक्तिहीनता और उनके अस्त्र-शस्त्रो की व्यर्थता पर व्यग्य कसने लगा। इसके बाद सहसा उसने अपने मिलिटरी जूतो को दुबुई की जाँघो के पास तक बढा दिया। दुब्रुई का मुख क्रोध, लज्जा और विवशता के कारण तमतमा आया। उसने हटकर अपनी आँखें फेर ली।

दोनो अँगरेज़ यात्री ऐसे निर्विकार और उदासीन बन गये थे जैसे वे सारे ससार से अलग हटकर अपने द्वीप में जाकर वन्द हो गये हो।

जर्मन-अफसर ने अपनी जेव से पाइप निकालकर दुबुई की ओर स्थिर दृष्टि से देखते हुए बोला—"तुम्हारे पास पाइप में डालने का तमाखू है?"

दुबुई ने कहा—"जी नही।"

जर्मन बोला—"जब गाडी अगले स्टेशन पर खडी होगी तब बाहर से खरीदकर कुछ तमाखू तुम्हे मेरे लिए लाना होगा।"

इसके बाद वह हँसा और बोला—"इसके बदले मैं तुम्हे शराब पीने के लिए पैसे दे दूँगा।"

गाडी सीटी बजाकर एक ऐसे स्टेशन पर जाकर ठहरी जो जर्मन-सिपाहियो-द्वारा एकदम जलाया जा चुका था। जर्मन-अफसर ने गाड़ी का दरवाज़ा खोला और दुबुई का हाथ पकडकर कहा—"शीघ्र जाओ और मैंने तुमसे जैसा करने को कहा है वैसा ही करो।"

जर्मन-सेना की एक टुकड़ी सारे स्टेशन पर अधिकार जमाये थी। बहुत-से जर्मन-सिपाही काठ के बाडे के भीतर से झाँक रहे थे। इजिन

चलने की तैयारी करते हुए धुआँ देने लगा था। दुबुई बडी हड़बड़ी के साथ प्लेटफार्म पर कूदा और स्टेशन-मास्टर के सावधान करने पर भी दूसरे डिब्बे के भीतर जा घुसा।

* * *

उस डिब्बे में दुबुई अकेला था। उसका हृदय अपमान और असमर्थ क्रोध के कारण ऐसे जोरो से धडक रहा था कि उसने दम घुटने के भय से वेस्टकोट के बटन खोल डाले। हाँफते हुए उसने अपने कपाल का पसीना पोंछा।

जब दूसरे स्टेशन में गाड़ी खडी हुई तब वही जर्मन-अफसर अकस्मात् फिर दुबुई के डिब्बे मे आ घुसा। दोनो अँगरेज यात्री भी कौतूहलवश उसके पीछे-पीछे वही चले आये। जर्मन ने दुबुई के सामने खड़े होकर कहा—"मैंने तुमसे जो कुछ करने को कहा था उसे तुम करना नही चाहते!"

दुबुई ने उत्तर दिया—"जी नही।"

इतने में गाडी छूट गई। जर्मन ने उत्कट क्रोध का भाव जताते हुए कहा—"मैं तुम्हारी मूँछें काटकर उनसे अपना पाइप भरूँगा।"—यह कहकर उसने अपना हाथ दुबुई की मूँछो की ओर बढ़ाया।

दोनो अँगरेज़ उसी निर्विकार भाव से एकटक यह सारा दृश्य देख रहे थे। जर्मन ज्यो ही दुबुई की मूछो को पकडकर उन्हे खीचने लगा, त्योही दुबुई के सारे शरीर में एक उन्मत्त स्फूर्ति सञ्चारित हो उठी। उसने बिजली के वेग से झटका देकर जर्मन-अफ़सर का हाथ हटाया और उसका गला पकड़कर उसे धड से नीचे गिरा दिया। इसके बाद वह अप्राकृतिक उन्माद से ग्रस्त व्यक्ति की तरह उस पर चढ़ बैठा और अत्यन्त निर्ममता के साथ उसका गला घोटने लगा। उसकी आँखे शराबी की तरह चढी हुई थी, उसके कपाल की नसे फूलकर गठीली रस्सियो की

तरह बाहर को उभर आई थी। वह अन्धा होकर थप्पड और घूँसो से उसे मारता जाता था और यह नही देख रहा था कि कौन चोट किस स्थान-पर पड़ रही है। जर्मन जी-जान से अपने को छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा था, पर उस तगडे फ्रासीसी के हृष्टपुष्ट शरीर के भार से उसका कचूमर निकला जा रहा था और उसकी सब चेष्टाये व्यर्थ सिद्ध हो रही थी। जर्मन की नाक से और मुंह से रक्त बहने लगा था और उसके गले से कोई शब्द नही निकल पाता था। वह निश्चित रूप मे समझ गया था कि वह उत्तेजित फ्रासीसी बिना उसके प्राण लिये न छोडेगा।

दोनो अँगरेज यात्री यह कौतुक अच्छी तरह देखने के लिए और निकट चले आये। ऐसा जान पडता था कि दोनों में से कौन जीतेगा, इस बात पर वे बाजी लगाने को तैयार हैं।

सहसा दुबुई अपनी उन्मत्त उत्तेजना के परिणाम-स्वरूप थककर उठ खडा हुआ और हाँफते हुए अपने स्थान पर चुपचाप जा बैठा। जर्मन-अफसर इस आकस्मिक और अप्रत्याशित आक्रमण से इस कदर घबरा उठा था कि पलटे मे फ्रासीसी पर किसी प्रकार का आक्रमण करने का साहस उसे न हुआ। जब कुछ देर तक सुस्ताने के बाद वह बोलने के योग्य हुआ, तो उसने कहा—"यदि तुम पिस्तौल से मेरे साथ द्वन्द्वयुद्ध करना स्वीकार न करोगे, तो मै तुम्हे यही पर जान से मार डालूँगा।"

दुबुई ने उत्तर दिया—"मै द्वन्द्वयुद्ध के लिए तैयार हूँ; जब तुम चाहो।"

जर्मन बोला—"स्ट्रासबूर्ग का स्टेशन निकट आ रहा है। मैं दो अफसरो को अपने साथ के लिए चुन लूँगा। गाडी छूटने के पहले ही हम लोग इस काम से छुट्टी पा जायँगे।"

दुबुई ने अँगरेजो से कहा—"आप लोग क्या इस द्वन्द्वयुद्ध में मेरे सहायक बनना स्वीकार करेंगे?"

अँगरेजों ने उत्साह के साथ उत्तर दिया—"क्यो नही !"

गाडी ठहरी। जर्मनी ने नियम के अनुसार अपने दो साथी चुन लिये। दुबुई भी अँगरेजो को साथ लेकर निश्चित स्थान पर पहुँचा। अँगरेज़ अपने हाथ मे घडी लिये हुए सब तैयारियाँ कर रहे थे। वे कौतुक अवश्य देखना चाहते थे, पर उसके लिए गाडी छुडवाने को तैयार न थे।

दुबुई ने अपने जीवन मे आज प्रथम बार पिस्तौल हाथ में ली थी। उसके दो सहायको ने उसे उसके प्रतिपक्षी से बीस पग की दूरी पर खडा किया। इसके बाद उससे पूछा गया—"क्या आप तैयार है?" उसने कहा—"जी हाँ।" इस बीच एक अँगरेज ने धूप से बचने के लिए अपना छाता खोल लिया था।

शीघ्र ही दुबुई के कान में आवाज गई—"गोली चलाओ!"

दुबुई ने बिना किसी विशेष लक्ष्य के गोली चला दी। पर उसके आश्चर्य की सीमा न रही जब उसने देखा कि जर्मन-अफसर लडखडाता हुआ जमीन पर औधा होकर गिर पडा। दुबुई ने उसे जान से मार डाला था।

एक अँगरेज "वाह!" कहकर मारे प्रसन्नता के उछल पडा। दूसरा अँगरेज़ जिसके हाथ में घडी थी, दुबुई का हाथ पकडकर उसे स्टेशन की ओर ले चला। तीनो बडी हडबडी के साथ दूसरे यात्रियो को धक्के देते हुए प्लेटफॉर्म पर पहुँचे। गाडी छूटना ही चाहती थी। तीनो अपने डिब्बे मे घुसे। इसके बाद दोनो अँगरेज अपने सिर पर से टोपियाँ उतारकर उन्हे तीन बार हिलाते हुए बोल उठे—"हिप! हिप! हिप! हुर्रा!" एक-एक करके उन्होने दुबुई से हाथ मिलाया। और तब अपने-अपने स्थान पर जाकर बैठ गये।

प्रत्यागमन

समुद्र अपनी छोटी-छोटी समान लहरियो से किनारे की भूमि पर थपेडे मार रहा है। शुभ्र, श्वेत बादलो के छोटे-छोटे टुकडे नील-आकाश में शीघ्र गति से मँडरा-से रहे है। किनारे की पहाड़ी घाटी के अञ्चल मे सारा गाँव बड़ी शान्ति और सन्तोष के साथ धूप खा रहा है।

गाँव की सीमा मे सडक के किनारे मार्ता-लेवेस्क का कच्चा मकान है। वे लोग मछुवे है। उनकी कुटिया की दीवारें मिट्टी की है और छप्पर फूस से छाया हुआ है। कुटिया के सामने जमीन के एक छोटे-से टुकड़े में करमकल्ला, प्याज आदि घरेलू साग-सब्जियाँ लगाई गई हैं।

घर का मालिक मछलियाँ मारने गया हुआ है। कुटिया के सामने उसकी स्त्री एक भूरे रग के बडे जाल की मरम्मत कर रही है, जो दीवार पर मकड़ी के बहुत बडे जाले की तरह फैला हुआ है। फाटक के पास चौदह वर्ष की एक लड़की एक कुर्सी पर बैठी हुई फटे-पुराने कपडे की मरम्मत कर रही है। दूसरी लडकी, जो पहली से एक वर्ष छोटी है, एक बहुत छोटे बच्चे को सुला रही है। पास ही दो और बच्चे, जिनकी आयु दो-तीन वर्ष के बीच की होगी, आमने-सामने घुटनो के बल बैठे हुए एक-दूसरे के ऊपर धूल फेंक रहे है।

कोई एक शब्द नही बोलता। केवल नन्हा-सा बच्चा, जिसे सुलाने की चेष्टा की जा रही है, एक क्षीण किन्तु तीखे स्वर से रोता जाता है। एक बिल्ली खिड़की के नीचे एक आले पर बैठी ऊँघ रही है, और कुछ

मधुमक्खियाँ दीवार के नीचे खिले हुए कुछ लाल फूलो पर मँडराती हुई गुनगुना रही है।

जो लडकी फाटक पर बैठी हुई कपड़े सी रही है, वह अकस्मात् बोल उठती है—"मा!"

मा कहती है—"क्यो, क्या बात है?"

"वह फिर आ पहुँचा है।"

आज प्रातःकाल से एक अपरिचित पुरुष उनके घर के पास आकर चक्कर लगा रहा है। देखने मे वह भिखारी-सा लगता है। उसे देखकर मा-बेटी कुछ चिन्तित-सी हो उठी हैं। जब वे घर के मालिक को नाव तक पहुँचाने गई थी तब पहले-पहल उन्होने उस भिखारी को सड़क के किनारे अपनी कुटिया के सामने बैठे देखा था। जब वे लौटकर आईं, तो उन्होने उसे फिर भी वही बैठा पाया। वह उनके घर की ओर उत्सुक दृष्टि से देख रहा था।

वह बहुत रुग्ण और उदास दिखाई देता था। एक घंटे तक वह अपने स्थान से न हटा। इसके बाद यह सोचकर कि घरवाले उसे चोर समझकर उसे सन्देह की दृष्टि से देखने लगे है, वह उठकर धीरे-धीरे उदास-भाव से चला गया। पर शीघ्र ही फिर उन लोगो ने उसे उसी धीमी और सुस्त चाल से वापस आते देखा। इस बार वह पहले स्थान से कुछ हटकर बैठ गया और फिर उनकी कुटिया की ओर उत्सुक दृष्टि से देखने लगा। इससे मा-बेटियाँ अधिक शकित और भयभीत हो उठी। मा बडे भीरु स्वभाव की थी। वह यह भी जानती थी कि उसका पति रात होने के पहले नही लौटेगा। उसके पति का नाम लेवेस्क था और उसने अपना पूर्व उपनाम मार्ता—अभी तक नही बदला था। इसलिए वे लोग मार्ता-लेवेस्क, इस सयुक्त नाम से गाँव में प्रसिद्ध थे।

बात यह थी कि उसका विवाह प्रारम्भ मे मार्ता नामक एक मल्लाह से हुआ था, जो प्रतिवर्ष न्यूफाउन्डलैण्ड के पास मछली मारने के अड्डो में जाया करता था। विवाहित जीवन के दो वर्ष के भीतर उसके एक लड़की उत्पन्न हुई थी और जब उसके पति ने 'द्यू सिअर' (दो बहनें) नामक बजरे में सवार होकर न्यूफाउन्डलैण्ड के लिए प्रस्थान किया तो उस समय वह एक दूसरे बच्चे को गर्भ मे धारण कर चुकी थी। पर वह बजरा न जाने कहाँ लापता हो गया किसी को इस बात का पता न चला। जितने यात्री उसमें सवार होकर गये थे उनमे से एक भी फिर कभी लौटकर नही आया।

ला मार्ता फिर भी दस वर्ष तक अपने पति के लौटने की प्रतीक्षा करती रही। उसने इतने समय बडे कष्ट मे अपने दिन बिताये, और किसी तरह लडकियो को पाल-पोसकर बडा किया। अन्त मे लेवेस्क ने, जो उसी गाँव का एक मछुआ था, उसे एक योग्य और परिश्रमी स्त्री समझकर उससे यह प्रार्थना की थी कि वह उसके साथ विवाह कर ले। उसने और कोई दूसरी गति न देखकर लेवेस्क मे विवाह कर लिया। इस विवाह से तीन वर्षों के भीतर उसके दो बच्चे और उत्पन्न हुए।

वे लोग बडे कष्ट से अपने जीवन का निर्वाह कर पाते थे। सूखी रोटी भी उन्हे महँगी पडती थी। मास तो कभी प्राप्त ही नही हो पाता था। जाड़ो मे रोटीवाले से रोटी भी उधार लेनी पडती थी। फिर भी उसके बच्चे स्वस्थ दिखाई देते थे। लोग उनके सम्बन्ध मे कहा करते थे—"मार्ता-लेवेस्क का परिवार बडा योग्य है। ला मार्ता बडी कर्मठ स्त्री है और लेवेस्क के जोड़ का अनुभवी मछुआ गाँव में दूसरा नही है।"

फाटक पर बैठी हुई लड़की फिर एक बार बोली—"सम्भव है, यह

आदमी हमें पहचानता हो। यह भी सम्भव है कि वह किसी पासवाले गाँव में रहनेवाला भिखारी हो।"

पर उसकी मा को लड़की की किसी भी बात पर विश्वास नहीं होता था। उसकी यह ध्रुव धारणा थी कि वह आस-पास के किसी भी स्थान का व्यक्ति नहीं है।

वह अपरिचित व्यक्ति एक खम्भे की तरह अपने स्थान पर स्थिर बैठा था और धृष्टतापूर्वक-एकटक दृष्टि से ला मार्ता की कुटिया की ओर देख रहा था। यह देख ला मार्ता बौखला उठी। भय ने उसे ढीठ बना दिया, और वह हाथ मे एक कुदाली लेकर फाटक के बाहर गई। उसने चिल्लाकर कहा—"तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

आवारे ने भारी आवाज मे कहा—"मै यहाँ बैठा हवा खा रहा हूँ। मै तुम्हारा क्या बिगाड रहा हूँ ?"

"तुम मेरे मकान के चारो ओर इस तरह क्यो घूर रहे हो ?"

अपरिचित व्यक्ति बोला—"मै किसी का कुछ नही बिगाड़ रहा हूँ, क्या सडक के किनारे बैठने मे भी कोई दोष है ?"

इसके उत्तर मे ला मार्ता कुछ न कह सकी और चुपचाप लौट चली। दिन बड़े धीरे-धीरे बीतने लगा। दोपहर के समय वह आवारा वहाँ से उठकर चला गया। पर पाँच बजे वह फिर दिखाई दिया। इसके बाद वह उस दिन फिर नही आया।

लेवेस्क अंधेरा होने पर घर पहुँचा। उसने सारा किस्सा सुना और वह जिस परिणाम को पहुँचा उसे उसने इन शब्दो में व्यक्त किया—"मेरा विश्वास है कि वह एक लफ़ंगा है।"

लेवेस्क रात में निश्चित होकर सोया, पर ला मार्ता केमस्तिष्क को उस आवारे की कल्पना भूत की तरह दबाये रही। बार-बार वह यह

सोचकर अशान्त हो उठती थी कि वह अपरिचित व्यक्ति क्यो सब समय उसे एक विचित्र रहस्यमयी दृष्टि से देखता रहा।

दूसरे दिन प्रात.काल वायु का वेग अत्यन्त प्रबल था, इसलिए लेवेस्क समुद्र मे मछली मारने के लिए न जा सका। वह घर पर बैठे-बैठे अपनी स्त्री को जाल की मरम्मत के काम में सहायता देने लगा।

प्राय नौ बजे के समय ला मार्तां की पहले विवाह की लड़की, जो बाहर रोटी मोल लेने गई थी, घबराई हुई-सी दौडी आई और हाँफते हुए बोली—"मा! मा! वह फिर आ पहुँचा है!"

ला मार्तां भी चिन्तित और व्याकुल हो उठी। उसने लेवेस्क से कहा—"तुम उसके पास जाकर बाते करो, और उसे समझाओ कि इस प्रकार हम लोगो के पीछे न पड़े। इससे मेरा चित्त अशान्त हो उठता है।"

लेवेस्क लम्बे-लम्बे पग रखता हुआ शान्तभाव से चलने लगा। आवारे के पास पहुँचने पर वह उससे बातें करने लगा। मा-बेटियाँ अत्यन्त शंकित हृदय से उन दोनो की ओर देखती रही। सहसा वह परदेशी अपने स्थान पर से उठा और लेवेस्क के साथ ला मार्तां के घर की ओर आगे बढा। ला मार्तां अस्थिर हो उठी और पीछे हट गई। उसके पति ने उसके पास आकर कहा—"इस व्यक्ति को एक टुकडा रोटी का और एक गिलास शर्बत दो। दो दिन से उसने कुछ भी मुँह मे नही डाला है।"

परदेशी कुटिया के भीतर एक कोने में जाकर बैठ गया। उसे जब रोटी खाने को दी गई, तो वह सिर नीचा करके खाने लगा। घर के सब प्राणी बडे ध्यानपूर्वक एकटक दृष्टि से उसे देख रहे थे। ला मार्तां उसकी आकृति और प्रकृति की विशेषताओ का निरीक्षण अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ कर रही थी। बडी लडकियाँ—दोनो पहले विवाह से उत्पन्न हुई

थी—दरवाजे की ओर पीठ करके अत्यन्त एकाग्रता के साथ उसे देख रही थी और एक क्षण के लिए भी उन्होंने अपनी आँखे उसकी ओर से नही हटाई। वे अपना सब खेल-कूद भूल गई थी।

लेवेस्क भी एक स्थान पर बैठ गया। उसने परदेशी से पूछा—"तो तुम बडी दूर से आ रहे हो?"

"मै सेत से आया हूँ।"

"इसी प्रकार पैदल चक्कर लगाते और भीख माँगते हुए?"

"हाँ, और क्या! पास में पैसा न रहने से इनके सिवा और चारा ही क्या है?"

"कहाँ जाने का विचार है?"

"यही तक आने का विचार करके आया था।"

"क्या यहाँ तुम्हारा किसी से परिचय है?"

"सम्भव तो यही है।"

इसके बाद कोई कुछ नही बोला। परदेशी धीरे-धीरे खा रहा था। प्रत्येक कौर के बाद वह नीबू के शर्बत की एक घूँट पी रहा था। उसके मुख में झुर्रियाँ पड़ी हुई थी, गाल पिचके हुए थे और आँखो मे अतिशय श्रान्ति के सुस्पष्ट चिह्न अंकित दिखाई देते थे। जान पडता था कि उसे जीवन में घोर कठिनाइयो का अनुभव करना पडा है।

लेवेस्क ने अकस्मात् पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने अपना सिर ऊपर को उठाये उत्तर दिया—"मेरा नाम मार्ता है।"

ला मार्ता के कानो में ज्यो ही इस नाम की भनक गई, त्यो ही उसके शरीर में एक अनोखी सिहरन दौड गई। वह एक पग आगे बढी, जैसे उस आवारे को अधिक निकट से देखना चाहती हो, और आँखें फाड-फाडकर स्तब्धभाव से उसकी ओर ताकती रह गई। फिर एक बार कमरे में सन्नाटा छा गया।

अन्त में लेवेस्क ने मौन भंग करते हुए कहा—"क्या तुम इसी गाँव के रहनेवाले हो ?"

"हाँ।" यह कहकर परदेशी ने ला मार्ता की ओर देखने का साहस किया। उसकी दृष्टि की मार्मिकता का गहरा प्रभाव ला मार्ता पर पड़ा। वह भी अपलक दृष्टि से उसे देख रही थी। ऐसा जान पड़ता था जैसे दोनों की आँखों ने एक-दूसरे को अज्ञात बन्धन में जकड लिया हो।

सहसा ला मार्ता काँपते हुए गले से अस्फुट स्वर में बोल उठी—"क्या तुम—क्या तुम मेरे पति, मार्ता हो ?"

उसने धीरे से उत्तर दिया—"हाँ, मै वही हूँ।"

फिर भी वह न हिला और न डुला, पहले की ही तरह रोटी के टुकडे को चबाता रहा।

लेवेस्क के मन मे घबराहट उतनी नहीं हुई जितना कि आश्चर्य। उसने हकलाते हुए कहा—"तुम क्या सचमुच मार्ता हो ?"

"हाँ, मै ही मार्ता हूँ।"

ला मार्ता के द्वितीय पति ने फिर पूछा—"पर इतने वर्षों तक तुम कहाँ रहे ?"

"अफ्रीका के समुद्री तट पर। जब हमारा बजरा डूबने लगा, तब हममे से तीन व्यक्ति—पिकार, वातिनल और मै—तैरकर किनारे पहुँच गये। इसके बाद कुछ बर्बर-जाति के मनुष्य हमे पकड़कर ले गये। बारह वर्ष तक हम लोग कैद मे रहे। पिकार और वातिनल की मृत्यु हो गई। एक अँगरेज यात्री, जो उस देश में भ्रमण करने आया था, मुझे पकड़कर अपने साथ ले गया और सेत तक पहुँचाकर उसने मुझे छोड़ दिया। इस प्रकार मैं यहाँ पहुँच पाया हूँ।"

ला मार्ता रोने लगी थी। अपने उत्तरीय के अञ्चल मे आँखे छिपाकर

वह विह्वल होकर सिसक-सिसककर अपनी व्याकुलता प्रकट कर रही थी।

लेवेस्क बोल उठा—"तो अब हम लोगो को क्या करना चाहिए?"

मार्ता ने पूछा—"क्या तुम उसके पति हो?"

लेवेस्क ने कहा—"हाँ, हूँ तो।"

दोनो ने एक दूसरे की ओर देखा, और फिर चुप हो रहे। इसके बाद मार्ता ने एक-एक करके सब बच्चो की ओर एक बार देखा, और दोनो बड़ी लड़कियो की ओर सकेत करते हुए बोला—"क्या ये मेरी लड़कियाँ है?"

लेवेस्क ने उत्तर दिया—"हाँ, ये तुम्हारी ही है।"

मार्ता ने उन्हे देखकर किसी प्रकार की भावुकता का आवेश नही प्रकट होने दिया। उसने केवल कहा—"ये तो अब बहुत बडी दिखाई देने लगी है!"

लेवेस्क ने पहले की ही तरह भ्रान्तभाव से कहा—"अब हम लोग क्या करे? जो समस्या आ खडी हुई है, उसे कैसे सुलझावे?"

मार्ता भी बडे चक्कर मे पडा हुआ था। कुछ देर तक वह कोई उत्तर न दे सका, पर बाद मे उसने साहस बटोरकर कहा—"तुम जैसा कहोगे मै वही करूँगा। मै तुम्हे किसी सकट मे नही डालना चाहता। मेरी दो लड़कियाँ है और तुम्हारे भी तीन बच्चे है—मै अपनी लडकियों की देख-भाल करूँगा और तुम अपने बच्चो की। इसके बाद उनकी मा का प्रश्न खड़ा होता है। मेरी समझ मे नही आता कि उस पर सच्चा अधिकार हम दोनो में से किसका है? इस सम्बन्ध में तुम्हारी जो राय होगी मैं उसे मान लूँगा। पर यह घर मेरा है। यह मेरी पैत्रिक सम्पत्ति है। मेरे पिता इसे मेरे लिए छोड़कर मरे थे और मेरा जन्म इसी में हुआ

था । इसके सम्बन्ध के सब आवश्यक कागज़-पत्र वकील के पास सुरक्षित हैं ।"

ला मार्ती निरन्तर सिसक-सिसककर, फफक-फफककर रोती चली जाती थी। दोनो लडकियाँ अपने पिता के कुछ निकट आकर खड़ी हो गईं, और बडी अस्थिरता के साथ उसकी ओर देख रही थी।

मार्ती खाना खा चुका था। उसने जैसे लेवेस्क के प्रश्न को दुहराया—"तो अब क्या करना होगा ?"

लेवेस्क के मन मे एक सूझ उत्पन्न हुई थी। उसने कहा—"सबसे अच्छा उपाय यह है कि हम लोग धर्माधिकारी के पास जायँ। वह जो कुछ निश्चय करे उसे दोनो मान ले।"

मार्ती उठ खडा हुआ । ज्यो ही वह अपनी स्त्री की ओर आगे बढ़ा, त्यो ही उसने अपने पति के दोनो हाथ पकड लिये और उन पर अपना मुँह छिपाकर वह बिलखती हुई कहने लगी—"मार्ती ! मार्ती ! तुम क्या सचमुच लौट आये !"

यह कहकर उसने अधिक दृढता से उसके हाथ जकड लिये । उसके मस्तिष्क मे बीते हुए दिनो की मधुर स्मृतियाँ जगकर बवण्डर मचाने लगी थी। उसके मन मे यौवन-काल के प्रथम मिलन की व्याकुल-वेदना उभडकर उसे उद्दामवेग से अपने बहाव मे बहाये लिये जाती थी।

मार्ती के मन मे भी इस दृश्य से भावुकता तरंगित होने लगी थी। दोनो लडकियो ने जब अपनी मा को रोते देखा, तो वे भी एक साथ धाड मारकर रोने लगी। सबसे छोटा बच्चा, जो मार्ती की दूसरी लडकी के हाथ मे था यह सम्मिलित क्रन्दन-ध्वनि सुनकर स्वय भी बडे तीखे शब्द से चिल्लाने और रोने लगा।

ला मार्ती जब कुछ सँभली, तो उसने अपनी लडकियो से कहा—

"तुम क्या अपने पिता के प्रति प्रेम नही जताओगी?" दोनो लडकियाँ आगे बढी। मार्ता ने उनका हाथ पकडकर उन्हे आशीर्वाद दिया। उस अपरिचित व्यक्ति को अपने इतने अधिक निकट देखकर नन्हा-सा बच्चा ऐसे विकट शब्द से चिल्लाया कि उसे मूर्च्छा आने का-सा चिह्न दिखाई दिया।

इसके बाद दोनो पति साथ-साथ चलते हुए बाहर निकल आये। जब वे एक 'काफे' से होकर चले जा रहे थे, तो लेवेस्क ने प्रस्ताव किया—"चलो, भीतर चलकर पहले कुछ पिया जाय।"

मार्ता ने कहा—"अच्छी बात है।"

दोनो भीतर गये और आमने-सामने दो कुर्सियो पर बैठ गये। उनके अतिरिक्त और कोई ग्राहक वहाँ इस समय नही आया हुआ था।

लेवेस्क ने 'काफे' के मालिक से कहा—"शिको, अच्छी से अच्छी चीज़ पिलाओ। यह देखो मार्ता आया हुआ है। मार्ता को तुम जानते ही होगे,—मेरी स्त्री का पहला पति मार्ता, जो 'द्यू सिअर' के साथ लापता हो गया था।"

लाल मुख और भारी-भरकम शरीरवाला एक व्यक्ति उस 'काफे' का मालिक था। वह एक हाथ मे तीन गिलास और दूसरे मे शीशे का एक बडा बर्तन, जिसमें मधु छलक रहा था, लेकर उनके पास चला आया, और अत्यन्त शान्ति के साथ उसने कहा—"अच्छा, तो मार्ता, तुम अन्त मे आ ही पहुँचे।"

मार्ता बोला—"हाँ, मै आगया।"

एक पत्नी की स्वीकारोक्ति

बन्धुवर! तुमने मुझसे अपने जीवन के मधुर सस्मरणों की चर्चा करने का अनुरोध किया है। मुझे अब वृद्धावस्था ने पूर्ण रूप से जकड़ लिया है और आज मै इस विपुल विश्व मे एकाकिनी हूँ। न मेरे कोई सगे-सम्बन्धी रह गये है, न मेरे कोई बाल-बच्चे है। इसलिए अपने जीवन की कुछ भेद-भरी बातों पर प्रकाश डालने मे किसी प्रकार की बाधा मेरे सामने नही है। पर तुम्हें एक बात की प्रतिज्ञा करनी होगी—मेरा नाम कभी किसी के आगे प्रकट न करना।

अपने जीवन के वसन्त-काल मे मै बहुत सुन्दरी थी। मुझे जीवन में बहुत प्रेम मिला है। प्रेम ही मेरे जीवन का आधार रहा है। जिस प्रकार शरीर को जीवित रहने के लिए वायु की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मेरी आत्मा को सजीव बने रहने के लिए सदा प्रेम की आवश्यकता रही है। बिना प्रेम के इस ससार में जीवित रहने की इच्छा कभी मेरे मन में नही रही। स्त्रियाँ बहुधा यह ढोग रचा करती है कि वे अपने परिपूर्ण हृदय से केवल एक ही बार प्रेम करती है, पहले मेरी भी यही धारणा थी। पर जीवन के विचित्र अनुभवो ने इस सम्बन्ध मे मुझे अपने इस विचार को बदलने के लिए बाध्य किया है।

आज मैं तुम्हे अपने जीवन की प्रथम रोमाञ्चकर घटना से परिचित कराना चाहती हूँ। इस घटना में मै पूर्णत निर्दोष थी। पर इसके फलस्वरूप मेरा जीवन-चक्र एकदम बदल गया।

कौंट हर्वे नामक एक धनी व्यक्ति से मेरा विवाह एक वर्ष पहले हो चुका था। पर इस व्यक्ति के प्रति मेरे मन मे कभी प्रेम का भाव नही उमड़ा। वास्तविक प्रेम को स्वतत्रता और बन्धन, इन दोनो बातो की आवश्यकता समान रूप से रहती है। जो प्रेम विवाह के मत्रो अथवा कानून-द्वारा बलपूर्वक किसी के मत्थे मढ दिया जाता है, क्या उसे वास्तव में प्रेम कह सकते है ? कुछ भी हो, मेरे पति के शरीर का गठन बहुत सुन्दर था, और उसका शील-स्वभाव भी बहुत अच्छा था। पर उसमें बुद्धि का अभाव था। वह बडा मुँहफट था, और उसके विचार ऐसे स्पष्ट और तीखे होते थे कि छुरे की तरह किसी बात को काट-काटकर उसके टुकड़े-टुकडे कर डालते थे। पर वे विचार उसके अपने नही होते थे। अपने माता-पिता से जो विचार उसने प्राप्त किये थे वे ज्यो के त्यो उसके मन पर अपनी छाप डाले हुए थे। किसी बात को स्वय समझकर उसका विश्लेषण करने की बुद्धि उसमे नही थी। किसी भी विषय पर वह बिना किसी भी झिझक के तत्काल अपने सकीर्ण विचार प्रकट कर देता था और यह सोचने का धैर्य उसमे नही रहता था कि किसी विषय के और भी कई-पहलू हो सकते है और विभिन्न दृष्टिकोणो से उस पर विचार किया जा सकता है। उसके सकुचित मस्तिष्क में जो रूढियाँ बन्द पडी थी, उनके अतिरिक्त और कोई स्वतत्र विचार उसमें तरगित नही हो पाता था।

जिस कोठी में हम लोग रहते थे वह एक एकान्त और निर्जन स्थान में अवस्थित थी। कोठी बहुत बडी थी और चारो ओर पेडो से घिरी हुई थी। उसमे स्थान-स्थान में सफेद काई लगी रहती थी, जो ऐसी उभरी रहती थी कि बुड्ढे मनुष्यो की दाढी की तरह दिखाई देती थी। कोठी से लगा हुआ एक बहुत बड़ा बाग था, जो एक प्रकार के छोटे-मोटे जगल-सा लगता था और उसके चारो ओर खाई थी। बाग़ के उस पार एक

बहुत बड़ा चरागाह था, जहाँ बडे-बडे तालाब सरकडो से भरे हुए रहते थे। बाग और तालाबो के बीच में मेरे पति ने एक छोटी-सी कुटिया जगली बतखो और मुर्गाबियो का शिकार करने के लिए बनवा रक्खी थी।

जितने नौकर-चाकर हमारी कोठी में काम करते थे उनमें दो व्यक्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। एक तो चौकीदार, जो मेरे पति की सेवा मे ऐसा तत्पर रहता था कि उसके लिए अपने प्राणो की बलि देने को सदा उद्यत जान पडता था, पर स्वभाव मे वह बडा जाँगलू था। दूसरा व्यक्ति पुरुष नही, वल्कि एक स्त्री थी। वह मेरी विशेष परिचारिका थी। उसे मैं अपनी सगिनी के समान मानती थी और वह भी मुझे जी-जान से चाहती थी। मैं उसे पाँच वर्ष पहले स्पेन से अपने साथ लाई थी। वह एक अनाथ बालिका थी। जिस समय की बात मै लिख रही हूँ, उस समय उसकी अवस्था सोलह वर्ष की हो चुकी थी। एक सुन्दरी जिप्सी लड़की के समान उसका रूप-रंग था। वह यद्यपि सोलह वर्ष की थी, पर बीस वर्ष की दिखाई देती थी।

शरत्काल प्रारम्भ हो गया था। शिकार की धूम मची हुई थी। हम लोग कभी अपनी ज़मीदारी मे शिकार खेलते, कभी आस-पास की किसी दूसरी स्टेट में चले जाते। इसी चक्कर में बैरन-सी को मैंने देखा। वह हमारे यहाँ आने-जाने लगा। कुछ समय वह नियमित रूप से हम लोगो से मिलने आता रहा। पर बाद मे अकस्मात् उसका आना एकदम बन्द हो गया। मेरे मन में वह अपनी कोई भी स्मृति नही छोड गया, पर तब से मेरे पति का व्यवहार मेरे प्रति बहुत बदल गया।

तब से मेरे साथ वह अधिक बातें न करता और मन-ही-मन न जाने क्या सोचता रहता! मैं भी उसके इस व्यवहार से चिढकर एक अलग कमरे में रहने लगी। पर यद्यपि मेरा पति मेरे कमरे मे नही आता था,

फिर भी रात के समय अपने कमरे के बाहर मुझे किसी के सशकित पदो का शब्द सुनाई देता था। मुझे ऐसा सन्देह होता था कि कोई व्यक्ति किसी कारण से चुपचाप मेरे कमरे के बाहर आकर कुछ ही समय बाद उसी तरह नि शब्द वापस चला जाता है।

मेरा कमरा सबसे नीचे की मजिल में था। मुझे यह सन्देह भी होने लगा कि कोई व्यक्ति कोठी के चारो ओर घनी, अधकार छाया में किसी विशेष उद्देश्य से लुक-छिपकर चक्कर लगाया करता है। मैंने अपने पति को इस बात की सूचना दी और इस रहस्य का कारण पूछा। उसने एक बार बडे ध्यान से मेरी ओर देखा, जैसे वह मेरे मन का भेद जानना चाहता हो। इसके बाद बोला—"वह कुछ भी नही है, वह चौकीदार है।"

* * *

एक दिन सध्या के समय हर्वे (मेरा पति) को मैंने कुछ विशेष रूप से प्रसन्न पाया। उसने विनोद के-से स्वर में कहा—"क्या तुम तीन घटे तक शिकार मे मेरा साथ देना पसन्द करोगी? तुम भी बन्दूक लेकर चलो। मै आज एक सियार को मारना चाहता हूँ, जो प्रतिदिन सध्या के समय मेरी मुर्गियो को खाने के लिए आया करता है।"

मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। न जाने क्यो, मै इस सम्बन्ध मे उसका साथ देने मे हिचकिचाने लगी। पर चूँकि वह अत्यन्त धृष्टतापूर्वक किसी विशेष मनोभाव से मुझे घूर रहा था—सम्भवत. मेरी परीक्षा लेने के लिए! इसलिए मैंने उत्तर दिया—'क्यो नही, अवश्य।"

यहाँ पर मैं तुम्हे यह जता देना चाहती हूँ कि मैं पुरुष की तरह ही निडर होकर भेडियो और वराहो का शिकार किया करती थी। इसलिए उसका आज का प्रस्ताव एक रूप से कुछ अस्वाभाविक भी नही था।

पर मैंने इस बात पर ध्यान दिया कि मेरा उत्तर सुनकर मेरा पति सहसा बहुत चंचल, अशान्त और अस्थिर हो उठा। वह शंकित पगो से चलता था, अकस्मात् बैठ जाता था और फिर चौंककर उठ खड़ा होता था। प्राय दस बजे उसने मुझसे कहा—"क्या तुम तैयार हो ?"

मैं उठ बैठी। वह मेरी बन्दूक स्वयं लाने जा रहा था। मैंने पूछा—"गोलियाँ भरने की आवश्यकता होगी, या साधारण कारतूस ?"

इस प्रश्न पर उसने कुछ आश्चर्य का भाव प्रकट किया। कुछ सोचकर उसने कहा—"केवल कारतूस से ही काम चल जायगा, तुम निश्चिंत रहो।"

कुछ ही समय बाद वह फिर बोला—"तुम्हारा शान्त और संयत-भाव वास्तव मे प्रशंसनीय है।"

मै खिलखिला उठी। मैंने कहा—"एक साधारण से सियार का शिकार करने के प्रस्ताव से मैं घबरा उठूँगी, क्या तुम मुझे इतनी डरपोक समझते थे ? खूब !"

हम दोनो बाग को पार करते हुए चले। कोठी के सब प्राणी सोये हुए थे। उस प्राचीन, विषाद-म्लान भवन को पूर्णिमा की चाँदनी एक हलकी पीली आभा से आलोकित कर रही थी। चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ था। एक शान्त उदासी चारो ओर मृत्यु के आवरण की तरह छाई हुई थी। हवा बन्द थी। एक पत्ता भी कही नही हिल रहा था। न कही कोई मेढक टर्राता था, न कोई उल्लू बोलता था। मेरा पति चुपचाप चला जा रहा था। ऐसा जान पड़ता था जैसे वह कोई विशेष शब्द सुनने की आशा मे अपने कान लगाये हुए है। वह बडे ध्यानपूर्वक अपने शिकार की खोज मे सावधानी के साथ पग बढाता जाता था। उसकी प्रत्येक इन्द्रिय बड़ी जागरूक मालूम होती थी।

शीघ्र ही हम लोग तालाबो के किनारे पहुँच गये। वहाँ भी वैसा ही सन्नाटा छाया हुआ था। घास का एक तिनका भी नही हिल रहा था। पर पानी की गति के कुछ अस्पष्ट शब्द बीच-बीच मे सुनाई देते थे। कभी-कभी पानी की सतह किसी अज्ञात कारण से आलोड़ित हो उठती थी और उसमें चक्राकार घेरे पड जाते थे।

जब हम लोग कुटिया के पास पहुँचे, तो मेरे पति ने पहले मुझसे भीतर प्रवेश करने के लिए कहा। मै जब भीतर गई तो उसने अपनी बन्दूक को धीरे से भरा। बारूद के करकने के शब्द से एक अनोखी सनसनी-सी मेरे सारे शरीर मे दौड गई। उसने यह बात ताड ली और कहा—"क्या इतनी-सी परीक्षा तुम्हारे लिए असहनीय हो उठी है? यदि ऐसा है, तो तुम अभी लौट जाओ।"

मुझे आश्चर्य हुआ। मैने कहा—"कदापि नही। जिस काम के लिए हम लोग आये है उसे पूरा किये बिना मै कैसे लौट सकती हूँ? आज तुम्हारा व्यवहार मुझे कुछ विचित्र-सा लग रहा है।"

उसने बडबडाते हुए कहा—"जैसी तुम्हारी इच्छा है।"

हम लोग उस कुटिया में काफी देर तक स्थिर बैठे रहे। प्राय आध घटे बाद उस निस्तब्ध निशा की नीरवता को भग करते हुए मैने कहा—"क्या तुम्हे ठीक मालूम है, वह इसी ओर से होकर आ रहा है?"

हर्वे ने ऐसी अर्थ-भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा, जिससे यह स्पष्ट जान पडता था कि मेरी साकेतिक भाषा सुनकर वह कट गया है। कुछ भी हो, उसने मेरे कानो के पास अपना मुँह ले जाकर प्राय फुसफुसाते हुए कहा—"विश्वास मानो, वह निश्चित रूप से इसी ओर आ रहा है।"

इसके बाद फिर एक बार सन्नाटा छा गया।

सम्भवत मेरी आँखें कुछ क्षण के लिए झँप गई थी। अकस्मात् मेरे

पति ने मेरे हाथ को झटकते हुए अत्यन्त धीमे स्वर में कहा—"सामने देखती हो, वह पेड़ो के नीचे दिखाई देता है!"

मैंने उस ओर देखा, पर व्यर्थ। मै कुछ भी न देख पाई। हर्वे ने धीरे से अपनी बन्दूक का घोडा और सब समय मुझे स्थिर दृष्टि से घूरता रहा। मैं स्वयं गोली चलाने की तैयारी करने लगी थी। अकस्मात् मैंने देखा कि हम लोगो से प्राय तीस कदम की दूरी पर चाँदनी के पूर्ण प्रकाश में एक मनुष्य दौडता हुआ भागा चला जा रहा है।

उस मनुष्य को देखकर मैं ऐसी चकित रह गई कि एक विकट शब्द से चिल्ला उठी। पर मै पीछे को लौटने भी न पाई थी कि मेरी आँखो के आगे एक तीव्र प्रकाश चमक उठा और साथ ही मेरे कानो के पर्दों को फाडता हुआ एक भयकर शब्द गूँज उठा। जो मनुष्य भागा जा रहा था वह गोली की चोट से आहत भेडिये की तरह पृथ्वी पर लोटता हुआ दिखाई दिया।

मै आतक से काँपती हुई चीख उठी। मै अपने आपे मे नही थी और पागल-सी हो गई थी। इतने में सहसा हर्वे ने अपने कठोर और सुदृढ हाथो से मेरा गला धर दबाया। उसन मुझे नीचे गिरा दिया और इसके बाद दोनो हाथो से मुझे उठाकर वह दौडता हुआ मुझे वहाँ ले गया जहाँ घास के ऊपर मृत व्यक्ति की लाश पडी थी। उस लाश के ऊपर उसने मुझे पटककर फेक दिया, जैसे वह मेरा सिर तोड डालना चाहता हो।

मैंने सोचा कि अब मेरे जीने की कोई आशा नही है, क्योकि वह निश्चय ही मुझे जान से मार डालेगा। और वास्तव में उसने अपने जूते की एडी मेरे माथे पर मारने के लिए ऊपर उठा ली थी। पर अकस्मात् मैंने देखा कि किसी नें उसे पीछे से पकडकर नीचे गिरा दिया।

मैं हड़बड़ाती हुई उठ खडी हुई। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही,

जब मैंने देखा कि मेरी परिचारिका पार्किता एक जंगली बिल्ली की तरह हुर्वे पर टूट पडी है और उसका मुँह अपने नाखूनो से उधेडती हुई उसकी दाढ़ी और मूँछ के बालो को पागलो की तरह नोच रही है।

इसके बाद पार्किता शीघ्र ही उठ खड़ी हुई, और जो व्यक्ति हुर्वे की गोली से मरा पड़ा था, उसके पास जाकर वह अपनी दोनो बाहो से इसके मृत शरीर को जकडकर गले लगाती हुई बिलख-बिलखकर रोने लगी।

मेरा पति भी उठ बैठा। वह दृश्य देखकर उसकी आँखें खुली। मेरे पैरो पर पडकर उसने कहा—"मुझे क्षमा करो! मुझसे बडी भूल हुई। तुम्हारे चरित्र पर झूठमूठ सन्देह करके मैंने अनजान में तुम्हारे साथ की लडकी के प्रेमी को मार डाला। उसका वह प्रेमी और कोई नही, मेरा चौकीदार था, जिसकी गतिविधि ने मुझे धोखे में डाल दिया।"

पर मेरा ध्यान उस प्रेम-पीडिता, उन्मादिनी नारी की ओर गया हुआ था जो अपने मृत प्रेमी की लाश को जकडे हुए व्याकुल विह्वलता से बिलख रही थी। तब से मैंने अपने सन्दिग्ध-प्रकृति और हृदयहीन पति को धोखा देने का निश्चय कर लिया।

पैशाचिक प्रतिहिंसा

उस समय मैं इम्पीरियल एटार्नी के पद पर नियुक्त था। स्कूल-मास्टर म्वारो के प्रसिद्ध मामले की जाँच का भार मुझे सौंपा गया था। इसलिए इस मामले के रहस्य से मैं भली-भाँति परिचित हूँ।

म्वारो उत्तर-फ्रास के किसी एक प्रान्त में अध्यापन का काम करता था। सारे प्रान्त में उसके गुणों की ख्याति चारो ओर फैली हुई थी। वह बडा बुद्धिमान्, समझदार, धार्मिक और सद्गृहस्थ था। उसकी पत्नी ने एक-एक करके तीन बच्चो को जन्म दिया पर फेफड़े की दुर्बलता के रोग से तीनो एक-एक करके मर गये। अपने बच्चो की दु:खद मृत्यु से अत्यन्त खिन्न होकर वह बहुत दिनों तक शोक मनाता रहा। बाद में वह अपने हृदय का रुद्ध स्नेह उन लड़को पर बरसाने लगा जो शिक्षा पाने के लिए उसकी सरक्षकता में छोड दिये जाते थे। वह अपने पैसो से बढ़िया-बढिया खिलौने लाकर अपने सबसे अधिक योग्य विद्यार्थियो को देता था। वह उन्हें बहुत सुन्दर और स्वादिष्ठ मिठाइयाँ और केक खिलाता था। प्रत्येक व्यक्ति इस धीर, शान्त और सहृदय मास्टर की बडी प्रशसा करता था। बच्चो के प्रति वह इतना अधिक प्रेम दिखाता था कि जब उसके पाँच विद्यार्थी उसी रोग से मरे, जिससे उसके अपने बच्चो की मृत्यु हुई थी तब सबको इस बात से बड़ा धक्का-सा लगा और उस अभागे अध्यापक के दुर्भाग्य पर दया आई। यह विश्वास किया जाने लगा कि अवर्षण के कारण पानी गन्दा हो जाने से बच्चो में एक भयकर छूत का रोग फैल गया है। मूल कारण जानने का पूरा प्रयत्न किया

गया, और रोग के जो विचित्र लक्षण दिखाई देते थे, उनकी परीक्षा की गई, पर कोई फल नही हुआ। बच्चे सारे शरीर मे एक प्रकार की जड़ता की-सी शिकायत करते थे, वे कुछ खा नही सकते थे, उनकी आँतों मे असहनीय वेदना होती थी, और अन्त मे बहुत भयकर कष्ट का अनुभव करने के बाद उनकी मृत्यु हो जाती थी।

इस अनोखे रोग से आक्रान्त एक बच्चे की आँतें परीक्षा के लिए पेरिस भेज दी गई। वहाँ उनकी जाँच हुई, पर उनमे कोई विषैला पदार्थ नही पाया गया।

एक वर्ष तक यह रोग लुप्त रहा और लोग उसकी बात भूल-से गये। पर अकस्मात् दो लड़के, जो अपनी कक्षा मे सबसे अधिक बुद्धिमान् और योग्य माने जाते थे, और अध्यापक म्वारो के विशेष प्रियपात्र थे, चार दिन के भीतर चल बसे। इस बार फिर परीक्षा हुई, जिसके फलस्वरूप पेट के भीतर कूटे हुए शीशे के छोटे-छोटे कण भरे पाये गये। यह अनुमान लगाया गया कि बच्चो ने अपनी स्वाभाविक अज्ञता के कारण कोई ऐसी चीज खा ली होगी जिसके बनाने मे असावधानता से काम लिया गया होगा। म्वारो के यहाँ दूध के एक बर्तन के तले में कुछ पिसा हुआ शीशा मिला, जिसे नौकरानी की लापरवाही का प्रमाण मान लिया गया।

मामला यही पर ठण्डा पड़ जाता; पर शीघ्र ही म्वारो की नौकरानी भी बीमार पड़ गई। डॉक्टर ने उसमे भी वैसे ही लक्षण पाये, जैसे पहले विद्यार्थियो मे पाये गये थे। पूछने पर उसने यह स्वीकार किया कि उसके मालिक ने बच्चो के लिए जो मिठाइयाँ खरीदी थी, उनमे से चुराकर उसने भी कुछ मिठाइयाँ खाई है।

अदालत के आदेशानुसार म्वारो के घर की तलाशी ली गई, और एक अलमारी मे बच्चो के लिए बहुत-सी मिठाइयाँ रक्खी मिली।

उन सब मिठाइयो के भीतर शीशे अथवा टूटी-हुई सुइयो के टुकडे पाये गये।

अध्यापक को उसी समय गिरफ्तार कर लिया गया। उस पर जो सन्देह किया गया उससे वह इतना अधिक विचलित और क्रुद्ध हुआ कि बौखला उठा। पर उसके अपराध के प्रमाण इतने स्पष्ट थे कि मै बड़े असमञ्जस मे पड़ गया। एक ओर तो ये प्रत्यक्ष प्रमाण थे और दूसरी ओर म्वारो की सचाई, सहृदयता और बच्चो के प्रति प्रेम आदि गुणो से मै पहले ही इतना प्रभावित था कि दो परस्पर-विरोधी धारणाओ ने मुझे दोनो ओर से धर दबाया। इसके अतिरिक्त इस प्रकार के अर्थहीन अपराध का कोई उद्देश्य मुझे नही दिखाई दिया।

मेरे मन में स्वभावत. यह विचार उत्पन्न हुआ कि इस सरल-हृदय और धर्म-प्राण अध्यापक को बच्चो की हत्या करने मे क्या सुख मिल सकता है? विशेषकर इन बच्चो को जिन्हे वह विशेष रूप से, अपने बच्चो की ही तरह, चाहता है? जिन बच्चो को बढ़िया-बढिया मिठाइयाँ खिलाने में उसका आधा वेतन खर्च हो जाता है, उन्हे वह इस घोर अमानुषिक कृत्य का शिकार क्यों बनाना चाहेगा?

केवल वही मनुष्य ऐसा काम कर सकता है, जो पागल हो। पर म्वारो में मै इतनी समझदारी, बुद्धिमत्ता और भलमनसाहत पाता था कि इस प्रकार की कल्पना उसके सम्बन्ध में की नही जा सकती थी।

तथापि उसके अपराध के प्रमाणो की सख्या बढती चली जाती थी। जिस दूकान से उसके यहाँ सामान आता था वहाँ जब मिठाइयो की जाँच की गई तो उनमे कोई सन्देहजनक पदार्थ नही मिला। म्वारो ने कहा कि उसके किसी शत्रु ने उसकी अलमारी खोलकर उसके अनजान मे मिठाइयो के भीतर शीशे और सुइयो के टुकडे डाल दिये होगे। उसने यह बात भी

सुझाई कि कोई बदमाश किसी एक विशेष लडके की मृत्यु इस कारण चाहता रहा होगा कि उसके मरने पर वह एक विशेष सम्पत्ति का अधिकारी बन जायगा। उस विशेष लड़के के साथ जो और बच्चे मरे, उनके प्रति उसके मन मे न सहानुभूति थी, न विद्वेष।

उसके इस सुझाव मे कुछ तत्त्व लोगो को दिखाई दिया। वह अपने बात-व्यवहार में अपनी निर्दोषिता के सम्बन्ध में ऐसा आत्म-विश्वास प्रकट करता था और जो बच्चे मरे थे उनके प्रति ऐसी हार्दिक समवेदना जताता था कि हम लोग उसे छोड देने की बात सोचने लगे। पर शीघ्र ही दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्यो का उद्घाटन एक साथ हो जाने से मामला तूल पकड गया। पहली बात यह थी कि उसकी सुँघनी के डिब्बे में बहुत-सा पिसा हुआ शीशा मिला। इस डिब्बे को उसने एक गुप्त दराज मे छिपाकर रक्खा था, जहाँ वह अपने रुपये-पैसे भी रक्खा करता था।

म्वारो इतने पर भी विचलित न हुआ। उसने कहा कि जिस गुण्डे का यह सारा षड्यन्त्र है, उसी की यह चालबाजी है। पर इसी बीच एक दूकानदार ने जज के पास जाकर उससे यह कहा कि म्वारो उसके यहाँ से कई बार बारीक सुइयाँ ले गया है, और यह जानने के लिए कि वे सुइयाँ उसके काम आयेंगी या नही, वह दूकान ही मे उन्हे तोडकर उनकी परीक्षा करता रहा है। दूकानदार अपनी बात की सचाई प्रमाणित करने के लिए अपने साथ एक दर्जन गवाह ले आया था, जिन्होने म्वारो की शिनाख्त करने मे कोई भूल न की। जाँच करने पर मालूम हुआ कि म्वारो उक्त दूकानदार के यहाँ आया-जाया करता था।

बच्चो ने इस बात की गवाही दी कि म्वारो उन्हे अपने सामने मिठाइयाँ खिलाता था और खिला चुकने के बाद इस बात का लेशमात्र चिह्न भी

शेष नही रहने देता था जिससे यह पता लग सके कि उसके यहाँ किसी को मिठाइयाँ खिलाई गई है।

सार्वजनिक सम्मति म्वारो के विपक्ष मे अत्यन्त उत्तेजित हो उठी थी, और जनता स्पष्ट शब्दो मे उसे प्राण-दण्ड दिये जाने का प्रस्ताव करने लगी थी।

म्वारो को प्राणदण्ड दिया गया। उसकी अपील खारिज हो गई। तत्कालीन सम्राट् (तृतीय नेपोलियन) के आगे दया-भिक्षा करने से कोई फल होगा, इसकी कोई आशा म्वारो को न रही।

एक दिन जब मैं अपने आफिस में काम कर रहा था तो मुझे सूचना दी गई कि जेलखाने का धर्माधिकारी मुझसे मिलना चाहता था। यह पादडी वृद्ध हो चला था और मनुष्यो के सम्बन्ध मे उसका ज्ञान बहुत बढा-चढा था। वह जब मेरे पास आया तो उसके मुख के भाव से मुझे ऐसा जान पडा कि वह विशेष रूप से चिन्तित है। इधर-उधर की बाते करने के बाद सहसा उसने कहा—"एटार्नी-जनरल साहब! यदि म्वारो को प्राणदण्ड दिया गया तो यह समझ लीजिएगा कि आप लोग एक निरपराध व्यक्ति की मृत्यु के लिए उत्तरदायी होगे।"

जब वह चला गया, तो उसकी बात का मुझपर बडा गहरा प्रभाव पडा। उसने बडी गम्भीरता और आत्म-विश्वास के साथ उक्त बात कही थी, इसलिए उसकी अवज्ञा करना मेरे लिए असम्भव हो गया।

मेरे पिता उस समय पेरिस मे एक अत्यन्त प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त थे, और सम्राट् तक उनकी पहुँच थी। पादडी के चले जाने के एक घण्टे बाद मैं पेरिस के लिए रवाना हो गया। मेरे पिता के उद्योग से यह सम्भव हो गया कि सम्राट् ने मुझे इस सम्बन्ध मे बुला भेजा।

जब मैं मिलने गया, तो सम्राट् नेपोलियन उस समय एक छोटे-से

कमरे म काम कर रहा था। मैंने सारा मामला विस्तृत रूप से उसके आगे उद्घाटित कर दिया, और साथ ही पादडी की सम्मति का उल्लेख भी कर दिया। सहसा सम्राट् की कुर्सी के पीछे का दरवाजा खुला और सम्राज्ञी ने भीतर प्रवेश किया। सम्राट् ने अपनी पत्नी से इस विषय में परामर्श किया। सब बातें सुनने के बाद सम्राज्ञी ने कहा—"इस व्यक्ति को अवश्य क्षमा कर दिया जाना चाहिए। मुझे तो वह एकदम निर्दोष जान पडता है।"

न जाने क्यो, सम्राज्ञी के इस विश्वास ने मुझे सहसा सन्देह के चक्कर मे डाल दिया। उस समय तक मैं सच्चे हृदय से चाहता था कि प्राणदण्ड हटा दिया जाय। पर अब मुझे ऐसा जान पडा कि मैं एक ऐसे भयकर दुष्कर्मी के कूटचक्र का पुतला बना हूँ, जिसने पादडी के आगे अपना सारा दोष स्वीकार करके उससे क्षमा के लिए सहायता का वचन प्राप्त किया है।

मै द्विविधा मे पड गया। सम्राट् ने भी अपनी कोई निश्चित सम्मति देने मे असमर्थता प्रकट की। पर सम्राज्ञी को इस बात पर विश्वास हो गया कि पादडी ने एक दैवी प्रेरणा से प्रेरित होकर म्वारो को निर्दोष बताया है, इसलिए उसी की बात सत्य होनी चाहिए। उसने कहा—"एक निरपराध व्यक्ति की हत्या की अपेक्षा एक दोषी की मुक्ति भी अच्छी है। इसलिए अध्यापक को क्षमा कर देने मे ही भलाई है।"

सम्राट् को उसकी बात जँच गई। फल यह हुआ कि प्राणदण्ड हटा दिय गया, और उसके बदले कडी कैद की आज्ञा घोषित कर दी गई।

कुछ वर्ष बाद मैंने सुना कि तूंलो के जेलखाने में म्वारो के आदर्श व्यवहार की सूचना जब सम्राट् को मिली तो उसने म्वारो को एक विशेष धर्म-सस्था का सञ्चालक नियुक्त करवा दिया। इसके बाद उसके सम्बन्ध में बहुत दिनो तक कोई बात नही सुनी।

प्राय दो वर्ष बाद जब मैं अपने चचेरे भाई के यहाँ ग्रीष्मकाल के अवसर पर गया हुआ था, तो एक दिन एक युवा पादडी मेरे पास आया, और उसने मुझसे एक मरणासन्न व्यक्ति के पास जाकर उससे मिलने के लिए अनुरोध किया। उसने कहा—"वह व्यक्ति आपसे मिलने के लिए बहुत आतुर है।"

मै उस पादडी के साथ हो लिया। एक अत्यन्त साधारण मकान मे वह मुझे ले गया। वहाँ मैंने पुआल के एक गट्ठर के ऊपर एक व्यक्ति को अपनी अन्तिम घडियाँ गिनते हुए देखा। वह एक बीभत्स ककाल के समान दिखाई देता था, और उसकी आँखे एक अस्वाभाविक तीव्रता से चमक रही थी।

मुझे देखकर उस व्यक्ति ने पूछा—"क्या आप नही पहचान रहे है?"

मैंने कहा—"नही।"

"मैं म्वारो हूँ।"

मै सिहर उठा। मैंने पूछा—"आप ही क्या वह व्यक्ति हैं जिसे पहले प्राणदण्ड की आज्ञा हुई थी, पर बाद मे कडी कैद की सज़ा दी गई थी?"

"जी हाँ।"

"तो आप यहाँ कैसे आ गये?"

"यह एक बडी लम्बी कहानी है, जिसे सुनाने का अवकाश मुझे नही है, क्योकि मैं मर रहा हूँ। मैंने आज आपको इसलिए बुलाया है कि आपके सामने मैं अपने एक भयकर पाप को स्वीकार करना चाहता हूँ।" यह कहकर उसने अपने पलग पर के पुआल को दृढता से जकड-कर पकड लिया।

इसके बाद उसने कहना आरम्भ किया—"मैंने ही बच्चो को मिठाइयाँ

खिलाकर उन्हे मार डाला था––यह नृशस कार्य मैंने प्रतिहिंसा से प्रेरित होकर किया। आपको मालूम होना चाहिए, पहले मै ईश्वर का बड़ा भक्त था, और बडी श्रद्धा और प्रेम से उसे भजता था। बाद मे जब मेरा विवाह हो गया, तो मेरे कुछ बच्चे उत्पन्न हो गये। मै अपने बच्चो को इतना अधिक चाहता था कि शायद ही कोई मा-बाप इस हद तक अपनी सन्तान से प्रेम करते हो। मै केवल उन्ही के लिए जीता हूँ––मुझे ऐसा अनुभव होता था। मै मानता हूँ कि यह मूर्खता है। कुछ भी हो, मेरे तीन बच्चो की मृत्यु हो गई। क्यो ? मैने किसका क्या बिगाड़ा था ? क्यो मझ पर यह दैवी कोप, यह वज्रपात हुआ ? तब से मेरे हृदय मे एक भयकर विद्रोह मनुष्य के और ईश्वर के प्रति उत्पन्न हो गया । मुझे पूरा विश्वास हो गया कि ईश्वर बड़ा अत्याचारी और अन्यायी है, वह जान-बूझकर मनुष्यो को असहनीय कष्ट पहुँचाना चाहता है और उसका ध्येय केवल मनुष्यो का विनाश और सहार करने का है। वह अपने विनोद के लिए मनुष्यो की हत्या करता है। बिना स निष्ठुर कर्म के वह रह नही सकता। इसलिए उसने अपने इस बीभत्स उद्देश्य की पूर्ति के लिए विभिन्न रोगो की सृष्टि की है। जब वह साधारण रोगो से होनेवाली मृत्यु के दृश्यो से उकता जाता है, तो अधिक उल्लास और उत्तेजना की आकाक्षा से वह प्लेग, हैजा, चेचक आदि महामारियो की सहायता से अपना जी बहलाता है। इतना ही नही, ईश्वर नामधारी यह शैतान केवल रोगो के नाशकारी बीज पृथ्वी में फैलाकर ही सतुष्ट नही है। समय-समय पर वह महायुद्धो की आग राष्ट्रो मे भडकाता रहता है, और सहस्रो सिपाहियों को एक ही बार में हताहत देखकर एक विचित्र पाशविक सुख का अनुभव करता है।

"अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने जगली मनुष्यो को अपने

स्वजातियो का मास खाने के लिए प्रेरित किया है। और जब सभ्यता और सस्कृति की सहायता से मनुष्य उससे भी उन्नत बन जाते है, तब वह मनुष्यो के हाथ से मृगो और पक्षियो को मरवाता है और इस प्रकार अपने विश्वव्यापी हत्याकाड की चक्रवृद्धि करता है। उसने असख्य ऐसे प्राणियो की सृष्टि की है, जो केवल एक दिन तक जीने के बाद मर जाते हैं। ये सब पशु-पक्षी, कीट-पतग एक-दूसरे का विनाश करके उसके सुख को बढाते है। वह दुष्ट (जिसे आप लोग ईश्वर कहते है) अदृश्य कीटाणुओ से लेकर विराट् ग्रह-नक्षत्रो की सृष्टि केवल उनके विनाश द्वारा अपने विकृत मन को आनन्द प्रदान करने के लिए करता है। इसलिए मैने उसके इस नारकीय उद्देश्य की पूर्ति मे हाथ बँटाने के लिए ही छोटे-छोटे स्कूली बच्चो की हत्या की है। मै और भी बहुत-से बच्चो की हत्या करता, पर आप लोगो ने मुझे बीच ही मे पकड लिया।

"मुझे प्राणदड दिये जाने का निश्चय किया गया। आप लोगो का वह ईश्वर निश्चय ही इस बात में प्रसन्न होकर अत्यन्त निष्ठुरतापूर्वक हँसा होगा! काला साँप है वह! मैने एक पुरोहित को बुलाकर उसके आगे अपना अपराध स्वीकार करके, और उस गुण्डे ईश्वर से क्षमा माँगने का ढोग रचकर प्राणदड से छुटकारा पाया। पर अब उसने दूसरे उपाय से मुझे मार डालने का निश्चय किया है। जिस घातक रोग से मै पीडित हूँ, उससे अब किसी उपाय से भी मै छुटकारा नही पा सकता। पर मै उस नरघाती, ईश्वर नामधारी दानव से नही डरता, क्योकि मै उसकी नस-नस पहचान गया हूँ।

मैने उस भयकर दुष्कर्मी के मुँह से, जिसकी मृत्यु सन्निकट थी, जब इस प्रकार की विभीषिका से भरी बाते सुनी, तो मै आतक से सिहर

उठा। कुछ देर बाद अपने को कुछ सँभालकर मैंने पूछा—"आपको कुछ और तो नही कहना है ?"

"जी नही।"

"अच्छा, तो मै जाता हूँ।" यह कहकर मैं जाने लगा। जाते हुए मैंने पुरोहित से पूछा—"क्या आप अभी रहेगे !"

उसने उत्तर दिया—"मुझे रहना ही होगा।"

म्वारो व्यग की एक सूखी हँसी हँसकर खाँसते हुए बोला—"हाँ, उन्हे रहना ही होगा, क्योकि वे मृत शरीरो का चीलो और कौवो का भोज्य बनाने मे सुख पाते है ।"

ऐसे नास्तिक की बाते सुनना भी मैंने अपमानजनक समझा और मैं चुपचाप बाहर चला गया।

सिमों का पिता

दोपहर के समय भोजन की घटी बजी और स्कूल के सब छोकरे एक-दूसरे पर गिरते-पडते बडी हडबडी के साथ बाहर निकले। पर आज प्रतिदिन की तरह अपने-अपने घरो को भोजन के लिए जाने की उतावली उनमें नही दिखाई देती थी। वे लोग स्कूल मे कुछ दूर हटकर, छोटी-छोटी टोलियों में एकत्रित होकर आपस मे कानाफूसी करने लगे।

बात यह थी, आज प्रात.काल ला ब्लाशोत का लडका सिमों पहली बार स्कूल मे भरती हुआ था। सब लड़को ने अपने-अपने घरो मे ला ब्लाशोत की चर्चा सुन रक्खी थी। उसके सम्बन्ध में विशेष कुछ न जानने पर भी इतनी बात वे लोग भली-भाँति समझे बैठे थे कि स्त्रियाँ उसे घृणा और अवज्ञा की दृष्टि से देखती है। सिमो को उन लोगो ने आज पहली बार देखा था। कारण यह था कि वह कभी अपने घर से बाहर नही निकलता था, और गाँव के किसी लडके के साथ खेलने के लिए कही नही जाता था। इसलिए गाँव के दूसरे छोकरे उससे असन्तुष्ट रहते थे। आज उसके सम्बन्ध मे एक विशेष बात मालूम होने पर वे लोग बहुत प्रसन्न थे। एक चौदह वर्ष के लडके ने अपनी आँखो से एक विशेष सकेत का भाव जताने की चेष्टा करते हुए सब लडको को यह सूचित कर दिया था कि सिमो का कोई पिता नही है।

ला ब्लाशोत का लड़का जब स्कूल से बाहर निकला तब सब लड़को ने उसे घेर लिया। उसकी आयु सात-आठ वर्ष की थी। वह सुघड, सुन्दर, पर दुबला-पतला और भीरु-स्वभाव का लड़का था। वह अपनी

मा के पास वापस जाने के लिए विशेष उत्सुक हो रहा था। पर लडको ने उसे नही जाने दिया। जिस लडके ने उसके सम्बन्ध का गुप्त सवाद दूसरे छोकरो को दिया था, उसने बडी ढिठाई के साथ सिमो से पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने उत्तर दिया—"सिमो।"

"सिमो क्या? उसके आगे भी कुछ है या नही? खाली 'सिमो' भी भला कोई नाम हो सकता है!"

लडके ने घबराकर कहा—"मेरा नाम सिमो है।"

सब छोकरे हँसने लगे। बडे लड़के ने कहा—"देखा, तुम लोगो ने? मैने क्या कहा था! उसके कोई पिता नही है।"

सब छोकरे स्तब्ध रह गये। पहले वे हँसी समझे बैठे थे। पर सिमो की बात से जब यह प्रमाणित होने लगा कि सचमुच उसका कोई पिता नही है तब वे कुछ बोल ही न पाये। उन्हे यह बात अत्यन्त अप्राकृतिक और बीभत्स-सी लगी। आज तक उनकी मातायें ला ब्लाशोत के प्रति जिस घृणा तथा दया का-सा भाव दिखाया करती थी, सिमो के प्रति भी उनके मन में ठीक उसी प्रकार का भाव उत्पन्न होने लगा।

सिमो की यह दशा थी कि वह काठ के उल्लू की तरह दूसरे छोकरो की ओर ताकता रह गया। वह केवल इतना ही समझ पाया था कि उसके ऊपर कोई अज्ञात महाविपत्ति अकस्मात् आ टूटी है। एक पेड के सहारे खडे होकर वह इस भयकर अभियोग का उत्तर देने की चेष्टा करने लगा, पर कोई ठीक उत्तर उसे नही सूझता था। अन्त मे कुछ सोच-समझकर उसने कहा—"हाँ है! मेरे एक पिता है।"

जिस लडके ने उसे चुनौती दी थी, उसने पूछा—"कहाँ है वह?"

इसके उत्तर मे सिमो को चुप रह जाना पड़ा। छोकरे उसे पराजित

देखकर वडे उत्साह से किलकारियाँ भरने लगे। वे देहाती छोकरे को—अपने एक सहपाठी को, अत्यन्त मार्मिक पीडा पहुँचते देख बडे प्रसन्न हो रहे थे। सिमो ने इधर-उधर दृष्टि डालकर अपने पास खडे एक छोटे छोकरे को देखा, जिसके सम्बन्ध में वह जानता था कि वह एक विधवा का लडका है। सिमो ने उस छोकरे से कहा—"तुम्हारे भी तो कोई पिता नही है।"

वह बोला—"है तो!"

"कहाँ है?"

"वह मर गया है, और इस समय कब्रिस्तान में पडा है।" यह कहकर उसने अपने सिर को ऊँचा करके आत्म-सम्मान से पूर्ण गम्भीरता का-सा भाव दिखाया।

सब छोकरो ने उसके इस आत्म-सम्मानपूर्ण उत्तर की बडी प्रशसा की और फिर एक बार सबने विजय-सूचक किलकारियाँ भरी, क्योंकि उनके मन मे यह ध्रुव धारणा थी कि जिसका पिता कब्रिस्तान में पडा है वह उस घृणित छोकरे को कुचल सकता है जिसके कोई पिता ही नही है। उन सब दुष्ट छोकरो के पिता यद्यपि चोर, गुण्डे, शराबी और लफगे थे, तथापि वे उस लडके को एक तुच्छ कीडे की तरह मसल डालना अपना कर्त्तव्य समझते थे, जो समाज से बहिष्कृत था।

जो लडका सिमो की बगल में खडा था, वह अपनी जीभ बाहर निकालकर उसे खिझाते हुए बोला—"छी-छी! बेबाप का लडका!"

सिमो आपे से बाहर होकर उसके झोटे पकड़कर उसे लातो और घूँसो से मारने लगा। पर दूसरे छोकरे उस पर टूट पडे और सबने मिलकर उसका कचूमर निकाल डाला। जब वह परास्त होकर धूल झाडते हुए उठा, तब एक ने मार्मिक व्यग्य कसते हुए कहा—"जाओ, अपने बाप के पास जाकर शिकायत करो!"

सिमो को ऐसा जान पडा जैसे लज्जा और अपमान के कारण उसका दम घुटा चाहता है। वह बरबस अपने आँसुओ को पी जाने की चेष्टा कर रहा था। पर कुछ ही क्षण बाद बाँध टूट पडा और वह सिसक-सिसककर रोने लगा। उसकी यह करुण दशा देखकर दूसरे छोकरे एक पाशविक उल्लास से उन्मत्त हो उठे, और उसे चारो ओर से घेरकर नाचते हुए, तालियाँ पीटते हुए, एक विशेष धुन मे कहने लगे—"बाप नही है! बाप नही है!"

अकस्मात् सिमो का सिसकना बन्द हो गया। उसके सिर पर जैसे एक भूत सवार हो गया। उसके पाँवो के नीचे कुछ पत्थर पडे हुए थे, उन्हे उठा-उठाकर वह पूरी शक्ति से अपने प्रतिपक्षियो पर बरसाने लगा। दो-तीन छोकरे उनसे बुरी तरह आहत होकर चिल्लाते हुए भागे। उसकी मुखाकृति उस समय ऐसी भीषण दिखाई देती थी कि शेप लडके भी आतंकित होकर दुम दबाकर भागे।

जब सिमो अकेला रह गया तब उसके मन में एक ऐसी अज्ञात प्रतिक्रिया होने लगी कि उसे अपना जीवन भार मालूम होने लगा। वह खेतो से होकर दौडता हुआ नदी की ओर चला। उस पितृहीन छोकरे ने अपमान की ग्लानि से मुक्ति पाने के उद्देश्य से नदी में कूदकर डूब मरने का निश्चय किया।

उसे स्मरण हो आया कि आठ दिन पहले एक भिखारी अपनी घोर दरिद्रता से तग आकर नदी में डूब मरा था। सिमो ने उसकी लाश देखी थी। उसने किसी व्यक्ति को यह कहते सुना था कि "मरकर वह जीवन के कष्टो मे छुटकारा पा गया है, और अब बहुत प्रसन्न है।" सिमो के मन में उस समय इस बात का कोई प्रभाव नही पडा था, पर आज उसे पूरा विश्वास हो गया कि जिसके कोई पिता नही है, वह मर कर वैसा ही प्रसन्न होगा जैसा वह भिखारी।

मौसम बड़ा सुहावना था। जब सिमो नदी के किनारे पहुँचा तब बड़े ध्यान से उसके बहते हुए पानी को देखने लगा। कुछ मछलियाँ उसके स्वच्छ जल मे ऊपर आती हुई दिखाई देती थी और उछलकर ऊपर उड़ती हुई मक्खियो को पकड़ने की चेष्टा कर रही थी। सिमो को यह दृश्य बड़ा कौतुकपूर्ण लग रहा था। पर बीच-बीच मे शूल की-सी वेदना की तरह यह विचार अत्यन्त तीव्रता से उसके मन पर उदित होता था—"मुझे पानी में डूब मरना है, क्योंकि मेरे कोई पिता नही है।"

दोपहर की धूप ऐसी मीठी लगती थी कि बहुत देर तक रोते रहने की थकावट के बाद सिमो को वही घास पर लेटकर सो जाने की इच्छा हो रही थी। एक छोटा-सा मेढक उसके पाँवो के पास से उछलकर चला गया। उसने उसे पकड़ने की चेष्टा की, पर वह भाग निकला। सिमो ने तीन बार उसका पीछा किया, पर एक बार भी सफल न हो सका। अन्त मे उसने उसकी एक पिछली टाँग पकड़ ली, और जब वह निकल भागने की चेष्टा करने लगा, तो सिमो को हँसी आने लगी। वास्तव में वह मेढक एक नट की तरह कुछ विचित्र कलाओ का उपयोग करके उसके हाथ से फिसलने का प्रयत्न कर रहा था। अन्त मे अपनी करुण दशा का स्मरण करके सिमो को उस छोटे से जीव पर दया आ गई, और उसने उसे छोड़ दिया। इसके बाद उसे अपने घर और अपनी माँ की याद आई, और वह फफक-फफककर रोने लगा। अकस्मात् दोनो घुटने टेककर वह ईश-प्रार्थना करने लगा। पर उस प्रार्थना को वह समाप्त न कर सका, क्योंकि भयकर सिसकियो के झटके उसे बाधा पहुँचा रहे थे। अन्त में वह अपने क्रन्दन में ऐसा तल्लीन हो गया कि वह यह भी भूल गया कि वह क्यो रो रहा है?

अकस्मात् पीछे से किसी का भारी हाथ उसके कन्धे पर पड़ा और

किसी को कर्कश कण्ठ से कहते सुना—"तुम्हे क्या हो गया? तुम रोते क्यो हो?"

सिमो ने लौटकर देखा एक लम्बे कद का कर्मकार, जिसकी दाढ़ी काली और सिर के बाल घुँघराले थे, उसकी ओर बडी सहृदयता के साथ देख रहा है।

उसने रुँधे हुए गले से कहा—"सब लडको ने मिलकर आज मुझे इसलिए पीटा है कि मेरे कोई.. कोई. पिता नही है।"

उस व्यक्ति ने मुस्कराते हुए कहा—"तुम क्या कहते हो! कोई भी ऐसा व्यक्ति नही हो सकता जो बिना पिता का हो!"

"पर मेरे. मेरे. मेरे कोई पिता नही है।"

पर कर्मकार इतनी देर मे यह जान गया था कि वह ला ब्लाशोत का लडका है। यद्यपि उस गाँव में आये उसे अधिक समय नही हुआ था, तथापि ला ब्लाशोत के जीवन के इतिहास से वह थोडा-बहुत परिचित था। उसने गम्भीरता के साथ कहा—"कुछ परवा नही, तुम्हे धैर्य रखना चाहिए। चलो, मेरे साथ अपनी मा के पास चलो। वहाँ तुम्हे अपने पिता का पता लग जायगा।"

सिमो को लेकर वह एक स्वच्छ, सुघर सफेद मकान मे पहुँचा। सिमो ने पुकारा—"अम्मा!"

एक लम्बे कद की शान्त स्वभाव और गम्भीर प्रकृति की स्त्री बाहर आई। उसके मुख के पीले रग से एक तरुण तापसी का-सा भाव झलकता था। कर्मकार ने ला ब्लाशोत के सम्बन्ध में जिस प्रकार की बात सोच रक्खी थी, उसका व्यक्तित्व देखकर उसकी वह धारणा एकदम खण्डित ो गई। उसने देखा कि एक प्रेमी से धोखा खा जाने के बाद यह रहस्यमयी नारी अब मूलत बदल गई है, और उसके साथ अब

किसी प्रकार का ओछेपन का व्यवहार नही चल सकता। वह बडे सम्भ्रम के साथ हकलाते हुए बोला—"आपका यह लडका नदी के किनारे भटक रहा था, इसलिए मै इसे अपने साथ ले आया हूँ।"

पर सिमो दोनो हाथो से अपनी स्नेहमयी माता को जकडकर रोने के स्वर मे कह उठा—"नही अम्मा! मै नदी मे डूबने गया था, क्योकि लडको ने मुझे पीटा, क्योकि मेरे कोई पिता नही है।"

उस स्त्री के सुन्दर पीले गाल एक मार्मिक लज्जा के कारण जलते हुए अगारे की तरह लाल हो आये। उसने उत्कट दुलार से बच्चे को छाती से लगाया। उसकी आँखो से मुक्तधारा मे आँसू बह रहे थे। कर्मकार चुपचाप खडा यह सब दृश्य देख रहा था। सहसा सिमो दौडकर उसके पास गया और बोला—"क्या तुम मेरे पिता बनना स्वीकार करोगे?"

एक स्तब्ध नीरवता ने तीनो व्यक्तियो को घेर लिया। ला ब्लाशोत निदारुण लज्जा से गडी जाती थी। अपने वक्षस्थल पर अपने दोनो हाथ रखकर वह झुककर दीवार के सहारे खडी हो गई। छोकरे ने जब अपने प्रश्न का कोई उत्तर न पाया तब फिर कहा—"यदि तुम स्वीकार न करोगे तो मै फिर डूबने चला जाऊँगा।"

कर्मकार ने लडके की इस बात को परिहास के रूप मे ग्रहण किया और स्वय भी हँसी मे बोला—"क्यो नही, मै ऐसा ही चाहता हूँ।"

पर सिमो के लिए इस बात का बडा महत्त्व था। उसने बडी गम्भीरता के साथ पूछा—"तब अपना नाम बताओ। जब लडके पूछेगे, तो मै उन्हे तुम्हारा नाम बता दूँगा।"

कर्मकार बोला—"मेरा नाम फिलिप है।"

सिमो ने उस नाम को अपनी स्मृति मे अच्छी तरह अकित कर लिया,

और फिर अत्यन्त सन्तोषपूर्वक उसने अपने दोनो बाहो को फैलाकर उसके प्रति अपना प्रेम प्रकट करते हुए कहा—"अच्छी बात है। फिलिप, अब आज से तुम मेरे पिता हुए।"

कर्मकार ने उसे एक बार ऊपर उठाकर बड़े स्नेह से उसका मुँह चूमा और इसके बाद वह चुपचाप वहाँ से चल दिया।

दूसरे दिन जब लडको ने सिमो को स्कूल मे देखा, तो वे विद्वेष की हँसी से उसे तिरस्कृत करने लगे। सिमो ने उत्तेजित होकर पत्थरो की ही तरह इन शब्दो की बौछार उन पर कर दी—"उसका .मेरे पिता का... नाम फिलिप है, फिलिप !"

चारो ओर से लडके व्यग्य भरी किलकारियो के बाणो से उसे बेधने लगे।—"कौन फिलिप ? उस फिलिप का कोई उपनाम भी है ? वह फिलिप आकाश के किस कोने से टपक पडा ? कहाँ का रहनेवाला है यह फिलिप ?"—इत्यादि-इत्यादि।

सिमो चुप खड़ा रहा; केवल आत्म-विश्वास के साथ अपनी आँखो के कठिन भाव से उन सबके सम्मिलित आक्रमण का विरोध करने लगा। उसने निश्चय कर लिया कि चाहे वह मार खा जाय, पर भगेगा नही। अन्त में स्कूलमास्टर ने आकर उसे उन दुष्टो के पंजो से छुड़ाया।

फिलिप तीन मास तक ला ब्लांशोत के मकान के पास होकर बराबर आता-जाता रहा। कभी-कभी वह साहस करके उसके निकट जाकर बाहर से ही दो-चार बाते भी उससे कर लेता। वह सब समय खिड़की के पास बैठकर कोई न कोई कपडा हाथ में लेकर उसे सीती रहती। फिलिप की बातो का उत्तर वह बड़ी गम्भीरता के साथ शान्त, शिष्ट और सयतभाव से देती थी। वह कभी उसके साथ परिहास या रस-रग की कोई बात न करती थी। उसे वह कभी भीतर प्रवेश न करने देती। फिर भी फिलिप

को ऐसा जान पड़ता कि उससे बातें करते समय ला ब्लाशोत के मुख पर सुघड़ लज्जा का एक मधुर और रंगीन आवरण पड़ जाता था, जिससे उस एकाकिनी, समाज-परित्यक्ता नारी के प्रति उसका मन बरबस खिंचने-सा लगता।

फिलिप से ला ब्लाशोत का सम्बन्ध यद्यपि किसी दृष्टिकोण से भी घनिष्ठ नहीं कहा जा सकता था, तथापि गाँववाले उन दोनों की चर्चा चलाते हुए आपस में कानाफूसी करने लगे थे। जो नारी एक बार अपनी भूल से या समाज की विश्वासघातकता के फलस्वरूप एक जारज-सन्तान को जन्म दे चुकी है, वह फिर कभी अपने चरित्र को शुद्ध रख सकती है, इस बात पर संसार विश्वास करना नहीं चाहता।

कुछ भी हो, सिमो अपने नये पिता को बहुत चाहने लगा था और जब फिलिप दिन भर काम करने के बाद संध्या को अवकाश पाता तब नित्य सिमो उसके साथ टहलने के लिए जाता था। स्कूल के दुष्ट छोकरों में वह आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास के साथ सम्मिलित होता था, और उनके विद्वेषमूलक प्रश्नों का कोई उत्तर देने की आवश्यकता नहीं समझता था।

पर एक दिन उसी लड़के ने, जिसने सबसे पहले उस पर व्यंग्यबाण कसा था, कहा—"तुम इतने दिनों तक झूठ बोलते रहे हो। फिलिप नाम का कोई व्यक्ति तुम्हारा पिता नहीं है।"

सिमो ने चकित होकर पूछा—"तुम ऐसा क्यों कहते हो?"

उसके विरोधी ने आत्म-सन्तोष के साथ दोनों हाथों को मलते हुए कहा—"क्योंकि यदि तुम्हारा कोई पिता होता तो वह तुम्हारी माँ का पति होता!"

सिमो इस तर्क की सचाई के कारण बड़े चक्कर में पड़ गया। फिर

भी वह दृढ़ता के साथ बोला—"कुछ भी हो वह मेरा पिता है। मैं केवल इतना जानता हूँ, बस।"

फिर एक बार चारो ओर से व्यग्य-भरी-किलकारियो की बौछार होने लगी। ला ब्लाशोत का असहाय लडका अपना सिर नीचा करके वहाँ गया जहाँ फिलिप अपने छोटे से कारखाने में काम करता था।

कारखाना चारो ओर से घने पेडो से घिरा हुआ था। उसके भीतर बहुत अन्धकार था। पर भट्ठी मे जो प्रचण्ड आग जल रही थी उसकी रक्ताभा से वह स्थान एक भयकर रूप से प्रकाशित हो रहा था। पाँच लोहार अपनी-अपनी निहाइयो पर रक्खे हुए लाल-लाल लौहखण्डो पर बहुत बडे हथौडो से गहरी चोट निरन्तर मारते जाते थे। सिमो को उन्हे देखकर ऐसा जान पडता था कि वह भूतो अथवा दैत्यो की कर्मशाला में आ गया है।

फिलिप को उसने तत्काल देख लिया और अपने हाथ से उसका एक आस्तीन पकड लिया। यह देखते ही सब लोहारो ने काम एकदम बन्द कर दिया और बड़े ध्यान से सिमो को देखने लगे। सिमो ने बिना किसी भूमिका के कहना आरम्भ किया—"फिलिप! अभी एक लडके ने मुझसे कहा है कि तुम मेरे पिता नही हो सकते? मुझे समझाओ, उसने क्यो ऐसा कहा?"

फिलिप ने पूछा—"उसने कारण क्या बताया?"

"यही कि तुम मेरी मा के पति नही हो!"

एक भी कर्मकार बच्चे की इस बात पर न हँसा। फिलिप निहाई पर रक्खे हुए अपने हथौड़े के डण्डे पर अपना माथा टेककर चुपचाप किसी गम्भीर चिन्ता मे मग्न हो गया। उसके चार साथी बड़े ध्यानपूर्वक उसकी ओर देख रहे थे। सहसा एक लोहार ने अपने सब साथियो के मन की बात को इन शब्दो में प्रकट किया—"कुछ भी हो, ला ब्लाशोत बडी सभ्य,

शिष्ट और सहृदय लड़की है। भाग्य के दोष से वह एक बार कलकित अवश्य हो चुकी है, फिर भी उसका स्वभाव बड़ा गम्भीर और सयत है। वह किसी भी भले आदमी की स्त्री बनने योग्य है।"

उसके तीनो साथियो ने कहा—"सच है।"

पहला व्यक्ति कहता चला गया—"जिस कलक के कारण वह निन्दनीय समझी जाती है, उसमे उसका क्या दोष है? जिस व्यक्ति ने उसे फुसलाकर बाद मे त्याग दिया, उसने सम्बन्ध जुड़ जाने के पहले उसे विवाह का वचन दिया था। वह निर्दोष है, और सचमुच उसका चरित्र प्रशसा के योग्य है।"

तीनो साथियो ने एक स्वर मे कहा—"सच है।"

पहला व्यक्ति कहता गया—"यह असहाय स्त्री अपने लड़के को किस प्रकार पाल-पोसकर बड़ा कर रही है, कैसे-कैसे कष्टो को सहन करके उसे स्कूल में पढाने का खर्चा जुटा रही है, समाज से अलग कर दिये जाने के कारण दिन-रात कितना रोती रहती है, यह भगवान् ही जानते है!"

उसके साथियो ने कहा—"बिलकुल सच है।"

इसके बाद कुछ समय तक सब लोग चुप रहे। भट्ठी की आँच को तेज करनेवाली धौंकनी के शब्द के अतिरिक्त और कोई दूसरा शब्द नही सुनाई देता था। अकस्मात् फिलिप सिमो की ओर झुककर बोला—"जाओ और अपनी मा से कहो कि आज सध्या को मै उससे मिलने आऊँगा और कुछ आवश्यक बात करूँगा।"

यह कहकर उसने सिमो को बाहर पहुँचा दिया। इसके बाद फिर अपने काम पर जुट गया। अँधेरा होने तक वह अत्यन्त परिश्रमपूर्वक लोहा पीटता रहा।

जब वह ला ब्लांशोत के मकान पर पहुँचा, तो आकाश में असख्य तारे

टिमटिमाते हुए दिखाई दे रहे थे। आज वह कुछ बन-ठनकर आया था। एक भड़कीला कोट और नई कमीज पहने था और नुकीली दाढी के बाल बडे ढग से छाँटे गये थे। जब उसने दरवाजा खटखटाया, तो ला ब्लाशोत देहरी पर आकर खडी हो गई और बडे करुण स्वर मे बोली—"इतनी रात गये मेरे यहाँ आकर आपने अनुचित किया है, मोशियो फिलिप !"

फिलिप उत्तर मे कुछ कहना चाहता था, पर उसके मन की बात मन ही में रह गई; और वह केवल अस्पष्ट शब्दो मे कुछ हकलाकर रह गया।

ला ब्लाशोत बोली—"आप अच्छी तरह समझ सकते है कि मेरे सम्बन्ध में फिर एक बार यदि किसी तरह की बात गाँव में उठ गई तो यह दोनों के लिए अच्छा न होगा।"

फिलिप का साहस अकस्मात् बढ गया। उसने कहा—"यदि तुम मेरी स्त्री बन जाओ तो इस तरह की बातो की हमें फिर क्या परवा !"

ला ब्लांशोत निःशब्द थी। उस तारामयी रात्रि मे झिल्लियो की झनकार के सिवा और कोई शब्द कही नही सुनाई देता था। सहसा ला ब्लाशोत ने सलज्ज धीरता से फिलिप का हाथ पकडा। दोनो भीतर गये। दीपक के प्रकाश मे अच्छी तरह ला ब्लाशोत की सुन्दर, सलज्ज और सस्मित आँखो का भाव देखकर फिलिप समझ गया कि उसने विवाह के प्रस्ताव से अपने को कृतज्ञ समझा है।

सिमो बिस्तर में लेट गया था, पर अभी सोया नही था। उसने फिलिप के बोलने का शब्द सुन लिया था। वह बडी उत्सुकता से किसी अज्ञात किन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात की प्रतीक्षा में था। अकस्मात् फिलिप ने उसके कमरे में जाकर अपनी दो बलिष्ठ भुजाओ को आगे बढ़ाकर उसे पलंग से ऊपर उठा लिया और उल्लास के स्वर में कहा—

"कल तुम अपने स्कूल के साथियों से कह देना कि तुम्हारे पिता का नाम फिलिप रेमी है, और साथ ही उन्हे यह चेतावनी भी दे देना कि जो तुम्हे तंग करेगा, प्रसिद्ध लोहार फिलिप रेमी—तुम्हारा पिता—उसके कान ऐंठेगा।"

दूसरे दिन जब सब लडके स्कूल मे आकर इकट्ठा हो गये थे और पढाई प्रारम्भ होने जा रही थी तब सिमो ने स्पष्ट और ऊँचे स्वर में घोषित करते हुए कहा—"मेरा पिता प्रसिद्ध लोहार फिलिप रेमी है और उसने कहा है जो आज से मुझे तग करेगा उसके कान वह अच्छी तरह ऐंठ देगा।"

इस बार किसी लडके ने उसकी बात पर हँसने का साहस न किया; क्योकि फिलिप रेमी वास्तव में गाँव भर मे शारीरिक बल के लिए प्रसिद्ध था और अपने स्वभाव-चरित्र के कारण भी गाँववालो पर उसकी धाक जमी हुई थी। ऐसा व्यक्ति जिसका पिता हो; वह वास्तव मे गर्व करने का अधिकारी है, यह सोचकर सब लडके चुप हो रहे।

हत्यारे की आत्मकथा

बादो लेरेमास की अन्तिम क्रिया के अवसर पर जो लोग उपस्थित थे, उन सबने उसके सम्बन्ध में एक स्वर से यह सम्मति प्रकट की कि वह एक सच्चा और सहृदय व्यक्ति था।

इसमें संदेह नहीं कि वह प्रत्येक कार्य को नियमित और सुचारु रूप से निभाया करता था और अपनी प्रत्येक बात में, प्रत्येक व्यवहार में अपने उद्देश्य की सचाई प्रमाणित करने के लिए तत्पर रहता था। उसके प्रत्येक कथन में एक दृष्टान्त रहता था। जब कभी किसी भिखारी को दान देता तो उसके साथ उपदेश देना न भूलता। जब किसी का अभिवादन करता तो उसे आशीर्वाद देने का-सा भाव प्रदर्शित करता।

अपने पीछे वह एक लडका और एक लडकी छोड गया था। लडका किसी ऊँचे पद पर नौकर था और लडकी प्वारेल-द-ला-वूल्त नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से ब्याही गई थी। पिता की मृत्यु से दोनो भाई-बहन बहुत दुखित थे।

अन्तिम संस्कार के बाद जब वे लोग घर पहुँचे तो तीनो व्यक्तियों—लडका, लडकी और जमाई—ने मिलकर वसीयतनामे की मुहर खोली। यह शर्त थी कि केवल वे ही तीन व्यक्ति उस वसीयतनामे को खोलकर पढने के अधिकारी होगे और जब तक मृतक का शरीर कब्र में गाड न दिया जाय तब तक उसे पढने का निषेध था।

प्वारेल-द-ला-वूल्त आँखो में चश्मा चढाकर वसीयतनामे को पढने लगा। दोनो भाई-बहन अत्यन्त मनोनिवेशपूर्वक सुनने लगे। उसमे जो कुछ लिखा था वह आगे दिया जाता है :—

मेरे बच्चो! मेरे प्यारे बच्चो!! यदि मैं अपनी कब्र के उस पार से तुम लोगो के आगे अपने एक घोर दुष्कृत्य का मर्म उद्घाटन न कर पाऊँ तो मुझे मृत्यु के बाद भी कभी शान्ति नही मिलेगी। हाँ, मैंने एक दुष्कर्म, एक अत्यन्त बीभत्स, नारकीय कर्म किया है!

तब मेरी आयु प्राय छब्बीस वर्ष की थी। मै पेरिस मे वकालत करने लगा था। वहाँ मेरा सगी-साथी कोई नही था और मै अपने को एकाकी और निर्वासित-सा समझने लगा था।

इस एकाकीपन के दु सह विषाद से मुक्ति पाने के लिए मैंने एक रखेली रख ली। मै जानता हूँ कि 'रखेली' नाम से ही लोग बहुत खीझ उठते है। पर मै उस समय जिस भयकर शून्य भाव का अनुभव अपने चारो ओर करने लगा था, जिस आतककारी बिभीषिका ने भूत के समान मेरी आत्मा को घर दबाया था, वह बिना किसी मानव-प्राणी के ससर्ग के मुझे ले बैठता, यह बात मै निश्चित रूप से कह सकता हूँ। इसलिए मुझे एक तथा कथित 'प्रेमिका' की बडी आवश्यकता आ पडी।

मेरी यह 'प्रेमिका' पेरिस की उन साधारण नवयुवतियो मे से थी जो अपनी जीविका बडे कष्ट से उपार्जन कर पाती है। उसके माता-पिता प्वासी नामक स्थान मे रहते थे, और वह बीच-बीच मे उनसे मिलने जाया करती थी।

एक वर्ष तक मै उसके साथ अत्यन्त शान्तिपूर्वक रहा। मैने पहले से ही इस बात का निश्चय कर रक्खा था कि जब कभी मै विवाह के योग्य किसी तरुणी को पा जाऊँगा तभी उसे त्याग दूँगा। साथ ही मैंने यह विचार भी कर रक्खा था कि मै उसे त्यागने के बाद भी इतना रुपया उसे प्रदान कर दूँगा जितने से काफी समय तक वह अपना निर्वाह कर सकेगी। कारण यह है कि हमारे समाज के-नियमानुसार किसी निर्धन स्त्री का प्रेम

रुपयो से खरीदा जाना चाहिए और धनी स्त्री का प्रेम मूल्यवान् गहनो से ।

पर एक दिन अकस्मात् उसने मेरे पास आकर यह सूचित किया कि वह गर्भवती हो गई है। मेरे सिर पर जैसे गाज गिरी ! भावी जीवन के सम्बन्ध में सुख और उन्नति की जो आशाएँ इतने दिनो तक मुझे घेरे थी, उन पर जैसे पानी फिर गया ! मैं सोचने लगा कि मुझे मृत्यु-पर्यन्त अब इस साधारण नारी के साथ एक बच्चे के रूप मे उत्पन्न होनेवाली कठोर वज्र-शृंखला से बँधकर बिना किसी सुख के, बिना किसी सन्तोष के, घसिटते चले जाना होगा। अपनी इस भयकर मूर्खता पर मुझे आश्चर्य हो रहा था कि उस उत्तरदायित्व की सम्भावना के सम्बन्ध मे मैने पहले क्यो नही सोचा ! मेरे जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर देने के लिए यह बच्चा विश्व के किस अज्ञात कोने से मेरे निकट अत्यन्त शीघ्र गति से चला आ रहा है ? क्या पैदा होने के पहले ही किसी उपाय से उसकी मृत्यु नही हो सकती ? यदि कोई दुर्घटना उसे गर्भ मे ही समाप्त कर डालती तो मेरा उद्धार हो जाता। इसी प्रकार के विचार मेरे मन को उत्पीड़ित करने लगे।

अपनी रखेली के प्रति मेरे मन मे किसी प्रकार के विद्वेष का भाव उत्पन्न नही हो रहा था, पर उसके गर्भ-स्थित शिशु के समूल विनाश की कल्पना रह-रहकर मुझे उत्तेजित कर रही थी।

अन्त मे अनिवार्य होकर ही रहा; अर्थात् मेरी रखेली ने एक बच्चे को जन्म दिया। अविवाहित व्यक्तियो के बीच मे मुझे एक रखेली और उसके बच्चे को लेकर गृहस्थियो का-सा-जीवन बिताने को बाध्य होना पड़ा। इस बच्चे के प्रति मेरे मन मे तनिक भी ममता उत्पन्न न हो पाती थी। मेरे भीतर एक भयकर अशान्ति उथल-पुथल मचा रही थी।

एक वर्ष बीत गया। मै उस बच्चे के अस्तित्व को भूलने के लिए,

उसके रोने के शब्द से मुक्ति पाने के लिए सब समय घर से बाहर ही रहने की चेष्टा करता और भागा-भागा फिरता।

इसी बीच मेरा परिचय उस स्त्री से हुआ, जो बाद मे तुम्हारी माता बनी। मै उसे हृदय से चाहने लगा था और उससे विवाह करने की प्रबल इच्छा मेरे मन मे जाग पडी। मैंने उससे प्रस्ताव किया और वह सम्मत हो गई।

अब मेरे भीतर द्वन्द्व मचने लगा। मैंने सोचा कि जिस नव परिचिता युवती नारी के प्रति मेरे मन में सच्चा प्रेम उत्पन्न हुआ है, उससे अपने बच्चे के सम्बन्ध मे कुछ न कहकर, उसे धोखे में डालकर विवाह कर लूँ, या सब बातें उससे स्पष्ट कह डालूँ और अपने भविष्य की सब आशाओ और आकाक्षाओ को ठुकरा दूँ ? क्योकि यह निश्चित था कि यदि किसी रखेली से मेरा एक बच्चा उत्पन्न होने की बात का पता उसके माता-पिता को लग जाता, तो वे कदापि मेरे साथ अपनी लडकी का विवाह करने को तत्पर न होते।

एक महीने तक मै अपने हृदय की इस द्विविधा, असमजस और अन्तर्द्वन्द्व के नैतिक पीडन से असहनीय कष्ट पाता रहा। मेरे मन मे सहस्रो भाव उठ-उठकर विलीन हो जाते थे और एक अज्ञात भय कभी मेरी छाती को पाषाण-भार की तरह घर दबाता और कभी एक विकराल पैशाचिक हिंसा मुझे उस नन्हे-से सजीव मासपिंड को कुचल डालने के लिए उत्तेजित करती।

इसी बीच मेरी साथिनी की मा बीमार पड गई और वह अपनी मा से मिलने चली गई। बच्चे को वह मेरे ही पास छोड गई। दिसम्बर का महीना था। कडाके का जाडा पड रहा था। शीतकाल की वह कराल रात्रि अत्यन्त भयकर लगती थी। मै अपने कमरे मे भोजन

समाप्त कर चुकने के बाद बच्चे के कमरे में आया। बच्चा सो रहा था।

मैं अँगीठी के पास एक चौकी पर बैठ गया। बाहर हवा बड़े वेग से सनसनाती हुई खिडकियों के शीशो को हिला रही थी। तलवार की धार से भी तीक्ष्ण वह हिमानी हवा थी।

अकस्मात् फिर वही भाव दुर्दमनीय भूत की तरह फिर एक बार अत्यन्त प्रबल प्रकोप से मेरे सिर पर सवार हो उठा, जो एक महीने से प्रतिदिन, प्रतिपल मुझे विकल कर रहा था। मैंने बलपूर्वक उस राक्षसी भाव को अपने मस्तिष्क से, अपने हृदय से हटा देना चाहा, पर उसने जोक की तरह मेरे मन को इस प्रकार जकड लिया था कि लाख चेष्टा करने पर भी नही हटना चाहता था। मैं घबरा उठा और आतक के कारण कराह उठा। मेरे भीतर जो मनुष्य जाग्रत् था, वह नही चाहता था कि उस पैशाचिक मनोवृत्ति को कार्यरूप मे परिणत करने के लिए मै विवश हो उठूँ।

मेरे भीतर परस्पर विरोधी प्रवृत्तियो का प्रलय युद्ध चलने लगा। इसी लोमहर्षक अन्तर्द्वन्द्व के बीच उस नारी की मोहिनी मूर्ति मेरी आँखो के आगे नाच रही थी, जिसने अपने प्रेम से मुझे पागल-सा बना दिया था और जो भविष्य में तुम दोनो की मा बननेवाली थी। मैंने सोचा कि यह जो नन्हा-सा क्षीण प्राणी मेरे उस उन्मत्त प्रेम की चरितार्थता मे घोर बाधा पहुँचा रहा है, उसका अस्तित्व मिटाना ही होगा। एक सर्वग्रासी क्रोध की भैरव ज्वाला मेरे सारे शरीर को, समस्त मन को, सम्पूर्ण आत्मा को जलाने लगी। निश्चय ही उस रात मै एकदम पागल हो उठा था।

बच्चा सो रहा था। मैं चौकी से उठा और एक बार उसकी ओर दृष्टि डाली। कुछ समय तक मै उसकी ओर इस प्रकार एकटक देखता

रहा, जैसे किसी कनखजूरे या उसी तरह के किसी घृणित कीडे को देख कर सारा शरीर घृणा से जर्जरित हो जाने पर भी आँखे उस पर से नही हटना चाहती।

दुष्कर्म की एक प्रचड हिंसक मनोवृत्ति मेरे न चाहने पर भी मुझे अपना शिकार बनाने को उद्यत हो उठी। मेरा हृदय भयकर वेग से धडक रहा था। मै सोचने लगा कि किस उपाय से उस तुच्छ प्राणी की हत्या करूँ। मेरा सचेत मन इस विषय मे मेरी कोई सहायता नही कर रहा था। पर मेरे अज्ञात मन के भीतर जो भौतिक क्रिया चल रही थी, उसका वर्णन मै कैसे करूँ।

सहसा मैने बच्चे के ऊपर से ओढने की सब चीजे हटाकर उसके शरीर के कपडे भी धीरे से अलग कर दिये। बच्चे की नींद नही टूटी। इसके बाद मैने सामने की खिडकी के किवाड धीरे से खोल दिये। तलवार की धार से भी तीखी ठढी हवा का एक प्रबल झोका एक निर्दयी हत्यारे की तरह भीतर घुसा। मै हटकर अलग खडा हो गया। जो दो मोमबत्तियाँ कमरे मे जल रही थी वे बुझ गई। मै बहुत देर तक जडवत् खडा रहा। पीछे बच्चे की ओर मैने भूलकर भी न देखा। बर्फ से भी अधिक ठढी हवा के थपेडे मेरे गालो पर और माथे पर अत्यन्त निर्ममता के साथ पड रहे थे और मेरे हाथ की अँगुलियाँ अकडने लगी थी। पर मै कठपुतली की तरह बिना कुछ सोचे-समझे उसी अवस्था मे खडा रहा।

सहसा किसी के खाँसने का शब्द सुनकर मै चौका, और मेरे पाँवो से लेकर सिर तक एक सिहरन दौड गई। मेरे रोएँ खडे हो गये। हडबडाते हुए मैने खिडकी के दोनो किवाड बन्द कर दिये और इसके बाद मै बच्चे के पालने के पास गया। वह अभी तक सो रहा था। उसके शरीर पर एक वस्त्र नही था और मुँह खुला हुआ था। मैने उसके शरीर पर हाथ रक्खा

वह बर्फ से अधिक ठंडा हो गया था। मेरे हृदय मे अकस्मात् उस अज्ञान और असहाय बच्चे के प्रति दुर्निवार वेग से करुणा उमड आई। मैंने पहले की ही तरह उसका शरीर ढँक दिया और बार-बार उनका मुँह चूमा। इसके बाद हताश होकर मैं अँगीठी के पास चौकी पर बैठ गया।

मैंने क्या अनर्थ कर दिया, यह सोचकर मैं घबरा उठा। मनुष्य के भीतर प्रलय-झंझा की तरह कभी-कभी ऐसी भयकर, लोमहर्षक और हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ उसकी सारी चेतना और विवेचना को लुप्त करके क्यो ताण्डव मचाने लगती है, इस सम्बन्ध में तब से मैं जितना ही सोचता रहा हूँ, मेरी भ्रान्ति उतनी ही बढ़ती गई है।

बच्चा फिर एक बार खाँस उठा। मुझे ऐसा अनुभव हुआ, जैसे मेरे हृदय को किसी ने एक तीक्ष्ण अस्त्र से आर-पार चीर डाला हो। हे भगवान्! यदि मेरे इस पागलन के कृत्य के फलस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई तो इस घोर पाप का क्या प्रायश्चित्त मेरे लिए होगा ?

मैं उठ खडा हुआ और हाथ मे एक मोमबत्ती लेकर उसके पास जाकर मैंने झुककर बडे ध्यान से उसे देखा। उसका श्वास-प्रश्वास नियमित रूप से चल रहा था। पर उसने फिर एक बार खाँसा। उस घोर शीत मे भी मेरे कपाल के दोनो ओर से पसीना ढलने लगा था। मुझे ऐसा जान पडता था जैसे कोई तीक्ष्ण और कटीली वेदना मेरी आत्मा को कभी आग के समान जला रही है, कभी बर्फ के समान ठढा बना देती है, और कभी मेरे शरीर के चमडे और मेरी हड्डियो में असंख्य सुइयाँ चुभने की-सी सनसनी पैदा कर रही है।

रातभर मैं अपने लडके के पालने के ऊपर झुका हुआ कभी खडा रहा और कभी घुटने टेककर बैठा रहा। जब सुबह हुई तो मैंने देखा कि उसकी आँखें एकदम लाल हो आई थी, गला सूजा हुआ था और

साँस लेने मे उसे बडा कष्ट हो रहा था। जब मेरी स्त्री अपनी मा के पास से लौटकर आई तो मैंने उसी क्षण डॉक्टर को बुला भेजा। एक घटे बाद डॉक्टर आया और बोला—"रात मे क्या किसी कारण से बच्चे को सर्दी लग गई थी ?"

मै सिर से पैर तक काँप उठा और हकलाता हुआ बोला—"नही तो ! सर्दी लगने का कोई कारण नही हो सकता।" इसके बाद मैंने पूछा—"बात क्या है ? क्या अवस्था सकटजनक है ?'

डॉक्टर बोला—"अभी मै कोई सम्मति निश्चित रूप से नही दे सकता। मै सध्या को फिर आऊँगा।"

सध्या को जब वह आया तो लक्षणो से डॉक्टर को यह विश्वास हो गया कि मेरे लडके को न्यूमोनिया हो गया है। वह दिन भर बीच-बीच मे खाँसता रहा और झूमता रहा।

दस दिन तक वह स्थिति रही। मै वर्णन नही कर सकता कि इन दस दिनो के भीतर प्रतिपल मेरी आत्मा किस प्रकार निपीडित होती रही।

अन्त मे उसकी मृत्यु हो गई।

तब से सब समय मै इस एक-मात्र भावना से पीडित और त्रस्त रहा हूँ। एक क्षण के लिए भी मै अपने उस मर्मघाती कृत्य को नही भुला सका हूँ। मेरी आत्मा के भीतर उसकी स्मृति का काँटा सब समय गडा हुआ रहता है और मुझे ऐसा अनुभव होने लगता है जैसे कोई जीव मेरी आत्मा के साथ एक सुदृढ शृंखला मे बँधा हुआ दिन-रात, प्रतिपल छटपटाता रहता है।

क्वारेल-द-ला-बूल्त ने इस स्वीकारोक्ति को पढने के बाद एक कानूनदाँ की हैसियत से अत्यन्त गम्भीरता के साथ यह सम्मति प्रदान की कि उसे नष्ट कर दिया जाना चाहिए। उसकी स्त्री और साले ने अपना सिर नीचा

करके मौन भाव से यह जताया कि वे उसके प्रस्ताव से पूर्णतः सहमत हैं। वूल्त ने एक मोमवत्ती जलाई और जिस पन्ने में सम्पत्ति के बटवारे का पूरा ब्योरा दिया गया था, उसे अलग करके शेष सब पन्नो को, जो स्वीकारोक्ति से सम्बन्ध रखते थे, जला दिया गया। पन्नो के जलने के बाद भी उनमे अक्षर चमक रहे थे, इसलिए मृत व्यक्ति की लड़की ने अपने पैरो से उन्हें कुचलकर अँगीठी की राख में उसके चूरे को मिला दिया।

इसके बाद बहुत देर तक तीनो स्तब्धभाव से मौन बैठे रहे, जैसे वे यह सोचकर सशंकित हो कि कही उस राख के भीतर से छोटे-छोटे कण उड़कर उस भयंकर गुप्त सत्य को प्रकाशित न कर डालें !

छाते की कहानी

मादाम ओरेयी की मितव्ययिता कंजूसी की सीमा को पार कर जाती थी। उसे एक पैसा भी खर्च करना होता तो वह पहले अच्छी तरह सोच-विचार लेती। रुपया-पैसा कैसे जोडा जाता है इस कला में उसकी अभिज्ञता बहुत वढी-चढी थी। उसके कटु शासन से नौकर-चाकर सौदे के पैसो मे से एक भी पैसा अपने लिए नही बचा पाते थे। अपने पति को वह जेब-खर्च के लिए एक अधेला भी नही देती थी। उन लोगो की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी और कोई बाल-बच्चा न होने से कोई पारिवारिक भार भी उनके ऊपर नही था। फिर भी मादाम ओरेयी अपने और अपने पति की साधारण आवश्यकताओ की पूर्ति नही कर पाती थी। यदि वह किसी आवश्यक काम के लिए एक पैसा अधिक खर्च कर वैठती तो उसे ऐसा जान पडता जैसे उसके कलेजे का एक उतना ही बडा टुकडा कट गया, उस रात उसे नीद बडी कठिनाई से आती।

उसका पति उससे बार-बार कहता—"देखो, हम लोगों के कोई बाल-बच्चे भी नही है, इसलिए तुम्हें व्यय के विषय मे विशेष उदार होना चाहिए।"

पर वह उत्तर देती—"कौन जानता है कि कब कैसा समय आ पड़े! कुछ न रहने की अपेक्षा यह कही अच्छा है कि आवश्यकता से अधिक धन संचित किया जा सके।"

मादाम ओरेयी प्राय. चालीस वर्ष पार कर चुकी थी। फिर भी वह बडी कर्मठ स्त्री थी और सब समय बहुत व्यस्त रहती थी। उसका

स्वभाव बहुत तेज़ था। उसका पति बीच-बीच मे अपनी स्त्री की कजूसी की शिकायत करते हुए कहता कि वह उसे खाना भी भर पेट नही देती। वह युद्ध-विभाग मे एक उच्च श्रेणी का क्लर्क था। उसकी इच्छा नौकरी करने की नही थी, पर अपनी स्त्री के दबाव से उसे वहाँ जमे रहने के लिए बाध्य होना पडता था। मादाम ओरेयी उसके वेतन का अधिकाश भाग मास-प्रति-मास बचाती जाती थी।

दो वर्ष से ओरेयी एक फटे-पुराने छाते से काम चला रहा था। उसके साथ के दूसरे क्लर्क उसकी इस दुर्दशा पर बहुत हँसते थे। अन्त में एक दिन वह उनके व्यग्यबाणो से तग आ गया और उसने साहस करके अपनी पत्नी को एक नया छाता खरीदने के लिए विवश किया। मादाम ओरेयी एक बहुत ही सस्ता छाता खरीद लाई। दूसरे दिन उसका पति जब उस छाते को लेकर आफिस मे गया, तब उसके साथी फिर उसकी हँसी उडाने लगे। उन लोगो ने उस सस्ते छाते पर एक गीत रच डाला और प्रात काल से लेकर सध्या तक वे उसे गा-गाकर ओरेयी को खिझाया करते।

ओरेयी इस बात से बहुत दु खित हुआ और उसने फिर एक बार अपनी स्त्री से दृढतापूर्वक कहा कि उसके लिए एक रेशम का बढिया छाता खरीदना होगा। मादाम ओरेयी ने बार-बार विरोध किया, पर उसके पति ने एक न सुनी। विवश होकर मादाम ओरेयी प्राय बारह रुपये मूल्य का एक छाता खरीद लाई और बडे क्रोध के साथ उसे अपने पति के हाथ मे देते हुए बोली—"तुम्हे कम से कम पाँच वर्ष तक अब दूसरा छाता नही दिया जायगा।"

ओरेयी उस नये और बढिया छाते को देखकर बडा प्रसन्न हुआ। ऑफिस मे जब वह उसे लेकर पहुँचा तो उसके साथियो ने उसे बधाई

दी। सध्या को ? वह घर लौटा तो उसकी स्त्री ने उसके छाते की ओर देखते हुए कहा—"इसे इलेस्टिक फीते से बँधा हुआ मत रक्खो क्योंकि इससे रेशम का कपडा कट जायगा।"

यह कहकर उसने छाता अपने हाथ मे लिया और उसे खोलकर देखा। उसके दु ख और आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने कपडे के बीच मे एक काफी बडा छेद, प्राय. एक अठन्नी के घेरे के बराबर पाया। उसने झल्लाकर कहा—"यह तुमने क्या कर दिया!"

"क्यो, क्या हुआ?"

उत्कट क्रोध के कारण मादाम ओरेयी के गले से ठीक तरह से आवाज नही निकल पाती थी। उसने कहा—"तुम तुमने अपना छाता जला डाला है! तुम-पागल हो गये हो। क्या तुमने मेरा सर्वनाश करने का निश्चय कर लिया है?"

उसके पति ने घबराकर कहा—"मै कुछ समझा नही, बात क्या है?"

"यह देखो, तुम्हारे छाते में इतना बडा छेद हो गया है!" यह कहकर वह छाते को उसकी नाक के पास ले गई, जैसे उससे अपने पति को मारना चाहती हो।

उसके पति के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह बोला—"मै शपथ लेकर कह सकता हूँ कि इसमे मेरा कोई दोष नही है।"

"तुमने उसे खोल-खोलकर अपने साथियो को दिखाया होगा?"

"केवल एक बार मैंने उन्हे दिखाया था, बस!"

पर मादाम ओरेयी के मुँह से असह्य क्रोध के कारण फेन निकल रहा था। उसने खीझकर, चिल्लाकर, गालियाँ देकर, एक प्रलय-काड खडा कर दिया। कुछ देर बाद जब वह कुछ शान्त हुई तो पुराने छाते

से एक टुकडा कपडे का काटकर उसने नये छाते पर उसे सीकर जोड दिया। उस टुकडे का रग कुछ दूसरे ही प्रकार का था। ओरेयी दूसरे दिन सिर नीचा किये हुए बडी ग्लानि के साथ उस छाते को ऑफिस ले गया, और एक आले पर उसे रखकर उसकी बात ही एक प्रकार से भूल-सा गया।

सध्या को जब वह घर पहुँचा तो उसकी स्त्री ने उसी क्षण उसके हाथ से छाता लिया और खोलकर उसे देखा। सारा छाता छोटे-छोटे छेदो से भर गया था, जैसे किसी ने पाइप की जलती हुई राख उस पर डाल दी हो। मादाम ओरेयी को मूर्च्छा-सी आने लगी। अब किसी भी उपाय से उसकी मरम्मत नही की जा सकती थी। उसके पति ने जब वह दृश्य देखा तो वह भी स्तब्ध रह गया। मादाम ओरेयी ने क्रोध से पागल होकर छाता अपने पति के मुंह पर दे मारा और अत्यन्त कटु कठ से चिल्ला-कर बोली—"तुम बडे नीच हो, तुमने जान-बूझकर ऐसा किया। मै भी देखूँगी। अब मैं एक भी छाता नही खरीदूँगी।"

फिर एक बार प्रलय आ गया। बेचारा ओरेयी अपराधी की तरह सिर नीचा किये मौन खडा रहा। अन्त में जब उसकी स्त्री कुछ शान्त हुई तो उसने यह कहने का साहस किया कि किसी दुष्ट व्यक्ति ने विद्वेष के कारण ऐसा किया है।

इतने मे बाहर से किसी ने घटी बजाई। एक मित्र ने भीतर प्रवेश किया। उसे भोजन के लिए निमन्त्रित किया गया था। मादाम ओरेयी ने अपने दुःख का सारा हाल मित्र के आगे कह सुनाया। साथ ही उसने यह भी कहा कि वह दूसरा छाता कदापि नही खरीदेगी। इस पर मित्र ने बडी नम्रता से कहा कि ऐसा करने से उसके पति के सारे कपडे पानी से खराब हो जायँगे और उस दशा में जो हानि होगी, वह छाते की हानि से कही बढकर होगी।

इस पर मादाम ओरेयी ने कहा—"अच्छी बात है, मैं नौकरो के काम आनेवाला फटा-पुराना छाता उसे दे दूँगी। नया छाता अब उसे किसी भी दशा में नही दिया जायगा।"

इस बात पर ओरेयी बिगड खडा हुआ। उसने कहा—"ठीक है; तब मैं भी नौकरी से इस्तीफा दे दूँगा। फटा-पुराना छाता लेकर मै ऑफिस जाने को तैयार नही हूँ।"

मित्र ने छाते की मरम्मत कराने की सलाह दी। पर मादाम ओरेयी ने कहा—"साढे आठ फ्रॉ से कम उसकी मरम्मत मे खर्च नही होगे। मै इतने पैसे उस पर नष्ट नही करना चाहती।"

उन लोगो का वह मित्र मध्यम श्रेणी का एक निर्धन व्यक्ति था। उसे सहसा एक प्रेरणा हुई। वह बोला—"जिस कम्पनी मे तुमने आग का बीमा करवाया है, उससे छाते के दाम वसूल कर लो। आग से जो-जो वस्तुएँ नष्ट होती है, उनका मूल्य वह कम्पनी चुकाती है।"

यह सलाह मादाम ओरेयी को जँच गई। क्षण-भर कुछ सोचकर उसने अपने पति से कहा—"कल ऑफिस जाने के पहले तुम्हे मातर्नेल इन्श्योरेन्स कम्पनी मे जाना होगा। कम्पनी के प्रधान कर्मचारी को छाता दिखाकर उसे इसकी क्षतिपूर्ति के लिए विवश करना।"

इस प्रस्ताव से ओरेयी चौककर कुर्सी पर से उछल पडा। उसने कहा—"चाहे मेरे प्राण चले जायँ, यह काम मेरे किये न होगा। केवल अठारह फ्रा का ही तो प्रश्न है। इतनी छोटी-सी रकम नष्ट हो जाने से हम लोग उजड नही जावेंगे।"

दूसरे दिन आकाश निर्मल था। ओरेयी छाते की कुछ परवा न कर हाथ मे एक छडी लिये हुए ऑफिस को चल पडा। इधर मादाम ओरेयी जब घर पर अकेली रह गई तो छाते की बात सोचते-सोचते

उसका मस्तिष्क गरम हो उठा। वह बार-बार छाते की ओर देखकर भी किसी निश्चित परिणाम पर नही पहुँच पाई। कई बार उसने इन्श्योरेन्स कम्पनी में जाने की बात सोची, पर उसे साहस नही होता था, क्योकि वह जानती थी कि कम्पनी के कर्मचारी अद्भुत दृष्टि से देखकर उसे घबराहट मे डाल देंगे। अपरिचित व्यक्तियो के बीच मे जाना वह कभी पसन्द नही करती थी। वास्तव मे वह बडे भीरु स्वभाव की थी।

पर अठारह फ्रा की हानि की चिन्ता रह-रहकर उसके मर्म को छेद रही थी। वह बार-बार उसे भूलने की चेष्टा करती, पर बार-बार द्विगुण वेग से वह अप्रिय स्मृति उसे पीडित करने लगती। अन्त में कोई चारा न देखकर उसने इन्श्योरेन्स कम्पनी में जाने का निश्चय कर लिया।

जाने के पहले उसने यह सोचा कि छाते को और अधिक जलाकर ले चलना उचित होगा। उसने दियासलाई जलाई और उससे छाते पर अपनी हथेली के आकार के बराबर एक बडा छेद कर डाला।

इन्श्योरेन्स ऑफिस 'रू-द-रिवोली' नामक सडक मे था। मादाम ओरेयी पैदल उस ओर चली जा रही थी। ज्यो-ज्यो वह निकट आती जाती थी, त्यो-त्यो उसका उत्साह ढीला पडता जाता था। रू-द-रिवोली में पहुँचकर उसने पासवाले एक मकान का नम्बर देखा। उस नम्बर से उसने अनुमान लगाया कि अभी इन्श्योरेन्स कम्पनी अट्ठाइस मकान और आगे है। इस बीच उसे फिर एक बार अच्छी तरह सोच लेने का समय मिल जायगा, यह विचारकर वह धीरे-धीरे चलने लगी। कुछ दूर चलने पर अकस्मात् उसने एक बडा साइनबोर्ड देखा जिसमे लिखा था—"ला मातर्नेल इन्श्योरेन्स ऑफिस।" वह ठिठककर खडी हो गई। "भीतर जाऊँ या न जाऊँ ?" यह सोचकर वह कुछ देर तक द्विविधा में पडी रही। वह बहुत सकुचित और भीत हो रही थी।

अन्त मे उसने निश्चय किया कि अवश्य जाना चाहिए। उसका हृदय बडे वेग से धडक रहा था। भीतर जाकर वह एक बहुत बडे कमरे मे पहुँची जहाँ सब कर्मचारी अपने-अपने काम मे व्यस्त थे। एक व्यक्ति बहुत-से कागज लिये हुए उसके पास से होकर निकलने लगा। उसने उन्ही से पूछा—"क्षमा कीजिएगा, आपको कुछ कष्ट देना चाहती हूँ। किसी चीज के जलने की क्षति-पूर्ति कहाँ होती है।"

उत्तर मिला—"बाँई ओर के पहले दरवाज़े से होकर जाना होगा। आपके काम का विभाग वही है।"

इस उत्तर से वह और भी घबराई और एक बार उसके मन मे यह इच्छा उत्पन्न हुई कि अठारह फ्रा की मोह-माया छोडकर सीधे घर को लौट चले। पर फिर कुछ सोचकर उसका साहस बढा। ठीक रास्ते से होती हुई वह ठीक स्थान पर पहुँची। वहाँ उसने बाहर से दरवाजा खटखटाया। उत्तर मिला "भीतर चले आओ।"

वह भीतर गई, और उसने अपने को एक बहुत बडे कमरे मे पाया। वहाँ तीन व्यक्ति खडे थे जो बडी गम्भीरता से आपस मे बाते कर रहे थे। उनके पोशाक-पहनावे से जान पडता था कि वे प्रतिष्ठित पदो के अधिकारी होगे।

उनमे से एक ने पूछा—"कहिए, आप यहाँ किस काम से पधारी है?"

उसके मुँह से निश्चित रूप से एक भी शब्द नही निकलना चाहता था, फिर भी उसने हकलाते हुए कहा—"मैं मै एक एक दुर्घटना के कारण आई हूँ ··किसी ··"

उस प्रतिष्ठित व्यक्ति ने बडी शिष्टता के साथ उसे एक कुर्सी पर बैठने के लिए कहा और साथ ही यह भी कहा कि वह दो उपस्थित सज्जनो से अपनी बात समाप्त करके शीघ्र ही उसके पास लौटकर आवेगा।

इसके बाद शेष दो सज्जनो के पास जाकर वह अपनी बात का क्रम जारी रखते हुए कहने लगा—"महोदयगण ! कम्पनी आपके प्रति केवल चार लाख फ्रा के लिए दायी है, इसके अतिरिक्त आप जो एक लाख फ्रा अधिक माँगते हैं, उसके सम्बन्ध मे हम लोग किसी प्रकार का विचार करने को तैयार नही हैं।"

इस पर शेष दो मे से एक ने उत्तर दिया—"अच्छी बात है, साहब, अदालत हम लोगो के बीच निर्णय करेगी। इस समय हम अधिक कुछ नही कहना चाहते।"—यह कहकर वे नियमित रूप से अभिवादन करके विदा हुए।

मादाम ओरेयी ने जब यह वार्तालाप सुना तो उसकी भागने की इच्छा हुई। अपनी मूर्खता पर वह पछताने लगी। पर अब कोई चारा नही था, क्योकि प्रतिष्ठित कर्मचारी उसके पास आ पहुँचा था। उसने पूछा—"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

उसके मुँह से एक भी शब्द नही निकल पाता था। प्रबल प्रयत्न से किसी प्रकार अपने को सँभालकर उसने कहा—"मैं—मैं इसके लिए आई हूँ।"—उसने यह कहते हुए छाते की ओर सकेत किया।

मैनेजर ने छाते की ओर देखा और मौन आश्चर्य से वह उसकी ओर देखता रह गया। मादाम ओरेयी ने अपने काँपते हुए हाथो से छाते का फीता खोलने की चेष्टा की। बडी कठिनाइयो के बाद अन्त में वह उसे खोलने मे सफल हुई। उसने बडी शीघ्रता से छाते की दुर्दशा के चिह्न मैनेजर को दिखाये।

मैनेजर ने विनम्र तथा सकरुण परिहास के साथ कहा—"मुझे इसका स्वास्थ्य बहुत शोचनीय दिखाई दे रहा है।"

मादाम ओरेयी ने कुछ झिझक के साथ कहा—"मैंने बीस फ्रा में इसे खरीदा है।"

मैनेजर आश्चर्य का भाव जताते हुए बोला—"सच ? इतना अधिक मूल्य है इसका ?"

"जी हाँ। यह बहुत बढ़िया चीज़ थी। पर अब इसकी यह दशा हो गई है। इसी लिए मैं आपके पास आई हूँ।"

"ठीक है ! ठीक है ! पर मेरी समझ मे यह बात नही आती कि मुझसे इसका क्या सम्बन्ध है।"

मादाम ओरेयी की झिझक बढती जाती थी। फिर भी उसने साहस बटोरकर कहा—"पर· देखिए न, यह जल गया है।"

"सो तो मै देखता हूँ, पर· · "

मादाम ओरेयी को याद आया कि असली बात तो उसने अभी तक कही ही नही। उसने शीघ्रता के साथ कहा—"मै मादाम ओरेयी हूँ। आपकी कम्पनी मे हम लोगो ने आग का बीमा कराया है। इसलिए मै अपनी जली हुई चीज़ का हर्जाना माँगने आई हूँ।" जब उसने अपनी बात हडबडी मे समाप्त की तो उसका मन निश्चित रूप से यह जानता था कि उसकी माँग अस्वीकृत कर दी जायगी।

मैनेजर ने वास्तव में अपने को एक विचित्र परिस्थिति मे पाया। उसने कहा—"पर, श्रीमती जी, क्षमा कीजिएगा, हम लोग छातो का व्यवसाय नही करते। इसकी मरम्मत का भार हम लोग नही ले सकते।"

इस व्यंग्योक्ति से मादाम ओरेयी का उत्साह जाग पडा। उसकी मूल प्रकृति ने जोर मारना आरम्भ किया। उसने कहा—"मैं आपसे केवल यह चाहती हूँ कि आप मुझे इसकी मरम्मत की लागत दे दीजिए, मैं अपने आप इसे ठीक करवा लूँगी।"

मैनेजर की बुद्धि अधिकाधिक चकराने लगी थी। वह बोला—"देखिए श्रीमती जी, मैं आपको फिर समझा देना चाहता हूँ कि हम लोग ऐसी छोटी-छोटी चीजो का हर्जाना नही चुकाया करते। आप स्वयं समझ सकती हैं कि यदि हम रूमाल, मोज़े, दस्ताने, झाड़ू आदि रात-दिन के व्यवहार मे आनेवाली अत्यन्त साधारण वस्तुओ के जलने पर उन सबकी क्षतिपूर्ति का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लें तो हमारी परिस्थिति कैसी विकट हो उठेगी।"

मादाम ओरेयी इस बात से ठण्डी पडने के बदले और अधिक गरम हो उठी। उसने तनिक क्रोध का भाव दिखाते हुए कहा—"पर साहब, आप इस बात पर भी तो ध्यान दीजिए कि पिछले दिसम्बर मे हमारे मकान की एक अँगीठी से लेकर ऊपर छत तक का सारा हिस्सा जल गया, जिसके कारण प्राय पाँच सौ फ्रा की हानि हमे उठानी पडी। मेरे पति ने इसका कोई हर्जाना कम्पनी से नही माँगा। इसलिए यदि इस समय मै अपने छाते की क्षतिपूर्ति चाहती हूँ तो आपको किसी प्रकार की आपत्ति नही होनी चाहिए।"

मैनेजर बड़ा घाघ था। वह तत्काल समझ गया कि उसके पास बैठी हुई महिला निरी झूठ बात कह रही है। उसने मुस्कराकर कहा—"श्रीमती जी, यह बात वास्तव मे आश्चर्यजनक है कि आपके पति ने पाँच सौ फ्रा की हानि हो जाने पर भी कुछ हर्जाना नही चाहा और अब एक साधारण छाते की मरम्मत के लिए वे केवल पाँच या छ फ्रा की माँग पेश कर रहे हैं।"

पर इस मार्मिक व्यंग्य ने भी मादाम ओरेयी को विचलित नही किया। वह बोली—"क्षमा कीजिएगा; पर आप ठीक तरह से मेरी बात समझे नही। पाँच सौ फ्रा की जो हानि हुई वह मेरे पति को उठानी पड़ी, पर

छाता जल जाने से हानि उठानी पडी है मुझे। हम दोनो आर्थिक परिस्थितियो की भिन्नता पर विचार करे।"

मैनेजर ने देखा कि इस प्रकार की हठीली स्त्री को समझाने की चेष्टा करने से समय नष्ट होने के अतिरिक्त और किसी बात की आशा नही है, इसलिए उसने सीधे तौर पर पूछा—"क्या आप यह बतलाने की कृपा करेंगी कि आपका छाता कैसे जला?"

मैनेजर के इस प्रश्न से मादाम ओरेयी को अपनी विजय के लक्षण दिखाई दिये। उसने कहा—"अच्छा, तब सुनिए। जिस स्थान मे मैं अपना छाता रक्खा करती हूँ, उसके ऊपर एक आला है, जहाँ मैं दियासलाई और मोमबत्तियाँ रखती हूँ। वहाँ से मैंने तीन-चार दियासलाइयाँ निकालकर पहले एक को जलाना चाही, पर वह जली ही नही। इसके बाद मैंने दूसरी को जलाया, जो कुछ जली अवश्य; पर शीघ्र ही बुझ गई और तीसरी की भी यही दशा हुई।"

मैनेजर ने उसकी बात काटते हुए कहा—"शायद वे सरकारी दियासलाइयाँ रही होगी।"

पर मादाम ओरेयी उसके व्यग्य को न समझी और कहती चली गई—"बहुत सम्भव है। कुछ भी हो, चौथी दियासलाई जल उठी और उससे मैंने एक मोमबत्ती जलाई। इसके बाद मै सोने के लिए अपने कमरे मे गई। पर प्राय: पौन घटे बाद मुझे ऐसा जान पडा, जैसे कोई चीज जल रही हो। मै आग से सदा बहुत डरती हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ, जब कभी हमारे यहाँ कही आग लगे तो आप निश्चित रूप से यह मान लिया कीजिए कि उसमे मेरा कोई दोष नही हो सकता। जब से हमारी छत का एक भाग जल गया तब से इस सम्बन्ध मे मैं और अधिक चिन्तित रहती हूँ। कुछ भी हो, मैं उठी और कुत्ते की तरह चारो ओर

सूँघती हुई पता लगाने लगी कि आग कहाँ लगी है ? अन्त मे मुझे मालूम हुआ कि मेरा छाता जल रहा है। सम्भवत उस पर कोई जली हुई दियासलाई गिर पड़ी थी।"

मैनेजर ने पूछा—"आप कितना हर्जाना चाहती है ?"

उसकी समझ में नही आता था कि कितना बताना चाहिए। कुछ सोचकर वह बोली—"मै इसका निर्णय आप ही पर छोडती हूँ।"

पर मैनेजर ने साफ अस्वीकार कर दिया। उसने कहा—"नही श्रीमती जी, यह मेरा काम नही है। आप ठीक-ठीक बताइए कि आप कितने का दावा करना चाहती है।"

"मेरा अनुमान है, मै सोचती हूँ कि·· अच्छा, एक बात है। मै नही चाहती कि मै एक कौडी भी आपसे अधिक लूँ। सबसे अच्छा उपाय यह है कि मै अपना छाता दूकानदार के पास ले जाती हूँ। वह इस पर एक अच्छा रेशमी कपडा चढा देगा। वह जो बिल देगा, उसे मैं आपके पास भेज दूँगी। इस पर आपको कोई आपत्ति नही होनी चाहिए। क्यो ? ठीक है न ?"

"बिलकुल ठीक है। यह लीजिए, कैशियर के लिए यह नोट लिखकर मै आपको देता हूँ। आपका जितना भी खर्चा लगेगा उसे वह चुका देगा।"

यह कहकर उसने मादाम ओरेयी को एक पुर्जा लिखकर दिया। पुर्जा को लेकर उसे धन्यवाद देती हुई वह उठ खडी हुई। वह हडबडी मे इसलिए थी कि उसे डर था, वहाँ अधिक ठहरने से कही मैनेजर अपना विचार बदल न दे। वह तेजी से चलती हुई छाते की एक शानदार दूकान में जा पहुँची। भीतर जाकर उसने दूकान के प्रधान कर्मचारी से कहा—"इस छाते पर एक बढिया, बहुत ही बढिया, रेशमी कपडा चढा दीजिए। चाहे कितना ही दाम लगे, इसकी परवा न कीजिएगा।"

लैटिन का अध्यापक

तब मै किसी एक बडे शहर में एक अध्यापक के निकट लैटिन की शिक्षा प्राप्त कर रहा था। ये अध्यापक महाशय इन्स्टिटच्यूशन राबिनो में पढाया करते थे। यह कहा जाता था कि उनकी लैटिन-शिक्षा-प्रणाली अत्युत्तम थी और विगत दस वर्षों से इन्स्टिटच्यूशन राबिनो के छात्र सरकारी विद्यालय के छात्रो के साथ प्रतिद्वन्द्विता की परीक्षा में प्रत्येक बार बाजी मार ले जाते थे और छात्रो की इस विशेषता का मूल कारण पूर्वोक्त अध्यापक ही थे, जिनका नाम मोशियो पिकेदाँ या पेयर-पिकेदाँ था।

वे अधेड अवस्था के हो चले थे। उनके बाल पकने लग गये थे; पर फिर भी उनकी आयु का ठीक-ठीक अन्दाज लगाना बहुत कठिन था। बीस वर्ष की अवस्था मे जब उन्होने लैटिन की शिक्षा का काम ग्रहण किया था तो उस समय उनका यह विचार था कि इस उपाय से जो कुछ कमायेंगे उससे कानून के डॉक्टर की उपाधि प्राप्त करने मे उन्हें सहायता मिलेगी। पर इस चक्कर मे वे ऐसे फँसे कि फिर हटने न पाये और लैटिन के शिक्षक बनकर ही रह गये। वास्तव मे लैटिन भाषा के प्रति उनका प्रेम अत्यन्त आश्चर्यजनक था। भूत की तरह वह उन पर सवार हो गया था। दिन-रात वे लैटिन के गद्य और पद्य-साहित्य के सागर में डूबे हुए रहते। लैटिन पढने और पढाने के अतिरिक्त उनके जीवन का कोई दूसरा ध्येय नही रह गया था।

यहाँ तक कि उन्होनें अपने छात्रो को केवल विशुद्ध लैटिन में उत्तर देने को बाध्य किया और इस नियम का कभी किसी प्रकार का व्यतिक्रम

नही होने दिया। जब कोई छात्र भूल से लैटिन के बीच मे फ्रेंच भाषा का एक भी शब्द घुसेड देता तो मेज पर बेंत पटकते हुए उससे कहते—"देखो जी, मैं फ्रेंच नही सिखाता, लैटिन सिखाता हूँ।"

जब राबिनो के प्रधान अध्यापक ने देखा कि प्रतियोगिता की परीक्षाओं मे लैटिन भाषा सम्बन्धी सब पुरस्कार केवल उसी के विद्यालय के छात्रो को मिलने लगे है तो उसने अपनी सस्था के दरवाज़े पर बडे-बडे शब्दो मे विज्ञापन के रूप मे एक साइनबोर्ड पर यह लिखवा दिया—"लैटिन की शिक्षा यहाँ की विशेषता है। यहाँ के छात्रो को प्रतियोगिता के प्रथम पाँच पुरस्कार प्राप्त हुए है।"

प्राय दस वर्ष तक 'राबिनो' विद्यालय इस विषय मे बराबर अग्रणी रहा। मेरे पिता ने इस विशेषता से प्रभावित होकर मुझे लैटिन की शिक्षा के लिए वहाँ भेज दिया। मै पेयर पिकेदाँ के निकट एक प्राइवेट छात्र की हैसियत से लैटिन सीखने लगा। मै प्रतिपाठ के लिए पाँच फ्रा देता था, जिसमे से तीन फ्रा प्रधान अध्यापक महोदय की जेब में जाते थे और शेष दो पेयर पिकेदाँ को मिलते थे। उस समय मेरी आयु अठारह वर्ष की थी।

पेयर पिकेदाँ जिस छोटे-से कमरे मे मुझे पढाते थे, वहाँ से सडक का दृश्य स्पष्ट दिखाई देता था। धीरे-धीरे यह हुआ कि पेयर पिकेदाँ मुझसे लैटिन भाषा मे बातें करना छोडकर साधारण बोलचाल की फ्रेंच भाषा मे अपने दु खी जीवन की कहानी सुनाने के अभ्यस्त हो गये। उनका न अपना कोई सगा-सम्बन्धी था, न कोई मित्र। इसलिए मेरे साथ एकान्त मे सुख-दु ख की बाते करके उनके हृदय को सम्भवत कुछ सन्तोष होता था। मैं भी विशेष सहानुभूति का भाव दिखाकर उनकी बाते सुनता था। प्राय दस वर्षों से उन्होने कभी एक दिन के लिए भी किसी के साथ

हृदय खोलकर बाते नही की थी। वे कहा करते थे—"मै किसी ऊजड स्थान में एक बाँझ के वृक्ष की तरह हूँ।"

दूसरे अध्यापको से उनकी नहीं बनती थी और शहर मे जाकर किसी व्यक्ति से हेल-मेल स्थापित करने के लिए न उन्हे समय मिलता था न सुविधा; क्योकि उन्हें सब समय विद्यालय और उसके छात्रावास मे ही रहना पडता था। वे वही रहते थे, सोते थे और वहाँ रहनेवाले छात्रो की देख-रेख किया करते थे। वे मुझसे कहते—"मै चाहता हूँ, मेरे जीवन का यह स्वप्न है कि मुझे रहने के लिए एक स्वतन्त्र कमरा मिले, जहाँ मेरा निजी फर्निचर हो, निजी पुस्तके हो जिन्हे कोई दूसरा व्यक्ति छू न सके। पर इस सस्था ने मुझे इस प्रकार अपना दास बना लिया है कि मेरे पास अपना कहने को एक कमीज और फ्राक-कोट के सिवा और कुछ भी नही है। मेरा गद्दा, जिस पर मैं सोता हूँ और तकिया भी मेरा अपना नही है। इस छोटे-से कमरे मे जब मै तुम्हें लैटिन सिखाने आता हूँ तो फिर भी यहाँ कुछ स्वतन्त्रता का अनुभव करता हूँ; नही तो सारे ससार मे कही भी कोई ऐसा स्थान नही है जहाँ की चहारदीवारी के भीतर मैं अपने को एकान्त स्वाधीनता का अधिकारी समझ सकूँ। एक मनुष्य जिसे अकेले मे कुछ सोचने, समझने, स्वप्न देखने की लेशमात्र सुविधा एक क्षण के लिए भी प्राप्त न हो, उसकी क्या दशा होगी, इसकी कल्पना तुम सहज मे कर सकते हो। अपने एक निजी कमरे की चाभी जिसके पास हो, केवल वही व्यक्ति इस ससार मे सुखी है, यह बात तुम सदा ध्यान मे रखना। यहाँ दिन भर मुझे ऐसे छोकरो के साथ रहना पडता है जो सब समय ऊधम मचाते रहते है और मुझे पढने-लिखने नही देते। उनके और मेरे पढने का कमरा एक ही है। रात को उन्ही गन्दे छोकरो के बीच में मुझे सोना पडता है। सोने के लिए

भी कोई अलग कमरा मुझे नही प्राप्त है। एक क्षण के लिए अकेले रहना मेरे भाग्य मे नही बदा है। सडक मे जाता हूँ, तो वहाँ भी लोगो की भीड रहती है; और जब मै चलते-चलते थक जाता हूँ और किसी 'काफे' मे विश्राम के लिए जाता हूँ तो वहाँ भी चुरट पीनेवाले गपोडेबाज़ो और बिलियर्ड खेलनेवालो का जमघट रहता है। इसीलिए मै कहता हूँ कि सारा ससार मेरे लिए एक कारागार के समान हो गया है।"

मैने पूछा—"मोशियो पिकेदाँ! आपने और कोई दूसरा पेशा क्यो नही ग्रहण किया?"

उन्होने कुछ तेजी के साथ कहा—"तुम क्या कहते हो। मै न तो कोई मोची हूँ, न मिस्त्री, न बजाज हूँ, न नानबाई, न नाई। मै केवल लैटिन जानता हूँ। और तिस पर तुर्रा यह कि मेरे पास कोई 'डिप्लोमा' भी नही है जिसके बल पर मै अपनी लैटिन की विशेषज्ञता से लाभ उठा सकूँ। यदि मुझे 'आचार्य' की उपाधि प्राप्त हो गई होती तो अपने जिस ज्ञान को इस समय मैं सौ 'सू'* पर बेचता हूँ उसे सौ फ्रां † पर बेचता। और इस समय जितने परिश्रम से मै अपने छात्रो को पढाता हूँ, तब उसकी भी आवश्यकता न रहती, क्योकि तब मेरी उपाधि की धाक ही यथेष्ट होती।"

कभी वे मुझसे कहते—"जितना समय मुझे तुम्हारे साथ सुख-दुःख की बाते करने को मिलता है, केवल उतना ही विश्राम मुझे इस जीवन मे प्राप्त है। तुम घबराना नही, मै तुम्हे दर्जे मे दूसरे लडको से दुगनी सुविधा देकर उन सबकी अपेक्षा बडा पडित बनाकर छोडूँगा।"

एक दिन मैंने साहस करके उन्हे एक सिगरेट पीने को दी। पहले तो

---

* प्राय डेढ रुपये।

† प्राय पैसठ रुपये।

वे मेरे इस व्यवहार से भौचक्के-से रह गये, पर बाद मे उन्होने दरवाज़े की ओर सकेत करते हुए कहा—"यदि कोई आकर देख ले तो!"

मैंने कहा—"अच्छा, हम लोग खिड़की के पास खडे होकर सिगरेट पिये।"

खिडकी के पास जाकर बाहर को मुंह करके हम लोग सिगरेट पीने लगे। सिगरेट को हम लोग इस तरह पकडे रहे कि कोई व्यक्ति देखने न पाये। हम लोगो के ठीक सामने 'एक लाण्ड्री' थी। सफेद 'बाडी' पहने चार स्त्रियाँ एक तख्त पर फैलाये गये धुले कपडो पर 'इस्त्री' कर रही थी।

सहसा एक पाँचवी स्त्री भीतर से आई। उसकी बगल मे एक टोकरी थी, जिस पर बहुत-से धुले हुए कपडे रक्खे थे। हमे देखकर वह कुछ मुस्कराई और फिर धीरे-धीरे अपनी प्रत्येक गति मे एक विशेष विलास-विभ्रम झलकाती हुई चली गई। इस युवती स्त्री की आयु प्राय बीस वर्ष की होगी। वह कुछ ठिगनी, दुबली-पतली और चचल स्वभाव की थी। उसका रूप-रग सुन्दर था। उसकी आँखो के नीचे सब समय, मन्द मुसकान की रेखा स्पष्ट झलका करती थी।

पेयर पिकेदाँ ने जब उसे देखा तो उन्होने कुछ प्रभावित होकर कहा—"कपडे धोने का व्यवसाय स्त्रियो को नही सुहाता। विवशता के कारण इन बेचारियो को यह काम करना पड रहा है।" इसके बाद उन्होने साधारण श्रेणी की जनता के दुखमय कठोर जीवन के पोषण पर व्याख्यान देना प्रारम्भ कर दिया। उन्होने बडी सहृदयता और सच्ची करुणा से उच्छ्वसित होकर, रुधे हुए गले से उन लोगो की आर्त्त अवस्था का चित्रण किया।

दूसरे दिन जब हम लोग उसी खिडकी के पास ठीक उसी अवस्था

मे कुहने टेककर खडे थे तो उसी सुन्दरी धोबिन ने हमें देखकर परिहास के-से स्वर मे हम लोगो का अभिवादन किया। मैने उसकी ओर एक सिगरेट फेक दी। उसने तत्काल उसे उठा लिया और जलाकर पीने लगी। यह दृश्य देखकर शेष चार स्त्रियाँ भी हाथ फैलाती हुई हमारे दरवाज़े की ओर बढी। मैने उन्हे भी एक-एक सिगरेट दे दी।

इस प्रकार प्रतिदिन उन श्रमिक श्रेणी की स्त्रियो और बोर्डिंग-स्कूल के दो आलसी गुरु-चेले के बीच हेल-मेल बढता चला गया। पेयर पिकेदाँ का बुरा हाल था। जीवन मे कभी स्त्रियो से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध न रहने मे वे किसी भी स्त्री की निकटता मे आने से घबरा उठते थे। पर उन मजदूरिनो का मुक्त और प्रसन्न स्वभाव देखकर उनका बहुत दिनो से मुरझाया मन भी कुछ लहलहाने-सा लगा। पर साथ ही इस बात का भय उनके प्राण सुखा रहा था कि यदि प्रधान अध्यापक को उनकी इस प्रकार की दिलचस्पी का हाल मालूम हो जाय तो उन्हे नौकरी से हाथ धोना पडेगा। फिर भी वे बीच-बीच मे कुछ भीत, सकुचित, करुण और हास्यास्पद भाव से अपने हृदय में उपजी हुई सरसता का परिचय उन स्त्रियो को देने लगे।

यह सब देखकर मेरे मन मे एक दुष्ट कल्पना उदित हुई। एक दिन मैंने पेयर पिकेदाँ से धीमे स्वर मे कहा—"आपको विश्वास नही होगा, मोशियो पिकेदाँ, मुझे आज वही रँगीली धोबिन मिली थी—वही जो अपनी बगल में टोकरी दबाये थी—और उससे मेरी बातचीत हुई है।"

पेयर पिकेदाँ ने कुछ उत्सुकता के साथ पूछा—"उसने तुमसे क्या कहा?"

"उसने मुझसे कहा, क्या बताऊँ, मोशियो पिकेदाँ! बात यह है कि वह आपको चाहती है।"

मेरी बात सुनकर उनके मुख पर हवाइयाँ उडने लगी। उन्होने कहा—"वह निश्चय ही मेरा परिहास कर रही होगी। मेरी अवस्थावाले किसी पुरुष से कोई स्त्री कभी प्रेम नही करती।"

मैने गम्भीरता का भाव दिखाते हुए कहा—"वाह! आप भी क्या बात करते है! आप अभी पूर्ण युवा है और बहुत सुन्दर दिखाई देते है।"

मेरी इस चालबाजी का उन पर बडा प्रभाव पडा। पर मैंने उस समय बात को आगे नही बढाया। मै जानता था कि प्रतिदिन थोडा-थोडा करके उनके मन पर प्रेम का 'इजक्शन' देते रहना होगा तभी उसका स्थायी प्रभाव उन पर पडेगा। इस विचार से प्रेरित होकर मै नित्य झूठ-मूठ उनके चित्त मे यह विश्वास जमा देता कि मै उस धोबिन से मिला हूँ और उससे मैंने उनके सम्बन्ध में बहुत-सी बाते की है। साथ ही धोबिन की ओर से भी काल्पनिक प्रेम-सन्देश उन्हे सुना देता। फल यह हुआ कि अन्त मे पेयर पिकेदाँ को अपने प्रति धोबिन के प्रेम की बात पर पूरा विश्वास हो गया और उन्होंने भी मुक्त हृदय से अपना प्रेम-सन्देश मेरे द्वारा भेजना आरम्भ कर दिया।

एक दिन जब मैं घर से बोर्डिंगस्कूल की ओर जा रहा था तो मुझे वह रँगीली धोबिन सचमुच दिखाई पडी। मैंने बिना किसी सकोच के उसे रोककर उसके साथ बात छेड दी।

मैंने बडी शिष्टता के साथ कहा—"कहिए, मादमाजेल,* आप कुशल से तो है?"

---

* कुमारी स्त्रियो का शिष्टता के साथ सम्बोधित करने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। पाठक फ्रास देश की इस शिष्टता पर ध्यान दें कि एक साधारण धोबिन के प्रति भी वहाँ के लोग कैसा आदर प्रदर्शित करते है।

"मैं बहुत अच्छी तरह से हूँ मोशियो, * धन्यवाद !"

"क्या आप एक सिगरेट पीना पसन्द करेंगी ?"

"जी नही, सडक मे पीना ठीक नही है।"

"आप इसे घर पर पी सकती है।"

"अच्छी बात है, धन्यवाद !"

"मादमाजेल, मै एक बात की सूचना आपको देने की धृष्टता करना चाहता हूँ।"

"वह बात क्या है, मोशियो ?"

"मेरे अध्यापक—वही अधेड़ अवस्थावाले सज्जन "

"पेयर पिकेदाँ ?"

"हाँ, वही पेयर पिकेदाँ। तब आप उनके नाम से परिचित है !"

"क्यो नही ! पर उनके सम्बन्ध मे आप क्या कहना चाहते है ?"

"वे आपसे प्रेम करते हैं !"

यह बात सुनते ही वह बडे ज़ोरो से खिलखिलाकर हँस पडी। उसने कहा—"यह सब एक ढोंग है।"

मैंने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया—"मैं शपथ लेकर कह सकता हूँ कि यह सच है।"

"अच्छा, यह बात है ! मै इस पर विचार करूँगी।"—यह कहकर वह वास्तव में कुछ सोचती हुई चली गई।

ज्यो ही मैं बोर्डिंगस्कूल में पहुँचा, त्यो ही मै पेयर पिकेदाँ को एकान्त मे ले गया और धीरे से बोला—"आप उसके लिए एक पत्र लिखे। वह आपके पीछे पागल है।"

* इस शब्द का अर्थ है 'महाशय।'

उन्हे मेरी बात जँच गई और उन्होने एक लम्बा पत्र लिखा, जिसमें लैटिन के प्रेमविषयक साहित्य के सम्बन्ध मे अपना सारा ज्ञान समाप्त करते हुए उन्होंने काव्यमयी भाषा मे अपने प्रेमोद्गार प्रकट किये। मै स्वय उस पत्र को रँगीली धोबिन के पास ले गया। वह थोडा-बहुत पढना जानती थी। उसने बडी गम्भीरतापूर्वक उसे पढा और अत्यन्त भावुकता-पूर्ण आवेग के साथ उसने कहा—"वे सचमुच बहुत अच्छा लिखते है। क्यो न हो, आखिर विद्वान् है! क्या वे सचमुच मुझसे विवाह करना चाहते है?"

मैंने दृढता के साथ कहा—"आपके पीछे वे पागल है।"

"अच्छी बात है, तब उनसे कहिए कि अगले रविवार को वे मुझे भोजन के लिए निमन्त्रित करे।"

पेयर पिकेदाँ ने मेरे मुँह से जो विवरण सुना उससे वे बहुत प्रभावित हुए। अन्त में मैंने कहा—"मोशियो पिकेदाँ, वह आपको बहुत चाहती है, और मैं उसे सब प्रकार से योग्य समझता हूँ। उसे बहकाकर छोड़ देना उचित नही होगा।"

पेयर पिकेदाँ ने अत्यन्त दृढता के साथ उत्तर दिया—"मेरा विश्वास है कि मै भी लफंगा नही हूँ।"

आज मै यह बात स्पष्ट स्वीकार कर देना चाहता हूँ कि उस समय किसी निश्चित उद्देश्य से प्रेरित होकर मैने यह सारा जाल नही रचा था। मै केवल एक स्कूली लडके की मनोवृत्ति से प्रेरित होकर एक परिहास को व्यावहारिक रूप देने के लिए उतावला हो रहा था। अपने अध्यापक के भोलेपन, सासारिक विषयो की अनभिज्ञता और मानवोचित दुर्बलता का लाभ उठाकर मै एक तमाशा खडा करके अपना जी बहलाना चाहता था।

कुछ भी हो, यह बात तय हो गई कि हम लोग नदी के उस पार एक बाग मे भोजन करने जायँगे। आजेल (उस रँगीली धोबिन का यही नाम था) सूचना पाकर निश्चित समय मे नदी के किनारे निश्चित घाट पर आ पहुँची। उस दिन वह विशेष रूप से सजधजकर आई थी और पहले से अधिक सुन्दरी दिखाई देती थी। पेयर पिकेदा ने उसे देखकर अपना टोप उतारकर, नियमित रूप से सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया। उसने अपना हाथ धीरे से उनकी ओर बढा दिया और दोनो मौन भाव से कुछ क्षण तक प्रेमविह्वल दृष्टि से एक-दूसरे को देखते रहे। इसके बाद हम तीनो एक नाव पर सवार हो गये। मै नाव खेने लगा और वे दोनो आमने-सामने बैठ गये।

मेरे अध्यापक ने सबसे पहले मौन भग किया। उन्होने आजेल की ओर प्रेम-भरी दृष्टि से देखते हुए कहा—"आज का मौसम बड़ा सुहावना है।"

आजेल अस्पष्ट स्वर मे बोली—"जी, हाँ।"

वह पानी मे अपनी उँगलियाँ डालकर एक स्वतत्र पतली-सी धारा का सृजन कर रही थी। रास्ते भर वह सिर नीचा किये, इसी तरह अपनी उँगलियाँ पानी में डाले रही। उस पार पहुँचकर जब हम लोग भोजनालय में गये तब आजेल का सकोच दूर हो गया और वह स्वय विभिन्न भोज्य पदार्थों के लिए ऑर्डर देने लगी।

इसके बाद हम लोग बाग में सैर करने चले गये। यह बाग एक छोटे-से द्वीप के समान था और उसके चारो ओर नदी का पानी बहता था। बाग में जाकर आजेल एक छोटी-सी बालिका की तरह उल्लास के साथ उछल-कूद मचाने लगी। मैंने थोड़ी-थोडी-सी शैम्पियन दोनो को पिला दी थी। जब हम लोग एक एकान्त स्थान मे बैठ गये तब आजेल ने कुछ

तरंगित होकर पेयर पिकेदाँ को गलत नाम से सम्बोधित करते हुए कहा—"मोशियो पिकेने।"

पेयर पिकेदाँ आवेश के साथ बोले—"मादमाज़ेल, आपको मेरे मित्र-द्वारा और मेरे पत्र-द्वारा मेरे मन की बात अवश्य ही मालूम हो चुकी होगी।"

उसने एक न्यायाधीश की तरह गम्भीर होकर कहा—"जी, हाँ!"

"तो क्या आप उसके उत्तर मे अपना मत प्रकट करने की कृपा करेगी?"

"इस प्रकार के प्रश्न का कोई उत्तर मेरे पास नही है।"

पेयर पिकेदाँ भावपूर्ण आवेग के कारण हाँफते हुए बोला—"एक दिन ऐसा आ सकता है कि मैं आपको अपनी ही तरह बना सकूँ।"

उसने मुस्कराते हुए कहा—"आप निपट अनाडी हैं, पर आप हैं बहुत भले!"

"मेरे कहने का तात्पर्य यह है मादमाजेल, कि क्या बाद मे हम लोग. ."

वह एक सेकेंड के लिए कुछ हिचकिचाई। इसके बाद काँपते हुए स्वर मे बोली—"क्या आप मेरे साथ विवा हकरने के उद्देश्य से ऐसा कह रहे है? क्योकि किसी भी दूसरे उद्देश्य से मैं इस तरह की बाते सुनना पसन्द नही करूँगी।"

"हाँ, मादमाजेल! मेरा उद्देश्य बिलकुल वही है जैसा कि आप कहती है।"

"तब बडी अच्छी बात है, मोशियो पिकेदाँ

इस प्रकार इन दो अनाडी, प्रेम-कला की सुकुमार विशेषताओ से अनभिज्ञ, व्यक्तियो ने एक मनचले स्कूली छोकरे की चालबाजी के फेर मे पडकर एक-दूसरे से अपने हृदय की आकांक्षा प्रकट की और विवाह का वचन प्राप्त किया।

आंजेल एक विषय मे कुछ झिझक का अनुभव कर रही थी। उसने कहा—"मेरे पास रुपये-पैसे के नाम पर एक धेला भी नही है।"

पेयर पिकेदा ने शैम्पियन के प्रभाव के कारण हकलाते हुए कहा—"मै अपने सारे जीवन मे किसी प्रकार सात हजार फ्रा जोडने मे समर्थ हुआ हूँ।"

यह सुनकर आजेल उल्लास के साथ बोल उठी—"तब तो हम लोग एक अच्छा-खासा व्यवसाय खोल सकते है।"

"कैसा व्यवसाय ?"

"मै अभी से क्या बताऊँ ? मैं स्वय नही जानती। पर इतने रुपये से हम बहुत-से कारोबार कर सकते हैं। मैं बोर्डिंग-स्कूल मे तो आपके साथ रह नही सकती, या रह सकती हूँ ?"

पेयर पिकेदाँ ने इस महत्त्वपूर्ण विषय पर अभी तक ध्यान ही नहीं दिया था। उन्होने घबराहट के स्वर में कहा—"हम लोग कौन-सा कारोबार खोल सकते है ? इसमे बडी असुविधा रहेगी, क्योंकि मै लैटिन के सिवा और कुछ नही जानता।"

आजेल सोचने लगी और विभिन्न प्रकार के व्यवसायो की कल्पना करने लगी। कुछ सोचकर उसने पूछा—"आप क्या डॉक्टर का पेशा नही कर सकते ?"

"नही।"

"केमिस्ट ?"

"वह भी नही।"

सहसा वह अत्यन्त उल्लासपूर्वक हर्षध्वनि कर उठी। उसने अपने मन की बात सोच ली थी।

उसने कहा—"हम लोग एक परचून की दूकान खोलेंगे। यह बहुत

अच्छा रहेगा। इसमे सन्देह नही, इतनी छोटी-सी रकम से हम कोई बडी दूकान नही खोल सकते। पर फिर भी एक अच्छी-खासी दूकान !

पेयर पिकेर्दा को इस प्रस्ताव से बडा धक्का पहुँचा। उसने कहा—"नही, मैं परचून की दूकान नहीं खोल सकता। मुझे—मुझे यहाँ के सब लोग जानते है। मै लैटिन भाषा का पडित हूँ, बस ! इसके सिवा और कोई काम मेरे किये न होगा।"

आजेल ने इस बात के उत्तर मे कुछ न कहकर उसे एक गिलास शैम्पियन और पिलाया। इसके बाद हम लोग नाव के पास लौट चले और उस पर सवार होकर घर की ओर चल पडे। रात बहुत अँधेरी थी, हाथ से हाथ बड़ी कठिनाई से सूझ पाता था। फिर भी मैंने जो ध्यानपूर्वक देखा तो मालूम हुआ कि पेयर पिकेर्दा ने आजेल का हाथ चुपचाप पकड लिया है। आजेल ने भी धीरे से उनके कधे पर अपना हाथ डाल दिया।

हमारी इस 'प्रेम-पार्टी' का पता किसी प्रकार प्रधान अध्यापक को लग गया और पेयर पिकेर्दा को नौकरी से अलग कर दिया गया। मेरे पिता को भी मेरी दुष्टता का हाल मालूम हो गया, और उन्होंने क्रुद्ध होकर उस स्कूल से मेरा नाम कटाकर दूसरे स्कूल मे भरती करा दिया।

इस घटना के छ महीने बाद मैंने बी०ए० की डिग्री प्राप्त कर ली। इसके बाद मे पेरिस में कानून की शिक्षा प्राप्त करने चला गया। अपने बाल्यकाल मे परिचित शहर मे मै दस वर्ष से पहले लौट न पाया।

इतने दिनो बाद घर पहुँचने पर मैंने अपने शहर मे बहुत-सा परिवर्तन पाया। एक छोटे-से-छोटे परिवर्तन को मे बडी उत्सुकता से देखता था। रू-द-सर्पो से होकर जब मै चला जा रहा था तो सहसा एक कोने में एक दूकान की ओर मेरा ध्यान आकर्षित हुआ। उसके दरवाजे पर एक साइन-बोर्ड में ये शब्द लिखे हुए थे—"यहाँ औपनिवेशिक चीजे पाई जाती हैं—

पयर पिकेदाँ।" इसके नीचे बडे-बडे शब्दो मे लिखा था—"परचून की दूकान।"

मैंने ऊँची आवाज मे लैटिन भाषा में कहा—"कितना बडा परिवर्तन है! किमाश्चर्यमत परम्!"

पेयर पिकेदा ने अपना सिर उठाकर मेरी ओर देखा और अपने ग्राहक को छोडकर दोनो हाथ बढाते हुए मेरी ओर आ लपके। बडे आवेग के साथ उन्होने कहा—"ओह! मेरे नवयुवक मित्र! तुम इतने दिनो तक कहाँ रहे। आज हम लोगो का कितना बडा सौभाग्य है! कितना बडा सौभाग्य!"

इतने मे एक स्वस्थ और सुन्दरी स्त्री दूकान के भीतर से आकर अपनी उल्लास-भरी दृष्टि से मेरा हार्दिक स्वागत करती हुई-सी मेरे अत्यन्त समीप आकर खडी हो गई। कुछ देर तक मैंने उसे पहचाना नही। कारण यह था कि पहले वह दुबली थी और अब बहुत मोटी हो चली थी। मैंने कहा—"आजेल! तुम्हारे स्वास्थ्य को देखते हुए ऐसा जान पडता है कि तुम्हारा कारोबार बडे मजे मे चल रहा है।"

पिकेदाँ अवसर पाकर ग्राहको को सौदा-सुलफ तौलकर देने के लिए दुकान पर वापस चले गये थे। उन्होने अपनी और अपनी पत्नी, दोनो की ओर से उत्तर देते हुए कहा—"बहुत अच्छा चल रहा है, बहुत अच्छा! इस वर्ष मुझे नकद तीन हजार फ्रा का लाभ हुआ है।"

"और आपकी लैटिन का क्या हाल है, मोशियो पिकेदाँ?"

"अरे भाई, कहाँ की बात तुमने निकाली। लैटिन लैटिन · लैटिन! यह जान लो कि लैटिन से हाँडी नही चढ सकती।"

विचित्र प्रेम

जब हम लोग कान नामक स्थान को छोड़कर आगे बढे तो गाडी खचाखच भरी थी। तारास्को के पास पहुँचते ही एक व्यक्ति बोल उठा—
"यही वह स्थान है जहाँ रात-दिन हत्याये हुआ करती है।"

अँधेरी रात की यात्रा के अवसर पर अकस्मात् इस तरह की बात सुनकर सब लोग एक बार चौक उठे। विशेष करके स्त्रियाँ बहुत घबरा उठी, और यह आशका करने लगी कि कही सहसा कोई हत्याकारी गाडी के दरवाजे पर आकर खडा न हो जाय। हम लोग भयकर आकस्मिक घटनाओ के सम्बन्ध मे अपने-अपने व्यक्तिगत अनुभवो का वर्णन करने लगे, और प्रत्येक व्यक्ति इस बहाने से अपने असीम साहस का बखान करके श्रोताओ को चकित करने लगा।

एक डाक्टर ने, जो अधिकतर दक्षिण-फ्रास मे रहता था, अपनी बारी आने पर कहा—"मुझे जीवन मे आप लोगो की तरह कभी अपने साहस की परीक्षा का अवसर प्राप्त न हुआ। पर एक ऐसी स्त्री से मेरा परिचय हुआ है, जिसके जीवन मे एक अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना घटी है, जो साथ ही रहस्यपूर्ण और मार्मिक भी है। उस स्त्री की मृत्यु हो चुकी है। उसकी चिकित्सा मेरे ही अस्पताल मे हुई थी।"

यह कहकर डाक्टर ने अपनी कहानी प्रारम्भ की, जो इस प्रकार थी —

वह एक रूसी महिला थी। उसका नाम कौन्टेस मारीबारानोव था। वह बहुत धनी और अत्यन्त सुन्दरी थी। आप लोगो से यह बात छिपी न होगी कि रूसी नारियाँ कैसी सुन्दरी होती है। उनके मुख के

सुन्दर गढन के साथ उनके स्वभाव की शालीनता का समाञ्जस्य वास्तव मे मन को हरनेवाला होता है।

कुछ भी हो, उसके घरेलू डाक्टर को इस बात का पता कुछ वर्ष पहले ही लग चुका था कि वह फेफड़े के रोग से ग्रसित है; और उसने उसे हवाबदली के लिए दक्षिण-फ्रास मे जाने की सलाह दी थी। पर कौन्टेस ने वार-वार हठपूर्वक डाक्टर के इस प्रस्ताव का विरोध किया था, और पीटर्सवर्ग छोडने से स्पष्ट अस्वीकार कर दिया था। अन्त मे विगत शरद्काल मे डाक्टर ने उसके पति को उसके स्वास्थ्य की भयकर स्थिति के सम्बन्ध मे सचेत कर दिया। फल यह हुआ कि पति के हठ से उसे रूस छोडने के लिए राजी होना पडा। वह दक्षिण-फ्रास के अन्तर्गत मातोन नामक स्थान के लिए रवाना हो गई।

उसने रेल मे एक अलग डिब्बा अपने लिए 'रिजर्व' करा लिया और उस डिब्बे मे अकेली यात्रा करने लगी। उसके नौकर-चाकर दूसरे डिब्बे मे बैठे हुए थे। वह दरवाजे के पास उदास भाव से बैठी हुई थी। उसकी आँखो के सामने से होकर खेत-पर खेत और गाँव-पर गाँव के दृश्य क्षण मे प्रकट होकर क्षण मे ओझल होते चले जाते थे। वह अनमनी-सी होकर बाहर को देखती जाती थी, और अपने को निखिल विश्व मे निपट अकेली जानकर उसकी उदासी बढती-चली जाती थी। उसके न कोई बाल-बच्चे थे, न कोई सगे-सम्बन्धी। केवल पति था, जिसका प्रेम ठण्डा पड चुका था और जिसने अत्यन्त निर्दयता के साथ एक प्रकार से उसका देशनिकाला कर दिया था, और इस लम्बी यात्रा मे उसका साथ न देकर उसे इस तरह खदेड दिया था जैसे किसी अनाथ नौकर के बीमार पडने पर उसे एक साधारण सार्वजनिक अस्पताल मे खदेड दिया जाता है।

उसका नौकर ईवान प्रत्येक स्टेशन में यह जानने के लिए उसके पास आता था कि उसे किसी चीज की आवश्यकता तो नही है। वह उसका पुराना नौकर था और अपनी स्वामिनी का बडा सच्चा सेवक था।

धीरे-धीरे रात हो आई। गाडी पूरी रफ्तार से चल रही थी। वह चित्त की अस्थिरता के कारण सो नही पाती थी।

अचानक उसे न जाने क्या सूझी, उसने अपने छोटे से 'बैग' से अपने पति की दी हुई फ्रेंच अशर्फियो को निकालकर अपनी गोद मे रक्खा। ज्यो ही वह उन्हे गिनने के लिए तैयार हुई, त्यो ही ठडी हवा का एक झोका उसके मुख मे आ लगा। चकित होकर उसने अपना सिर ऊपर को उठाया। सामने डिब्बे का दरवाजा अभी किसी ने खोला था। कौन्टेस ने घबराकर अपनी गोद मे बिखरे हुए चमकीले स्वर्ण-खण्डो के ऊपर एक शाल डाल दी और इस बात की प्रतीक्षा करने लगी कि कौन-सी विपत्ति उस पर टूटनेवाली है। कुछ ही क्षणो बाद एक व्यक्ति ने भीतर प्रवेश किया। वह सध्या की पोशाक पहने था, उसका सिर नगा था, उसके हाथ मे सख्त चोट के चिह्न दिखाई देते थे, और वह हाँफ रहा था। दरवाजा बन्द करके वह एक स्थान पर बैठ गया, और अपनी चमकती हुई आँखो से वह अपने पास बैठी हुई विभ्रात महिला की ओर देखता हुआ एक रूमाल से अपने हाथ की रक्त-रञ्जित कलाई को बाँधने लगा।

कौन्टेस का मारे घबराहट के बुरा हाल था। ऐसा जान पडता था कि वह भय से मूर्च्छित होना चाहती है। उसके मन मे निश्चित रूप से यह विश्वास जम गया कि इस व्यक्ति ने उसे सोने की मोहरो को गिनते हुए देख लिया है, और उसकी हत्या करके वह उन मोहरो और उसके गहनो को लूटकर ले जाना चाहता है।

वह व्यक्ति वास्तव मे कौन्टेस मारी की ओर एकटक घूर रहा था,

उसके मुख का भाव अत्यन्त अस्थिर और अशान्त दिखाई देता था। कौन्टेस को भय हुआ कि वह अब उस पर झपटना ही चाहता है।

सहसा वह अपरिचित व्यक्ति बोल उठा—"श्रीमती जी, आप तनिक भी न घबरावे।"

पर उसके मुख से एक शब्द भी नहीं निकल पाता था। उसका हृदय बेतहाशा धडक रहा था और उसके कानो मे केवल भाँय-भाँय का शब्द सुनाई देता था।

अपरिचित ने फिर कहा—"मैं कोई गुण्डा या बदमाश नही हूँ, आप तनिक भी विचलित न हो।"

वह पहले की तरह ही सन्न बैठी रही। पर उसके एक पाँव के कुछ हिल जाने से सोने की मोहरे इस तरह नीचे को गिरने लगी जैसे किसी नलके से पानी गिरता जाता है।

अपरिचित व्यक्ति अत्यन्त आश्चर्य-भरी दृष्टि से उन स्वर्ण-खण्डो की ओर देखने लगा, और अकस्मात् वह उन्हे फर्श पर से उठाने लगा। कौन्टेस आतङ्कित होकर शेष बची हुई मोहरो को नीचे फेककर उठ खडी हुई और गाडी पर से बाहर कूद पडने के उद्देश्य से दरवाजे की ओर लपकी। पर अपरिचित व्यक्ति ने उसका मनोभाव समझकर उसका हाथ जोर से पकड लिया और उसे बलपूर्वक बैठाया।

इसके बाद वह बोला—"मादाम (श्रीमती जी)! मेरी बात पर विश्वास कीजिए। मै कोई गुण्डा या लुटेरा नही हूँ। इसका सबसे बडा प्रमाण यह है कि मैं आपका सब धन बटोरकर आप ही को सौंप रहा हूँ। पर म इस समय एक भयकर सकट मे आ फँसा हूँ। यदि आप इसी सीमा-प्रान्त को पार करने मे मेरी सहायता न करे, तो मुझे जान से हाथ धोना पड़ेगा। इससे अधिक मैं इस समय आपसे और कुछ नही

कह सकता। एक घण्टे के भीतर हम लोग रूस के अन्तिम स्टेशन मे पहुँच जावेगे। उसके प्राय बीस मिनट बाद हम लोग रूसी साम्राज्य की सीमारेखा को पार कर जावेगे। यदि आप इस 'बीच मेरी सहायता के लिए तत्पर न हो, तो मै कही का न रहूँगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने न तो किसी की हत्या की है, न कही डाका डाला है, न कोई काम आत्म-सम्मान अथवा सामाजिक नीति के विरुद्ध किया है। मैं शपथपूर्वक आपसे यह बात कह सकता हूँ। मै इस समय केवल इतना ही कहना चाहता हूँ। जो विपत्ति मेरे ऊपर टूट पडी है, उसके सम्बन्ध मे अभी कुछ अधिक कहना व्यर्थ है।"

यह कहकर वह फर्श पर घुटने टेककर इधर-उधर बिखरी हुई सोने की मोहरो को बटोरने लगा। जब सब बटोर चुका, तो उसने कौन्टेस के 'बैग' के भीतर उन्हे डालकर 'बैग' ज्यो का त्यो उसके हाथ मे दे दिया और बिना एक शब्द भी मुँह से निकाले वह एक कोने में जाकर अलग बैठ गया। बहुत देर तक दोनो चुप बैठे रहे। दोनो मे से एक भी न हिला न डुला। कौन्टेस के मन से भय अभी पूरी तरह दूर नही हो पाया था पर वह धीरे-धीरे शान्त होती जाती थी। अपरिचित व्यक्ति कठपुतले की तरह निर्जीव-सा बैठा हुआ था। उसका चेहरा एकदम पीला पड गया था, और उसकी आँखे इस प्रकार निश्चल-सी हो गई थी कि जान पडता था जैसे उसमे जीवन का कोई चिह्न शेष न रह गया हो। कौन्टेस बीच-बीच मे बिजली की-सी झलक से एक बार उसकी ओर देख-कर आँखें फिरा लेती थी। उस अपरिचित व्यक्ति की आयु तीस वर्ष के आस-पास की होगी। वह देखने मे बहुत सुन्दर था, और उसके मुख से वास्तव मे भद्रता टपकती थी।

गाडी तीव्रगति से चली जा रही थी। बीच बीच मे इजिन की सीटी

अन्धकारमय आकाश के पर्दों को स्तर-प्रति-स्तर चीरती हुई तीक्ष्ण शब्द से बज उठती थी। पर कुछ समय बाद उसकी गति धीरे-धीरे मन्द पडती गई, और अन्त में वह एक स्थान मे स्थिर होकर खडी हो गई।

कौन्टेस का नौकर ईवान अपने नियमानुसार मालकिन के पास आ पहुँचा। कौन्टेस ने अपरिचित व्यक्ति की ओर एक बार मार्मिक दृष्टि से देखकर अपने नौकर से कहा—"ईवान, तुम्हे कौन्ट (कौन्टेस मारी के पति) के पास वापस चला जाना होगा। मुझे अब तुम्हारी कोई विशेष आवश्यकता नही रही।"

ईवान चकित और स्तब्ध रह गया। घबराहट के कारण हकलाते हुए उसने कहा—"पर मालकिन, यह कैसे—"

कौन्टेस मारी ने उसकी बात बीच ही मे काटते हुए कहा—"नही, तुम मेरे साथ नही आ सकते, मैने अपना विचार बदल दिया है। यह लो, घर वापस जाने का व्यय। एक बात और है, अपनी टोपी और अँगरखा उतारकर मुझे दे जाओ।"

ईवान के आश्चर्य और घबराहट की सीमा न रही। पर वह पुराना नौकर था, अपने मालिक और मालकिन के मन की तरगो और चोचलो से भली-भाँति परिचित था। इसलिए प्रत्युत्तर मे एक शब्द भी न बोलकर उसने चुपचाप अपनी टोपी और अँगरखा उतारकर उसके पास रख दिये, और आँखो मे आँसू भरकर वह वहाँ से चला गया।

गाडी फिर रवाना हुई, और सीमाप्रान्त की ओर बडे वेग से चलने लगी। कौन्टेस ने अपने अपरिचित सहयात्री से कहा—"ये लीजिए, ये कपड़े इस समय में आपके हो गये। उन्हे पहन लीजिए। कोई पूछेगा, तो मै आपको अपना ईवान नाम का नौकर बताऊँगी। पर मै एक शर्त पर ऐसा करूँगी। वह यह कि आप रास्ते भर मुझसे एक शब्द भी न

बोलेंगे न मुझे धन्यवाद देंगे, न कृतज्ञता प्रकट करने के उद्देश्य से कोई बात कहेंगे।"

अपरिचित व्यक्ति ने बिना कुछ कहे केवल अपना सिर झुकाकर यह जताया कि वह उसकी शर्त को मानने के लिए तैयार है।

कुछ समय बाद जब गाडी एक दूसरे स्टेशन मे ठहरी, तो कुछ रेलवे अफसरो ने भीतर प्रवेश किया। कौन्टेस ने अपने नाम-धाम-सम्बन्धी कागजात उनके हाथ मे देते हुए अपरिचित व्यक्ति की ओर उँगली उठाकर कहा—"वह मेरा नौकर ईवान जिसका पासपोर्ट यह है।"

गाडी फिर रवाना हुई, रात-भर दोनो एक-दूसरे के आमने-सामने मौन अवस्था मे बैठे रहे। प्रात काल एक जर्मन स्टेशन मे जब गाडी ठहरी, तो अपरिचित व्यक्ति नीचे उतर गया, और तब दरवाजे के पास खडे होकर उसने कहा—"मादाम, मुझे अपनी प्रतिज्ञा भग करने के लिए क्षमा कीजिए; पर चूँकि मेरे कारण आपने नौकर को अलग कर दिया, और उसके पद पर मुझे नियुक्त करने की कृपा की है, इसलिए आप जो सेवा मुझसे लेना चाहे, मै उसके लिए तैयार हूँ।"

कौन्टेस ने रूखे स्वर में कहा—"मेरी नौकरानी को ढूँढकर उसे मेरे पास भेज दो।"

अपरिचित व्यक्ति अपनी 'मालकिन' की आज्ञा का पालन करने तत्काल चला गया। नौकरानी को भेजकर वह किसी दूसरे डिब्बे मे चला गया। जब कौन्टेस किसी एक स्टेशन मे मध्याह्न-भोजन करने के लिए उतरी तब उसने देखा कि वही अपरिचित व्यक्ति दूर से उसकी ओर एकटक देख रहा है। अन्त मे मातोन नामक स्थान मे उतरकर कौन्टेस हमारे अस्पताल मे भर्त्ती हो गई।

एक दिन जब मै अपने आफिस मे रोगियो से बाते कर रहा था तब एक

लम्बे कद के नवयुवक ने भीतर प्रवेश किया। उसने बडी नम्रता के साथ मुझसे कहा—"मै कौन्टेस मारी बारानोव का कुशल-समाचार पूछने आपके पास आया हूँ। मैं उनके पति का मित्र हूँ, यद्यपि वह स्वय मुझे नही जानती।"

मैंने सक्षेप मे उत्तर दिया—"मुझे सूचित करते हुए दु ख होता है कि उनके जीने की अब कोई आशा नही है।"

मेरी बात सुनते ही वह व्यक्ति सिसक-सिसककर रोने लगा। इसके बाद वह उठा और एक शराबी की तरह लडखडाते हुए वहाँ से चला गया।

उसी दिन सध्या को मैंने कौन्टेस को यह सूचना दी कि एक अनजान व्यक्ति ऑफिस मे आकर उसके स्वास्थ्य का हाल पूछ रहा था। कौन्टेस यह सुनकर कुछ विचलित हो उठी। इसके बाद उसने उस अनजान व्यक्ति का सारा हाल मुझसे कह सुनाया, जिसका वर्णन मै कर चुका हूँ। अन्त में कौन्टेस ने मुझसे कहा—"यह व्यक्ति जिसके सम्बन्ध में मैं कुछ भी नही जानती हूँ, छाया की तरह मेरे पीछे लगा हुआ है। वह एक विचित्र दृष्टि से मेरी ओर देखता है, पर एक शब्द भी कभी मुँह से नही निकालता।"

एक क्षण के लिए कुछ सोचने के बाद वह फिर बोली—"मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि वह इस समय भी खिडकी के नीचे बैठा होगा।"

यह कहकर लेटने की कुर्सी से धीरे से उठकर खिडकी से परदा हटाकर कौन्टेस ने मुझे खिडकी के नीचे एक बेंच पर उदास-भाव से बैठे हुए उसी अनजान व्यक्ति को दिखा दिया जो मुझसे प्रात काल मिलने आया था। वह ऊपर कौन्टेस के कमरे की ओर स्थिर दृष्टि से देख रहा था। हमें देखकर वह बेंच से उठकर चला गया और एक बार के लिए भी उसने पीछे की ओर लौटकर नही देखा।

इस दृश्य ने एक विचित्र रहस्य का पर्दा मेरी आँखो से हटा दिया। मैं समझ गया कि ये दोनो अपरिचित व्यक्ति परस्पर एक दूसरे को चाहते है; पर दोनो का प्रेम एकदम मूक है। उन दोनो मे से कोई भी वाणी-द्वारा अपने हृदय की निगूढ भावना को व्यक्त करना नही चाहता।

उस अज्ञात व्यक्ति का प्रेम अपने प्राण बचानेवाली महिला के कृतज्ञता के रस से घुल-मिलकर एकरूप हो गया था। यह निश्चय था कि कौन्टेस को यदि वह अपने प्राण देकर भी बचा पाता तो मृत्यु को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता। प्रतिदिन वह एक बार मेरे पास आकर कौन्टेस की कुशल पूछता। अपनी आराध्य देवी को दिन पर दिन क्षीण से क्षीणतर होते देख वह बिलख-बिलखकर रोता।

एक दिन कौन्टेस ने मुझसे कहा—"मैं जीवन मे केवल एक बार इस व्यक्ति से बोली हूँ, फिर भी मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं बीस वर्ष से उससे परिचित हूँ।"

जब कभी उन दोनो की चार आँखे होती, और अपरिचित व्यक्ति अपना सिर सम्मानपूर्वक झुकाते हुए कौन्टेस का अभिवादन करता तो वह केवल एक गम्भीर किन्तु मनोमोहक मुसकान से उसका उत्तर देती। मैं स्पष्ट ही यह अनुभव कर रहा था कि कौन्टेस जीवन से निराश होने पर भी इस प्रकार का श्रद्धापूर्ण मौन प्रेम पाकर अपने को सुखी समझ रही थी। इसमे उसे एक प्रकार उन्नत कवित्वपूर्ण रस का स्वाद मिल रहा था।

पर साथ ही अपने स्वभाव के सहज गाम्भीर्य के कारण उसमे एक ऐसी विचित्र हठकारिता आ गई थी कि उसने अन्त तक अपने उस अज्ञात-कुल-शील-प्रेमी का नाम-धाम नही पूछा और उससे कभी एक क्षण के

लिए भी बोलना स्वीकार नही किया। इस हठकारिता का एक और कारण उसने बताया। उसने एक दिन मुझसे कहा—"यदि मैं उसका नाम-धाम पूछकर उससे बोलने लग जाऊँ तो इस रहस्यपूर्ण मूक-मैत्री का सारा महत्त्व नष्ट हो जायगा। हम दोनो अन्त तक एक-दूसरे से अपरिचित रहे, तभी इस प्रेम की विशेषता है।"

वह अपरिचित व्यक्ति भी अपनी न बोलने की अस्वाभाविक प्रतिज्ञा को अन्त तक निभाता गया। किसी भी प्रत्यक्ष या परोक्ष उपाय से उसने कभी कौन्टेस के निकट-सम्बन्ध मे आने का प्रयत्न नही किया।

कौन्टेस जब लेटे-लेटे उकता जाती तो बीच में उठकर खिडकी का परदा हटाकर नीचे की ओर मुँह करके देखती कि वह परदेशी प्रेमी वहाँ बैठा है या नही। पर वह सब समय निश्चित रूप से उसी बेंच पर बैठा हुआ दिखाई देता। एक बार उसकी ओर देखकर वह फिर अपूर्व पुलक-भरे सुख की एक साँस लेकर लेट जाती।

अन्त मे एक दिन प्रातःकाल प्रायः दस बजे के समय उसकी मृत्यु हो गई। मै जब बाहर जाने की तैयारी कर रहा था तो वही अज्ञात-कुल-शील व्यक्ति मेरे पास आया। उसका मुख एकदम निष्प्राण और रक्तहीन दिखाई देता था। उसकी आँखो से स्पष्ट पता चलता था कि वह बहुत रोया है। उसने अत्यन्त शान्त और धीमे स्वर में कहा—"मै कौन्टेस को आपकी उपस्थिति मे केवल एक क्षण के लिए देखना चाहता हूँ।

मै उसका हाथ पकडकर भीतर ले गया। मृत स्त्री के पलँग के पास पहुँचते ही उसने उसका हाथ धीरे से उठाकर उसे एक बार अपने ओठो से लगाया। इसके बाद वह एक पागल की-सी अस्थिर और उद्भ्रान्त अवस्था में बाहर चला गया।"

डॉक्टर ने अपनी कथा समाप्त करने के बाद उपस्थित सज्जनो से कहा— "यह है रेलयात्रा-सम्बन्धी विचित्र घटनामूलक कहानी, जिससे मैं व्यक्तिगत रूप से परिचित हूँ। कभी-कभी मैं यह सोचने लगता हूँ कि सभी मनुष्य अनोखे पागल प्राणी होते हैं।"

इस पर एक महिला धीरे से बोली—"जिन दो व्यक्तियो की प्रेमकथा आपने सुनाई है। उन्हें मैं पागल नही समझती, वे .. वे ." पर वह अपना वाक्य समाप्त करने के पहले ही रो पडी, और यह कोई न जान पाया कि वह क्या कहना चाहती थी ?

स्त्रियों का व्यापारी

मेनीकू प्राग का एक मुफस्सिल है। प्राय. बीस वर्ष पहले उक्त स्थान में दो निर्धन किन्तु सच्चे और सहृदय व्यक्ति अपने पसीने की कमाई से अपना जीवन-निर्वाह करते थे। पति एक बहुत बडे छापेखाने म काम करता था और पत्नी लोगो के कपडे धोकर थोडा-बहुत कमा लेती थी। अपनी प्यारी लड़की विटेस्का का उन्हें बडा गर्व था। विटेस्का की आयु १८ वर्ष की थी। वह देखने मे बहुत स्वस्थ और सुन्दर थी। वह कपड़े सीने का काम करके यथासाध्य अपने माता-पिता की सहायता करती थी। अपने अवकाश का समय वह साधारण शिक्षा तथा सगीत का ज्ञान प्राप्त करने में बिताती थी। अपने स्वभाव के माधुर्य तथा अन्य गुणो के कारण वह पास-पडोस मे आदर्श-स्वरूप समझी जाती थी।

जब वह शहर में काम करने जाती तब वह अपने कद की लम्बाई, स्वास्थ्य और सौन्दर्य के कारण प्राचीनकाल की कोई वीरागना जान पडती थी। उसका मनोमोहक रूप और तरल ज्योतिर्मय आँखे पथिको का ध्यान स्वभावत उसकी ओर आकर्षित करती थी। बहुधा धनी घर के मनचले युवक बहुत दूर तक उसका पीछा करते हुए, उससे बाते करने, उसका परिचय प्राप्त करने और उससे घनिष्ठता बढाने का प्रयत्न करते थे, पर वह उन्हे अपने पास फटकने तक न देती थी।

एक दिन सध्या के समय जब वह पुल पर चली जा रही थी तब एक विचित्र रूप-रग के व्यक्ति को देखकर उसकी ओर उसका ध्यान आकर्षित हुआ। वह व्यक्ति लम्बे कद का था, उसके मुख की आकृति सुन्दर और

प्रभावोत्पादक थी, उसकी आँखे चमक रही थी, उसकी छोटी और सुन्दर ढग से कटी-छटी दाढी के बाल घने काले थे; वह एक लम्बा, अचकननुमाँ कोट पहने था और उसके सिर पर तुर्की टोपी थी। वह विटेस्का की ओर एकान्त दृष्टि से देख रहा था। विटेस्का को देखते ही यह अनुमान लगाना कठिन न था कि वह एक निर्धन परिवार की लडकी है; पर उसके रूपरग और चाल-ढाल से ऐसा जान पडता था कि वह एक राजकुमारी है। उस सुन्दर पुरुष की एकटक दृष्टि से सहमकर विटेस्का ने आँखे नीची कर ली और वह तेजी से आगे को बढती हुई चली गई। अपरिचित व्यक्ति भी उसका पीछा करता हुआ चला गया। अन्त मे जब दोनो मुफस्सिल की एक तग गली मे पहुँचे तो उसने विटेस्का से कहा—"यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मै तुम्हें तुम्हारे घर तक पहुँचा आऊँ?"

विटेस्का ने हडबडी के साथ उत्तर दिया—"आप देख रहे है कि मैं नन्ही-सी बच्ची नही हूँ और अकेली जा सकती हूँ। मै आपकी इस कृपा के लिए कृतज्ञ हूँ, पर साथ ही आपसे यह प्रार्थना करना चाहती हूँ कि अब आप मेरा पीछा न करे। इस मुहल्ले के सब लोग मुझे जानते है और आपके साथ चलने से मेरी बदनामी हो सकती है।"

पर उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—"यदि तुम यह सोचे बैठी हो कि तुम मुझसे इतने सहज में छुटकारा पा जाओगी तो तुम बडी भूल कर रही हो। मैं अभी एक पूर्वी देश से यहाँ आया हूँ और शीघ्र ही वहाँ लौट चलने का विचार कर रहा हूँ। यदि तुम मेरे साथ चलो तो मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि अपनी आश्चर्यजनक सुन्दरता के कारण तुम वहाँ मालामाल बन जाओगी। मै इस बात के लिए शर्त बद सकता हूँ कि एक वर्ष पहले ही तुम हीरो से जड जाओगी और दास-दासियों से घिरी रहोगी।

विटेस्का ने इस बात से अपने को अपमानित समझकर दृढता के साथ कहा—"आपको मालूम होना चाहिए कि मै एक प्रतिष्ठित कुल की लडकी हूँ।"—यह कहकर उसने आगे बढने की चेष्टा की। पर उस धृष्ट व्यक्ति ने उसे रोककर प्राय फुसफुसाते हुए उसके कान मे कहा—"तुम्हे सृष्टिकर्त्ता ने सारे ससार पर शासन करने योग्य रूप दिया है। मेरी इस बात पर विश्वास करो कि मेरी बात मानने से तुम किसी सुलतान की प्रियपात्री बन सकती हो।"

विटेस्का बिना किसी प्रकार का उत्तर दिये आगे बढ चली। वह व्यक्ति पहले की ही तरह उसका पीछा करते हुए कहता चला गया—"मेरी बात मान लो, मैं तुम्हारे लाभ के लिए ही कह रहा हूँ।"

विटेस्का तग आ गई। उसने खीझकर कहा—"मै कोई भी बात नही सुनना चाहती। मुझे निर्धन और असहाय देखकर आप यह विश्वास किये बैठे हैं कि मैं सहज मे आपके बहकावे मे आ जाऊँगी। पर यह आपकी भूल है। मैं निर्धन होने पर भी एक अच्छे घराने की सच्चरित्र लड़की हूँ। अपनी लज्जा बेचकर मैं यदि राजरानी भी बन सकूँ तो वह मुझे मान्य नही है।"

उस रहस्यमय व्यक्ति ने विटेस्का के घर तक उसका पीछा किया। पर विटेस्का ने भीतर पाँव रखते ही दरवाजा वन्द कर दिया।

दूसरे दिन जब विटेस्का शहर मे गई तो जिस सडक में उसे काम के लिए जाना था, उसके एक कोने में वही पिछले दिनवाला अपरिचित व्यक्ति स्पष्ट ही उसकी प्रतीक्षा मे खड़ा दिखाई दिया। उसने विटेस्का को अपना अभिवादन जताने के उद्देश्य से बडे आदरपूर्वक सिर झुकाया। इसके बाद वह बोला—"मैंने तुम्हारे साथ कल जो बर्ताव किया उसके लिए हार्दिक दुख प्रकट करता हूँ और क्षमा चाहता हूँ।"

माता-पिता का न मिला। उनकी चिन्ता दिन पर दिन बढती गई। अन्त मे आतंकित होकर उन्होंने पुलिस को सूचना दे दी।

पुलिस के अधिकारियो ने सब से पहला काम यह किया कि स्मर्ना के फ्रेन्च 'कासल' को इस सम्बन्ध में जाँच के लिए लिखा। 'कासल' ने उत्तर में यह लिखा कि आइरेनियस क्रिजापोलिस नाम का कोई व्यापारी स्मर्ना में नही रहता। पुलिस ने लडकी के भयभीत माता-पिता की प्रार्थनाओ पर ध्यान देकर बहुत दिनो तक तहकीकात जारी रक्खी पर कोई फल नहीं हुआ। अन्त मे बडी कठिनाइयो के बाद उस रहस्यपूर्ण घटना के सम्बन्ध मे थोडा-सा प्रकाश पडते दिखाई दिया, पर वह विशेष सन्तोषजनक नही था। हंगरी के पेस्ट नामक शहर की पुलिस ने यह सूचित किया कि कुछ ही समय पहले एक व्यक्ति उक्त स्थान की दो लडकियो को भगाकर टर्की ले गया, उस व्यक्ति का हुलिया विटेस्का के पति के रूप-रग के वर्णन से बहुत कुछ मिलता-जुलता था और लडकियो का व्यापार करना उसका प्रधान पेशा जान पडता था। पर पुलिस उसका पीछा करने पर भी उसे पकड न पाई।

* * * *

विटेस्का के रहस्यमय अन्तर्धान के चार वर्ष बाद की घटना है:—दो व्यक्ति एक पुरुष और एक स्त्री दमिश्क की एक तग गली मे अचानक एक-दूसरे से अत्यन्त आश्चर्यजनक रूप से मिले। पुरुष लाल रग की तुर्की टोपी पहने था, उसकी कटी-छटी दाढी के बाल घने काले थे और वह एक हरे रग का लम्बा अँगरखा पहने था। वह और कोई नहीं, आइरेनियस क्रिजापोलिस था, जो विटेस्का को भगा ले गया था। एक हब्शी एक छाता खोलकर उसके पीछे-पीछे चल रहा था। एक चोबदार भी उसके साथ मे था। एक सम्भ्रान्त घर की तुर्की महिला एक सुन्दर पालकी मे

बैठी हुई थी और चार दास पालकी को ले जा रहे थे। वह सफेद रग का बुर्का पहने थी। उसका मुँह अच्छी तरह नही दिखाई देता था; पर बुर्के के भीतर से दो तीव्र प्रकाश से चमकती हुई आँखे जब आइरेनियस क्रिज़ापोलिस पर पडी तब वह यह समझकर कि पालकी मे बैठी हुई वह सम्भ्रान्त महिला उस पर मुग्ध हो गई है, मन्द-मन्द मुस्कराने लगा।

पर वह तुर्की महिला शीघ्र ही भीड में मिलकर उसकी आँखो से ओझल हो गई और वह उसे भूल गया। पर दूसरे दिन पाशा का एक खोजा उसके पास पहुँचा; और उसने क्रिज़ापोलिस को यह सन्देश सुनाया कि पाशा उससे मिलना चाहता है। क्रिजापोलिस ने जब यह सुना तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। कुछ भी हो, पाशा की आज्ञा का उल्लघन वह नही कर सकता था। खोजा उसे पाशा के यहाँ ले गया। वह पाशा टर्की के सुल्तान का प्रतिनिधि और दमिश्क का सर्वेसर्वा था। बहुत-से भूलभुलैया चक्करों से गुजरने के बाद अन्त मे दोनो महल के भीतर एक ऐसे एकान्त स्थान मे पहुँचे जहाँ एक सुन्दर फौवारे के चारो ओर मखमली मसनद लगे हुए थे। खोजा ने क्रिज़ापोलिस से वहाँ ठहरने के लिए कहा और स्वय भीतर चला गया।

क्रिज़ापोलिस इस चक्कर मे पडा हुआ आकाश-पाताल की बाते सोच रहा था कि उसे किस उद्देश्य से बुलाया गया है और ऐसे सुन्दर और एकान्त स्थान में किसकी प्रतीक्षा के लिए ठहराया गया है ? सहसा एक लम्बे कद की आश्चर्यजनक सौन्दर्यमयी महिला उसके पास आकर खडी हो गई। उसकी चमकती हुई आँखो से तीव्र क्रोध का भाव झलक रहा था। उसका रूप-रग और वेषभूषा देखकर क्रिज़ापोलिस समझ गया कि वह या तो पाशा की प्रधान पत्नी है या उसकी विशेष प्रेम-पात्री। उसने तत्काल घुटने टेक-कर, छाती पर अपने दोनो हाथ रखकर मस्तक नवाया। पर एक तीव्र

अट्टहास से चकित होकर उसने अपना सिर ऊपर उठाया और जब उस महिला ने अपने चेहरे पर से बुर्का हटा लिया तो उसे देखकर क्रिजा-पोलिस के आतक की सीमा न रही। उसने विभ्रान्त होकर देखा कि उसकी परित्यक्ता पत्नी विटेस्का—जिसे उसने किसी के हाथ बेच दिया था, उसके सामने खडी महिला—ने प्रश्न किया—"क्या तुम मुझे पहचान रहे हो ?"

"विटेस्का !"

"हाँ, तुमसे विवाह होने के समय मेरा यही नाम था। पर अब मैं पाशा की पत्नी हूँ और इस समय मेरा नाम है सलीमा। तुमने कभी यह आशा नही की होगी कि मुझसे फिर कभी तुम्हारी भेट होगी। नीच ! पापी ! तुम्हे तनिक भी लज्जा नही मालूम हुई जब तुमने वार्ना मे एक बूढे अधमरे यहूदी के हाथ मुझे बेचा ! पर भाग्य ने मेरा साथ दिया और जैसा कि तुम देख रहे हो, अब मै सुख और समृद्धि से घिरी हुई हूँ, और मेरे हाथ मे इस समय बडी भारी शक्ति है। कहो, तुम्हारे कर्मों का क्या पुरस्कार मै तुम्हे दूँ ?"

क्रिजापोलिस अपनी विवशता देखकर सलीमा के चरणो मे अपना मस्तक रखकर दडवत् लेट गया। उसके मुँह से एक भी शब्द नही निकल पाता था। दया की भीख माँगने का भी साहस उसे नही होता था। वह जानता था कि विटेस्का को धोखा देकर उसने जो भयकर अपराध किया है, वह अक्षम्य है।

सलीमा कहती गई—"तुम्हारे लिए मृत्यु का दड भी कम है। इस समय तुम पूर्णरूप से मेरे अधिकार मे हो और मैं जैसा चाहूँ वैसा दड तुम्हें दे सकती हूँ। पाशा ने इस सम्बन्ध मे मुझे स्वतन्त्रता दे दी है। मैं तुम्हें शूली पर चढाकर तुम्हारी कष्टकर मृत्यु को अपनी आँखो से देखकर प्रसन्न होना चाहती हूँ, यद्यपि यह दड भी उस घोर अपमान के लिए यथेष्ट नही

है, जो मुझे वर्षों तक तुम्हारी काली करतूत के कारण झेलना पड़ा है।"

क्रिजापोलिस यह सुनकर दोनो हाथ जोडकर चिल्ला पडा—"दया करो विटेस्का! मुझ पर दया करो!" उसका सारा शरीर भयकर रूप से सिहर रहा था।

पर सलीमा ने एक अट्टहास से उसकी बात का उत्तर दिया। उस अट्टहास मे एक ठुकराये गये नारी-हृदय की तीव्र वेदना का स्वर प्रचड प्रतिहिंसा के ताल मे बज रहा था।

पर वह नीच-हृदय व्यापारी अत्यन्त करुण विलाप के स्वर मे दया की प्रार्थना करता जाता था। अन्त में सलीमा ने कुछ पिघलकर कहा —"अच्छी बात है, दुष्ट पापी! मै तुम्हे प्राणो की भिक्षा देती हूँ। पर बिना दड दिये किसी दशा मे नही छोड़ूँगी।" यह कहकर उसने ताली बजाई। तत्काल चार भयकर आकृतिवाले हब्शी दास सामने आकर खडे हो गये। उन्होने तत्काल सलीमा के भूतपूर्व-पति को पकड़कर उसके हाथ-पाँव बाँध दिये।

सलीमा ने कहा—"मैने अपना विचार बदल डाला है। स नीच को अब मृत्यु दड नही दिया जायगा। पर उसकी पीठ पर कसकर सौ कोडे लगाओ। मै खडी रहूँगी और कोडो की सख्या गिनूँगी।

क्रिजापोलिस आर्तभाव से चिल्ला उठा—"ईश्वर के लिए ऐसा न करो। मैं सहन नही कर सकूँगा।"

सलीमा ने अत्यन्त रूखे ढग से कहा—"मै अब किसी हालत में भी अपने आदेश को वापस नही ले सकती। यदि सौ कोडे पडने से तुम्हारी मृत्यु हो जाय तो समझ लेना होगा कि तुम्हारे भाग्य को यही स्वीकार था।"

यह कहकर वह मसनद से अपनी पीठ अडाकर आराम के साथ बैठ

गई, एक दासी हुक्का भरकर ले आई और सलीमा धीरे से गुडगुडाते हुए पीने लगी। उसकी आज्ञा से दासो ने क्रिज़ापोलिस को एक खम्भे से बाँध दिया और तब उस पर भयकर रूप से कोडो की मार पडने लगी। दसवी चोट पडते ही दण्डित व्यक्ति एक जगली जानवर की तरह चिल्लाने और धाड़े मारने लगा। पर उसकी अपमानिता और प्रतिहिंसा-परायण पूर्व पत्नी उससे तनिक भी विचलित नही हुई और शान्त भाव से हुक्का पीती हुई धुआँ उडाती रही। वह अपने भूतपूर्व पति के मुख की ऐंठी हुई नसो से असह्य वेदना के चिह्न प्रकट होते देख एक प्रकार का अस्वाभाविक सुख प्राप्त कर रही थी। कुछ समय बाद क्रिजापोलिस की यह दशा हो गई कि उसके मुँह से कराहने का शब्द भी ठीक तरह से नही निकल पाता था। अन्त में वह अधिक न सह सकने के कारण मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।

* * * *

एक वर्ष बाद आँस्ट्रिया के एक शहर मे क्रिज़ापोलिस कुछ ऐसी स्त्रियो के साथ गिरफ्तार कर लिया गया, जिन्हें वह व्यापार के लिए किसी दूर देश में ले जाना चाहता था। अदालत मे उसने अपने सब पापो को स्वीकार कर लिया। उसके बयान से विटेस्का के माता-पिता को अपनी खोई हुई लडकी का समाचार मिला। उन्हे जब मालूम हुआ कि वह पाशा के यहाँ राजरानी बनी हुई है तो उन्होने उसे वापस बुलाकर उसके सुख में बाधा डालना उचित न समझा।

विटेस्का का भूतपूर्व पति कुछ समय बाद जब जेल से छूटा तो उसे सीमाप्रान्त के पार भेज दिया गया। पर वह ऐसा घाघ निकला कि अधिकारियो की आँखें बचाकर फिर से स्त्रियो का व्यापार नियमित रूप से करने लगा। पुलिस उसके कूटचक्रो से तग आ गई; पर उसे दूसरी बार गिरफ़्तार करने में किसी प्रकार भी वह सफलता प्राप्त न कर सकी।

सर्कस की सुन्दरी

लुई-द-आरादेल ने एक स्वप्न देखनेवाले व्यक्ति का-सा भाव अपने मुखपर झलकाते हुए कहा—"जब मैंने उस सुन्दरी को पहले-पहल देखा, तब एक प्रेमोन्मादकारी गीत की स्मृति मेरे मन मे जाग पडी, जिसे मैंने पहले कभी सुना था। उस गीत मे एक सुकेशिनी स्त्री का वर्णन किया गया था, जिसके बाल रेशम के समान सुकोमल और सुनहले थे। उसकी मृत्यु के बाद उसके प्रेमिक ने उन बालो को कटवाकर उनसे अपने वायलिन के लिए जादू की एक कमाँच तैयार करवाई। कहा जाता है कि उस जादू भरी कमाँच से जो रागिनी निकलती थी, वह ऐसी करुण और स्वर्गीय होती थी कि उसे सुननेवाले मृत्यु-पर्यन्त प्रेमरस मे मग्न रहते थे।

"उस गीत मे जिस सुन्दरी का वर्णन था, वह केवल कवि की कल्पना थी, पर मैंने अपनी आँखो से जिस सुन्दरी को देखा, वह उस कल्पना को सत्य का रूप दे रही थी। उसकी आँखो मे अपार सागर के अतल नील जल का रहस्य छलक रहा था, जिसकी गहराई मे सदा के लिए मग्न हो जाने की इच्छा जगने लगती थी। उसके मुख के स्थिर शान्त और निर्मम भाव से यह झलकता था कि प्रेम की बाढ के बीच में रहने पर भी उसका हृदय एक किशोरी कुमारी की तरह निर्लिप्त और निर्विकार है। उसका रूप-रग और आकृति-प्रकृति देखकर मुझे गिरजो में चित्रित स्वर्गीय देवियो के चित्रो का स्मरण हो जाता था।

"बडे-बडे प्रतिष्ठित पुरुष उस पर मुग्ध थे; पर उन सब से हेलमेल बढाने पर भी उसने कभी अपना शरीर किसी को अर्पित नही किया। जब वह

बाहर निकलती तो बहुधा अकेली रहती और उसकी प्रत्येक गति-विधि और हाव-भाव से ऐसा व्यक्त होता था जैसे वह जीवन की एकरसता से उकता गई है। उसका नाम 'लिली लाला' कैसे पडा यह कोई नही जानता। मैं उसका भक्त बन गया था। कभी-कभी मैं हँसी के लिए उसके चरणो पर घुटने टेककर गिडगिडा पडता और कहता—"देवी लिली, इस पापी का उद्धार करो!"

"एक दिन पोर्त-वियो के समुद्र-तट पर हम दोनो खडे थे और सागर की उत्ताल-तरग-मालाओ की अठखेलियो का निरीक्षण कर रहे थे। लिली बीच-बीच मे अपने बाये पाँव के जूते की एडी से बालू पर छेद करती जाती थी। उस दिन उसके मुख मे रहस्यपूर्ण, अनमना-सा भाव मैंने देखा। अकस्मात् किसी अज्ञात कारण से उसकी भावुकता उमड पडी और वह अपनी जीवन-कथा सुनाने लगी —"

"मेरा जीवन किसी धर्म-पुस्तक का नही, बल्कि एक नाटक का विषय बन सकता है। अपने बचपन के प्रारम्भिक दिनो की जो धुँधली-सी स्मृति मेरे मन मे कभी-कभी जग उठती है, उससे मैं केवल इतना अनुमान लगा पाती हूँ कि एक स्त्री मुझे प्राय सब समय अपनी गोद मे लिए रहती थी और बार-बार बडे लाड और दुलार मे मेरा मुँह चूमती रहती थी। वे चुम्बन ऐसे मीठे थे कि उनकी मधुरता का अनुभव मै अभी तक करती हूँ, और उनकी स्मृति मैंने अपने हृदय-मदिर के एक गुप्त और पवित्र स्थान में सुरक्षित रख छोडी है, जैसे कोई किसी सुफलदायक तावीज को बडे यत्न से सँभालकर रखता है। जब कभी मैं शीशे में कुछ देर तक ध्यान-पूर्वक अपना मुख देखती हूँ तब उस स्त्री की मुखाकृति मेरे स्मृति-पट मे अंकित होने लगती है, जिसने छुटपन में अपने हृदय का सारा प्यार मुझ पर न्योछावर कर दिया था। मुझे ऐसा लगता है कि निश्चय ही उस स्नेहमयी

स्त्री का रूप-रंग मुझसे मिलता-जुलता था। पर बाद में वह कहाँ चली गई ? मुझे कुछ भी याद नहीं आता ।

"क्या किसी बेईमान नौकर ने मुझे किसी सर्कसवाले के हाथ बेच दिया था ? मैं इस सम्बन्ध में अभी तक कुछ नहीं जानती। पर इतना मुझे निश्चित रूप से स्मरण है कि मेरा सारा बचपन एक सर्कस में बीता, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में चक्कर लगाता रहता था। मैं एक नन्हे-से जीव के समान छोटी थी और मुझे बहुत कठिन-कठिन कलाबाजियाँ सिखाई जाती थीं। कसे हुए रस्से पर मुझे नाचना सिखाया जाता और ढीले रस्से पर कसरत करना। बात-बात में सर्कसवाले मुझे बुरी तरह पीटते रहते थे, जैसे मैं मनुष्य नहीं, पलस्तर थी। खाने के लिए मुझे सूखी रोटी के एक टुकड़े के अतिरिक्त और कुछ न मिलता। मुझे याद है, एक दिन मैंने चुपके से एक प्लेट शोरबा चुराया जिसे सर्कस के मसखरे ने अपने कुत्तों के लिए तैयार किया था।

"न मेरे कोई सगे-सम्बन्धी थे, न संगी-साथी। मैं कुत्ते से भी गई बीती समझी जाती थी, और मुझसे गन्दे से गन्दे काम करवाये जाते थे। कूड़ा-करकट बटोरने और मैला उठाने तक का काम मैं करती थी। तिस पर मार ऐसी पड़ती थी कि मेरे सारे शरीर में चोटों के चिह्न भरे पड़े थे। सर्कस के सब कर्मचारियों में एक व्यक्ति ऐसा था, जो मुझे सबसे अधिक पीटता था। वह व्यक्ति सर्कस का मालिक भी था और मैनेजर भी। वह अत्यन्त निर्ममता के साथ मुझे मारता रहता था। मुझे बात-बात में असह्य कष्ट पहुँचाने में उसे एक प्रकार का पाशविक सुख-सा प्राप्त होता था। उसकी आकृति-प्रकृति एक बीभत्स जन्तु के समान थी। प्रत्येक व्यक्ति उससे बाघ के समान डरता था। वह जैसा ही जालिम था वैसा ही कंजूस भी था। एक एक

पैसे के लिए वह अपने कर्मचारियो के साथ लडता-झगडता रहता था।

"उस मनुष्यरूपी पशु का नाम था राफा जिनेस्टस। उसके अमानुषिक अत्याचार और राक्षसी मार को सहन करते हुए जीवित रह सके, ऐसा बच्चा मेरे अतिरिक्त और कोई हो सकता है, इस बात की कल्पना मैं नही कर पाती। मेरे भीतर न जाने कौन-सी ऐसी अज्ञात शक्ति वर्त-मान थी, जिसने ऐसे कठोर वातावरण मे भी मुझे जीवित रक्खा। मैं केवल जीवित ही नही रही, बल्कि दिन पर दिन मेरा स्वास्थ्य पुष्ट होता गया और सुन्दरता बढती गई। जब मेरी अवस्था पन्द्रह वर्ष की हुई, तो मेरे सौन्दर्य ने पुरुषो को आश्चर्यजनक रूप से चकित कर दिया। मेरे पास प्रेम-पत्र आने लगे और सर्कस के दर्शक समय-समय पर मेरे ऊपर गुलदस्ते फेंकने लगे। जब मैं रस्से पर कलाबाजियाँ दिखाती थी तब प्रत्येक दर्शक की वासना-मुग्ध आँखे एकटक मेरी ओर लगी रहती थी।

"सर्कस के कर्मचारियो का व्यवहार अब मेरे प्रति एकदम बदल गया था। प्रत्येक कर्मचारी मेरे साथ बातें करके अपने को सातवें स्वर्ग में पहुँचा हुआ पाता था। मै स्वर्ग की देवी के समान किसी को अपने कृपा-कटाक्ष से कृतकृत्य कर देती थी, किसी को अपनी मुसकान से उपकृत करती थी। पर इससे अधिक घनिष्ठता का सम्बन्ध किसी के साथ मैंने कभी स्थापित नही किया।

"राफा जिनेस्टस मुझ पर सबसे अधिक मुग्ध हो गया था। मैं स्पष्ट देखती थी कि जब वह मेरे पास आता था तब उसका हृदय किसी विकल पुलकपूर्ण अनुभूति से कम्पित होने लगता था। वह घोर अत्याचारी राक्षस, जिसने अपने निष्ठुर व्यवहार से मेरे शैशव-जीवन को विषमय बनाने में

कोई बात नही उठा रक्खी थी, अब मेरा दास बनकर अत्यन्त विनम्रता से मेरे आगे खड़ा रहता था। चूँकि उसके प्रति मेरे मन मे एक भयकर घृणा और प्रचण्ड विद्वेष का भाव वर्तमान था, और मैं बचपन में अपने प्रति किये गये अत्याचारो का बदला लेना चाहती थी, उसे उसी प्रकार की पीडाओं का अनुभव कराना चाहती थी, जिनका अनुभव उसने मुझे कराया था। इसलिए मैं निरन्तर अपने कटाक्षो और हाव-भावो से उसका मर्म जलाती रहती थी। पर एक क्षण के लिए भी उसे घनिष्ठता बढाने नही देती।

"मेरे रूप-रग, हाव-भाव, कटाक्ष-विक्षेप और बात-व्यवहार ने उस पर जादू का-सा प्रभाव डाल दिया था, और वह सब समय एक पागल मनुष्य की तरह मेरी छाया का अनुसरण करता रहता। पर मैंने इगितो और सकेतो से उसे यह जता दिया था कि यदि वह बहुत आगे बढ़ने का प्रयत्न करेगा, तो उसे बुरा फल भोगना होगा। इसलिए वह एक आज्ञाकारी कुत्ते की तरह दूर ही से अपनी प्रेम-लालसा व्यक्त किया करता था।

"वास्तव मे मेरे प्रेम ने उस कञ्जूस बुड्ढे को उन्मादग्रस्त, विकल और अशक्त बना दिया था। उस भयकर प्रेम-वेदना से अपने सँभालने की इच्छा-शक्ति उसमे शेष नही रह गई थी। मैंने उसे अधर पर लटका रक्खा था, और उसे जिस ओर चाहती थी उस ओर घुमाती थी। बुड्ढा अपने उन्मत्त प्रेम की चरितार्थता की विफल आशा मे दिन पर दिन घुलता जाता था, और सर्कस चलाकर रुपया जोडते रहने की मोहाकाक्षा अब नही रही थी। अब सर्कस की वास्तविक प्रबन्धकर्त्री मैं थी और वह मेरा एक नौकर-मात्र था! मैंने उसे कभी ऐसा भाव नही दिखाया जिससे वह मेरा प्रेम पा सकने की आशा एकदम छोड दे। मैं चालाकी के साथ उसे जान-बूझकर ऐसी दुविधा मे रखती, जिससे उसके मन मे यह आशा बनी रहे कि

भविष्य के किसी अज्ञात शुभ-दिन मे उसकी प्रेमाकाक्षा चरितार्थ हो सकती है। पर साथ ही उसे कभी इस वात की आज्ञा तक न देती थी कि वह मेरी उँगली को अपने ओठो से लगावे। वह केवल मेरे जूतो का स्पर्श करके रह जाता था।

"वह प्रेम-पागल वुड्ढा दिन पर दिन क्षीण से क्षीणतर होता चला गया, और उसकी वुद्धि भी धीरे-धीरे लोप-सी होती चली गई। जव वह आँखो में आँसू भरकर मेरे साथ विवाह करने का प्रस्ताव करता, तव मैं अट्टहास से उसकी वात का जवाव देती। मैं उसे प्रतिवार इस वात की याद दिलाती कि उसने मेरे वचपन के दिनो मे मुझे किस निर्दयता के साथ पीटा है, गालियाँ दी है, अपमानित किया है और मेरे मन मे जीवन के प्रति विराग उत्पन्न किया है। मेरे इस प्रकार के उत्तर से अत्यन्त पीडित होकर वह हताश प्रेमिक शराव की वोतले खाली करके अपने दु ख को मदिरा-सागर में डुवाने का विफल प्रयत्न करता।

"उसने मुझे मणि-मोतियो से लाद दिया, और मुझे अपनी पत्नी वनाने की चेष्टा मे कोई वात उठा नही रक्खी। पर उसका प्रत्येक प्रयत्न निष्फल सिद्ध होता था, यद्यपि मै उसे आशा की वशी मे मछली की तरह फाँसकर ढील देती रहती थी। अन्त मे एक दिन मैंने वड़ी चतुराई से उसे फुसलाकर एक वड़ा कार्य सिद्ध कर लिया। उसने अपने हाथ से लिखकर अपना वसीयतनामा तैयार किया, जिसमे उसने अपनी सारी सम्पत्ति, सर्कस-सहित, मेरे नाम लिख दी।

"तव हम लोग मास्को के पास डेरा डाले हुए थे। जाडे के दिन थे, वाहर निरन्तर वर्फ गिरती चली जा रही थी। सध्या का समय था। मै राफा जिनेस्टस के साथ वैठकर उसके साथ भोजन कर रही थी और वीच-वीच में उसे शराव पिलाती जाती थी। मै उससे वडी मीठी-मीठी

बाते कर रही थी, और गिलास खाली होते ही उसे तत्काल भर देती थी। वह भी प्रेमोन्मत्त होकर शीघ्र-शीघ्र गिलास को खाली करता जाता था। धीरे-धीरे प्रेम और मदिरा के सम्मिलित नशे ने उसके शरीर और मस्तिष्क को ऐसा विवश कर दिया कि वह अचेत होकर कुर्सी पर से नीचे गिर पडा, जैसे उसके सिर पर अचानक गाज गिर गई हो।

"रात काफी हो चुकी थी, और सर्कस के दूसरे कर्मचारी सब अपने-अपने पलग पर सो गये थे। कही कोई शब्द नही सुनाई देता था, और एक भयावना सन्नाटा चारो ओर छाया हुआ था। वर्फ के बडे-बडे टुकडे निरन्तर सफेद फूलो की वर्षा करते जाते थे। मैंने कमरे की बत्ती बुझा दी और दरवाजा खोलकर शराब के नशे में बेहोश पडे हुए बुड्ढे के दोनों पाँव पकडकर, घसीटकर उसे दरवाजे के पास ले गई और वहाँ से मैंने उसे बाहर वर्फ से ढँकी हुई जमीन पर ढकेलकर फेक दिया।

"दूसरे दिन वह ठढ से अकडकर मरा पडा पाया गया। चूँकि सभी जानते थे कि वह सब समय शराब के नशे मे चूर रहता है, इसलिए किसी ने उसकी मृत्यु के सम्बन्ध मे किसी प्रकार का सन्देह प्रकट नही किया। इस प्रकार मैंने उस पापात्मा के अत्याचार का बदला चुकाया। वसीयतनामे के अनुसार मुझे जो सम्पत्ति मिली उससे मेरी वार्षिक आय बारह हजार रुपये के लगभग हो गई। मेरा तो यह विश्वास है कि ऐसे नीच व्यक्तियो के साथ भलमनसाहत का बर्त्ताव करना एक दुर्बल भावुकता के अतिरिक्त और कुछ नही है।"

हबशी तरुणी

आत्वान ब्वातेल ने घूरे, पनाले, खत्ते आदि की सफाई के काम मे विशेषज्ञता प्राप्त कर ली थी । इस प्रकार के कामो के लिए वह प्रसिद्ध हो चुका था। वह रात के समय काठ के गन्दे जूते पहनकर, विशेष प्रकार के औज़ारो को साथ मे लेकर आता और काम मे जुट जाता। काम करते हुए वह बडबडाता रहता और यह शिकायत करता जाता कि भाग्य ने उसे ऐसे गदे काम में नियुक्त किया। जब लोग उससे यह प्रश्न करते कि इच्छा न होने पर भी वह क्यो इस प्रकार के कामो मे जुटा रहता है, तब वह उत्तर देता—"क्या करूँ, बालबच्चेदार आदमी हूँ, थोडे मे मेरे कुटुम्ब का निर्वाह नही होता। इस तरह के कामो के लिए कुछ अधिक मजूरी मिलती है, इसलिए मै उन्हे स्वीकार कर लेता हूँ।"

उसके बाल-बच्चो की सख्या चौदह थी। उनके सम्बन्ध मे जब उससे प्रश्न किया जाता, तब वह उदासीनता के साथ उत्तर देता—"घर मे केवल आठ बच्चे रह गये है। एक नौकरी पर गया हुआ है और पाँच विवाहित है।"

जब प्रश्नकर्त्ता यह पूछता कि क्या पाँचो का विवाह अच्छे घरों मे हुआ है ? तो वह तत्काल उत्तर देता—"पाँचो ने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार विवाह किया है । मै किसी की रुचि मे दखल देना उचित नही समझता। विवाह के विषय मे किसी की व्यक्तिगत इच्छा का विरोध करने से बडा बुरा परिणाम हो सकता है । मुझे आज भगी

का पेशा इसलिए करना पड रहा है कि मेरे माता-पिता उस लड़की से मेरा विवाह करना नही-चाहते थे जिसे मैंने अपनी इच्छा से पसन्द किया था।"

ब्वातेल के पूर्व जीवन का इतिहास इस प्रकार था :—

वह तब हावर नामक बन्दर मे एक सिपाही के पद पर नियुक्त था। छुट्टी का समय वह समुद्र के-किनारे लगनेवाले बाज़ार मे टहलकर बिता देता था। उस बाज़ार मे चिडियो के व्यापारी इकट्ठा होते थे। ब्वातेल को सुग्गे बहुत पसन्द थे। वहाँ देश-देशान्तर से आये हुए विभिन्न रूप-रगो के सुग्गो और तोतो का निरीक्षण करने मे उसका समय बड़े आनन्द से कट जाता था। वह प्रत्येक तोते के पिजडे के आगे कुछ समय तक खडा रहता और उनकी तरह-तरह की बोलियाँ सुनकर उसके हर्ष का ठिकाना न रहता। कभी वह किसी सुग्गे के आगे मुँह चिढ़ाता, कभी एक विचित्र शब्द मुँह मे निकालकर उस सुग्गे से उसे दुहराने के लिए कहता। कोई सुग्गा उस शब्द को दुहरा देता, कोई शान से अकड-कर 'किचिर-मिचिर' करके उसे दुतकार देता।

वह बहुधा चिडियो के उस मार्केट मे आया-जाया करता। एक बार जब वह उसी मार्केट में दक्षिण अमेरिका के एक बहुत बडे सुग्गे के पास खडा था, और उसके फैलाये हुए पखो की बहार देखने मे निमग्न था, तब उसने चिडियो की उस दुकान की बगलवाली दुकान से एक युवती हबशिन को बाहर निकलते देखा। उस हबशी लड़की के सिर पर एक रेशमी रूमाल बँधा था। वह दुकान का कूडा-करकट झाड-बुहारकर बाहर फेक रही थी। उसे देखते ही ब्वातेल का ध्यान बट गया। वह एक बार सुग्गो की ओर देखता था, एक बार हबशिन की ओर। दोनों ही समानरूप मे उसका ध्यान-आकर्षित कर रहे थे।

हवशी नवयुवती जब कूड़ा-करकट फेंक चुकी, तब उसने अपना सिर ऊपर को उठाया। ब्वातेल की ओर उसकी दृष्टि पड़ते ही उसे एक सिपाही के भड़कीले पहनावे से सुसज्जित देखकर वह भी गौर से उसे देखने लगी। वह हाथ में झाड़ू लेकर उस अपरिचित के सामने खड़ी रह गई। उसे देखकर ऐसा लगता था कि जैसे उसके हाथ में झाड़ू नहीं बल्कि एक बन्दूक है, जिसे वह उस बाँके सिपाही को भेंट के रूप में प्रदान करना चाहती है। ब्वातेल उस हवशी सुन्दरी का ध्यान अपनी ओर केन्द्रित देखकर कुछ झेंप-सा गया और धीरे-धीरे वहाँ से हटकर चला गया।

तब से ब्वातेल नित्य नियमितरूप से शराब की दुकान के पास से होकर गुजरता था जहाँ वह हवशी नवयुवती काम करती थी। वह मल्लाहों के गिलासों को ब्राण्डी से भरती जाती थी। ब्वातेल की ओर जब उसकी दृष्टि जाती, तब वह बहुधा बाहर दरवाजे पर आकर खड़ी हो जाती। एक-दूसरे से परिचित न होने पर भी दोनों चार आँखें होने पर मन्द-मधुर मौन मुसकान से एक-दूसरे का स्वागत करते। ब्वातेल जब लड़की के काले-काले ओठों से सफेद दाँतों की सुन्दर पंक्ति को चमकते हुए देखता, तब उसके सहृदय में एक मीठी टीस सी उठती।

अन्त में एक दिन उसने साहसपूर्वक पान-शाला के भीतर प्रवेश किया। उसके आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने देखा वह हवशी तरुणी बहुत सुन्दर, स्पष्ट और शुद्ध फ्रेंच भाषा में बातें करती है। उसने सोचा था कि वह अफ्रीका के किसी जंगल की भाषा बोलती होगी। उसने लेमनेड का आर्डर दिया और उस लड़की को भी उसमें से एक गिलास पीने के लिए आमंत्रित किया। लड़की प्रसन्नतापूर्वक राजी हो गई। इस साधारण घटना की मधुर-स्मृति बहुत दिनों तक ब्वातेल के

मन में बनी रही। धीरे-धीरे वह उस पान-शाला मे आकर कुछ-न-कुछ पीने का आदी हो गया।

जब वह हबशी लडकी को अपने सुन्दर काले-काले हाथो से गिलास में बोतल को खाली करते हुए और साथ ही अपने सफेद दाँत बाहर करके मुस्कराते देखता, तब उसका हृदय पुलकाकुल हो उठता। प्राय. दो महीने तक पान-शाला मे ब्वातेल का आना-जाना रहने से दोनो मे गाढी मित्रता हो गई। इस घनिष्ठता के कारण ब्वातेल को सबसे अधिक महत्वपूर्ण अनुभव यह हुआ कि वह हबशी लडकी, जिसे वह पानशालाओ की प्राय सभी लडकियो की तरह शिथिल-चरित्र समझे बैठा था, वास्तव मे बडी सदाचारिणी शुद्ध-स्वभाव और कट्टर धार्मिक निकली। इस बात से उसके हृदय मे उस लडकी के प्रति प्रेम के साथ ही श्रद्धा का भाव भी उत्पन्न हो गया। उसने उसके साथ विवाह करने का निश्चय कर लिया।

एक दिन उसने अपना विचार लडकी के आगे प्रकट करने का साहस किया। इस प्रस्ताव से वह अत्यन्त हर्षित हो उठी। इस हबशी लडकी के पास कुछ रुपया भी जमा था, जो उसे उसकी स्वर्गीया मालकिन से मिला था। उसकी वह मालकिन सीपो का व्यापार करती थी। जब उस लडकी की अवस्था केवल छ वर्ष की थी, तब किसी अमेरिकन जहाज़ के कप्तान ने उसे हावर के समुद्री किनारे की सडक के एक कोने मे रखकर अनाथ अवस्था मे छोड़ दिया था। वास्तव मे कप्तान ने उसे अपने जहाज़ में रूई की गाँठो के ढेर के बीच मे पडा पाया था। वह कैसे जहाज़ मे आ घुसी थी, इस रहस्य का कुछ भी पता वह नही लगा पाया था। कुछ भी हो, जब पूर्वोक्त सीप बेचनेवाली स्त्री ने उस लडकी को सडक के एक कोने में अनाथ अवस्था में रोते हुए

पाया, तब उसके हृदय मे ममता जगी। वह निस्सन्तान थी। उसने अपने घर लाकर उस काली लड़की को पाला, पोसा और बडा किया। अन्त मे जब उसकी मृत्यु हुई तब वह हब्शी लडकी उस पान-शाला मे आकर नौकरी करने लगी जहाँ ब्वातेल ने उसे देखा था।

. ब्वातेल ने उससे कहा—"मेरे माता-पिता यदि इस सम्बन्ध मे किसी प्रकार का विरोध प्रकट न करे, तो मैं अवश्य तुमसे विवाह करूँगा। पर उनकी इच्छा के विरुद्ध मे कुछ नही करूँगा—इस बात की सूचना मै तुम्हे पहले ही दिये देता हूँ! मै इस बार जब घर जाऊँगा, तब उनसे अवश्य ही दो-एक शब्द इस सम्बन्ध मे कहूँगा।"

दूसरे सप्ताह वह चौबीस घटे की छुट्टी माँगकर घर चला गया। उसके माता-पिता तूर्तविल नामक गाँव में खेती करते थे। माता, पिता और पुत्र, तीनो एक साथ भोजन करने बैठे। भोजन समाप्त होने तक ब्वातेल कुछ नही बोला। भोजन के बाद तीनो कहवे मे ब्राण्डी मिलाकर पीने लगे। इस मिश्रित पानीय की मीठी मादकता ने ब्वातेल के भीतर साहस उत्पन्न कर दिया। उसने धीरे-धीरे अपने माता-पिता को यह सूचित करना प्रारम्भ किया कि उसका परिचय एक ऐसी लडकी के साथ हो गया है, जो सब प्रकार से उसकी रुचि के अनुकूल है, और ससार में और कोई दूसरी लड़की उसके आगे उसे पसन्द नही आ सकती।

उसके बूढे माँ-बाप ने उसकी यह बात सुनते ही गम्भीर रूप धारण कर लिया, और वे बडी सावधानी से उसमे उसकी मनोनीत लडकी के कुल-शील, रूप-रग और ढग-ढच्चर के सम्बन्ध मे प्रश्न करने लगे। ब्वातेल ने लडकी के रग को छोडकर और कोई बात अपने वृद्ध माता-पिता के आगे न छिपाई। साथ ही वह इस बात पर बार-

बार ज़ोर देता रहा कि लडकी बड़ी सदाचारिणी और सुशील है, और घर-गिरस्ती के काम-धंधो मे बडी निपुण है। इसके अतिरिक्त वह इस बात का उल्लेख करना न भूला कि लडकी के पास प्राय. एक हज़ार रुपया जमा है, जो उसकी मालकिन उसके लिए छोड़ गई थी।

इन बातो से उसके माँ-बाप राज़ी होने का क्षीण आभास प्रकट करने लगे थे। ऐसे अवसर पर ब्वातेल ने उस मार्मिक विषय पर प्रकाश डालने का साहस किया जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था। संकोचपूर्ण हास्य के साथ उसने कहा—"केवल एक बात उसमें ऐसी है, जो तुम लोगो को पसन्द नही आ सकती, वह यह कि वह गोरी नही है।"

यह बात वृद्ध पति-पत्नी की समझ में तनिक भी नही आई। ब्वातेल ने बडे ढग से उन्हे समझाने की चेष्टा की, जिससे वे एकदम चौंक न पडे। उसने कहा कि वह लडकी 'साँवरी' जाति की है।

उसकी माता चकित होकर बोल उठी—"तुम्हारा तात्पर्य क्या यह है कि उसका रग काला है ? क्या उसके सारे शरीर का रग काला है ?"

"हाँ, ठीक जिस प्रकार तुम्हारा सारा शरीर गोरा है।"

उसके पिता ने प्रश्न किया—"क्या उसका रग जले हुए बर्तन की तरह काला है ?"

लडके ने उत्तर दिया—"शायद उससे कुछ कम काला होगा। वह काली अवश्य है पर ऐसी काली नही, कि उसे देखते ही घृणा उत्पन्न हो जाय।"

बाप ने फिर पूछा—"क्या उसके देश में उसकी अपेक्षा अधिक काले मनुष्य भी रहते है ?"

बेटे ने दृढ विश्वास के साथ कहा—"निश्चय !"

बुड्ढे ने अपना सिर हिलाते हुए कहा—"पर वास्तव म ऐसे व्यक्ति को देखकर घृणा उत्पन्न होनी चाहिए।"

"दो-चार वार देखने से अभ्यास हो जाता है, और घृणा का भाव चला जाता है।"

माँ ने कहा—"काले चमडेवाले व्यक्ति के कपडे भी शीघ्र ही काले पड जाते होगे?"

बेटा मुस्कराया; बोला—"उसके चमडे मे स्याही थोडे ही पुती रहती है। वह तो उसका स्वाभाविक रग है। तुम जब कोई काला कपडा पहनती हो, तव क्या वह सफेद हो जाता है?"

वहुत वाद-विवाद के वाद अन्त मे यह तय हुआ कि एक महीने वाद नौकरी समाप्त हो जाने पर जब ब्वातेल घर लौटेगा, तव उस काली लडकी को भी अपने साथ लेता आवेगा उसे देखकर बूढे माँ-वाप स्वयं उसकी परीक्षा करके और समाज के लोगो की सम्मति से परिचित होकर यह निश्चय करेंगे कि वह लडकी ब्वातेल-वश मे ग्रहण-योग्य है या नही।

रविवार, २१ मई के दिन आल्वान ब्वातेल की नौकरी समाप्त हो गई। उसी दिन वह अपनी प्रियपात्री को लेकर घर को चल पडा। हवशी लडकी ने अपने भावी सास-ससुर के पास जाने के लिए अपने अच्छे से अच्छे रगीन कपडे पहन लिये थे, और वडे सजाव-शृगार के साथ वह चली।

स्टेशन में और रेलगाड़ी मे जितने भी व्यक्तियो ने उस काली लडकी को रगीन वस्त्रो से सुसज्जित देखा, वे सब आश्चर्य से उसकी ओर आँखें गडाये रहे। चूँकि ब्वातेल उसके साथ स्वय भी आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था, इसलिए वह बडे गर्व का अनुभव कर रहा था। छोटे-छोटे

बच्चे उसे देखकर भयभीत हो उठते थे। एक बच्चा आतंकित होकर रो पडा, दूसरे ने मारे डर के अपनी माँ के अचल मे अपना मुँह छिपा लिया ।

कुछ भी हो, निर्दिष्ट स्टेशन तक पहुँचने तक आत्वान (ब्वातेल) प्रसन्न रहा। पर ज्यो-ज्यो गाडी उसके गाँव के पासवाले स्टेशन के निकट पहुँचती जाती थी, त्यो-त्यो आत्वान की बेचैनी और सकोच भी बढता चला जाता था । जब गाडी स्टेशन पर ठहरी, तो आत्वान ने दूर ही से अपने पिता को एक साधारण-सी गाडी पर बैठे और घोडे की रास पकडे हुए देखा। प्लेटफार्म के रेलिंग के पास उसकी माँ तथा गाँव के दूसरे लोग उसकी प्रतीक्षा मे खडे थे।

अपनी प्रियपात्री का हाथ पकडकर आत्वान नीचे उतरा और अपनी माँ की ओर बढा। उसकी माँ ने जब उस काली लडकी को रग-बिरगे वस्त्र पहने देखा, तब वह ऐसी भौचक्की रह गई कि एक शब्द भी उसके मुँह से नही निकल पाया। उसके पिता का घोडा एक तो इजिन से भयभीत हो उठा था, तिस पर गोरो की भीड़ के बीच मे एक घोर काले रग की लडकी को देखकर और अधिक चौक पडा था। आत्वान का पिता स्वय भी चौंका हुआ था, और घोडे को सँभालना उसके लिए कठिन हो रहा था। पर आत्वान अपने माँ-बाप को देखकर हर्षाकुल होकर दोनो के गले मिला। इसके बाद अपनी साथिन की ओर सकेत करते हुए उसने कहा—"यही वह लडकी है, जिसकी चर्चा मैने तुम लोगो से की थी। पहली बार देखने से निश्चय ही उसका रूप-रग कुछ निराला-सा लगता है, पर उसके शील-स्वभाव से परिचित होते ही तुम लोगो को पता लग जायगा कि इससे अधिक योग्य लडकी मेरे लिए ससार मे कोई दूसरी नही हो सकती। इससे स्नेहपूर्वक मिलकर कुशल-सवाद पूछो।"

माँ ने विभ्रान्त दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए अपना सिर हिलाकर उसका अभिवादन किया, और उसके पिता ने अपनी टोपी उतारकर कहा—"मै तुम्हारे सौभाग्य की कामना करता हूँ।"

आसपास के सब लोग चकित होकर वह विचित्र दृश्य देख रहे थे। वास्तव मे वैसे रूप-रगवाली उन्होने इसके पहले अपने जीवन मे कभी नही देखी थी।

तीनो व्यक्ति गाडी मे चढ बैठे। आत्वान की माँ और हवशी लडकी भीतर बैठी और आत्वान अपने पिता के साथ बाहर बैठ गया।

गाडी हिचकोले खाते हुए चलने लगी। चारो व्यक्ति काफी देर तक चुपचाप बैठे रहे। आत्वान का बाप घोडे को चाबुक मारकर हाँक रहा था और उसकी माँ तिरछी निगाहो से हवशिन की ओर देख रही थी, जिसके गाल और कपाल का रग धूप मे पालिश किये हुए काले जूते की तरह चमक रहा था।

आत्वान ने ही पहले-पहल उस स्तब्ध नीरवता को भग करते ए कहा—"सब लोग चुपचाप बैठे है, बात क्या है।"

बुढिया बोली—"कुछ समय भी तो चाहिए।"

आत्वान ने कहा—"अरे, आठ अडे देनेवाली मुर्गी का किस्सा ही सुना दो।"

यह ब्वातेल परिवार में प्रचलित बडा पुराना हास्योत्पादक किस्सा था। चूँकि आत्वान की माँ फिर भी चुप हो रही, इसलिए वह स्वय वह किस्सा सुनाने लगा। बीच-बीच मे वह स्वय बडे जोरो से हँसता जाता था। उसका पिता उस घटना से भली भाँति परिचित था, इसलिए बेटे का विवरण सुनकर उसके मुख में प्रसन्नता की झलक दिखाई देने लगी। धीरे-धीरे बुढिया के रूखे मुख मे भी मुसकान

खिलने लगी। और जब आत्वान ने कहानी का सबसे अधिक हास्यजनक भाग सुनाया, तो हर्बशिन ऐसे उच्चस्वर से अट्टहास कर उठी कि घोडा चौंककर तेजी से भागने लगा।

इस हास्य ने उन लोगो के बीच पारस्परिक परिचय का काम किया। धीरे-धीरे चारो व्यक्ति बाते करने लगे। घर के पास पहुँचने पर सब लोग उतर पडे। आत्वान ने अपनी प्रेमिका को एक एकान्त कमरा दिखा दिया। वहाँ उसने नये कपडे उतारकर साधारण कपडे पहने। इसके बाद आत्वान की इच्छा के अनुसार वह रसोई के कमरे मे जाकर एक विशेष प्रकार का स्वादिष्ठ व्यञ्जन तैयार करने लगी। आत्वान ने सोचा था कि पाक-कला मे हबशिन की निपुणता का परिचय पाकर उसके माँ-बाप पर अच्छा प्रभाव पडेगा।

जब हवशी लडकी खाना बना रही थी, तब आत्वान ने एकान्त में अपने माँ-बाप से पूछा—"उसे देखकर तुम लोगो ने क्या विचार निश्चित किया ?"

बाप ने कुछ भी उत्तर नही दिया। पर माँ ने स्पष्ट शब्दो में कहा—"यह तो बेहद काली है। नही, मै तो सहन नही कर सकूँगी। मुझे तो उसे देखकर उबकाई-सी आती है।"

"ऐसा होना स्वाभाविक है, पर कुछ ही समय के लिए। बाद मे तुम उसे चाहने लगोगी।"

यह कहकर आत्वान उन्हे रसोई के कमरे मे ले गया। हबशिन को खाना बनाते देख बुढिया के हृदय पर वास्तव में अच्छा प्रभाव पडा। वह भी उस काम में काली लडकी की सहायता करने लगी।

जब खाना तैयार हो चुका, तो चारो एक साथ बैठकर खाने लगे। वास्तव मे हवशी लडकी ने बहुत सुन्दर और स्वादिष्ठ भोजन

तैयार किया था। भोजन समाप्त होने पर आत्वान ने अपने पिता से कहा—"क्यो बाबू तुम्हारी क्या राय है ?"

बुड्ढा किसान यद्यपि अपने लडके को बहुत चाहता था, तथापि वह था बडा घाघ। वह अपने ऊपर किसी भी बात का उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहता था। उसने कहा—"मेरी राय कुछ भी नही है। अपनी माँ से पूछो।"

आत्वान अपनी माँ के पास गया और उससे भी उसने वही प्रश्न किया। माँ ने कहा—"बेटा, मै क्या कहूँ! वह बहुत ही काली है! यदि वह इससे कुछ कम काली होती, तो मै तुम्हें आज्ञा दे देती, पर वह तो भयकर रूप से काली और कुरूप है। उसे देखकर ऐसा जान पडता है वह साक्षात् शैतान की नानी है!"

आत्वान ने जब यह सुना, तब उसने किसी प्रकार का विरोध प्रकट नही किया। वह जानता था कि उसकी माँ जब किसी बात के सम्बन्ध में हठ करती है, तब फिर वह किसी तरह भी नही मनाई जा सकती। पर उसके हृदय मे निराशा का एक भयकर तूफान-सा मचने लगा। उसे इस बात पर बडा आश्चर्य हो रहा था कि क्यो उसके माँ-बाप उसी के समान उस लडकी के गुणो पर मुग्ध नही होते। उसे क्या करना चाहिए, किन उपायो को काम मे लाने से उसे सफलता मिल सकती है, इस सम्बन्ध मे वह आकाश-पाताल की बाते सोचने लगा।

चारो धीरे-धीरे खेतो की ओर चलने लगे। सबने फिर एक बार मौन धारण कर लिया था। गाँव के लोग चारो ओर से बडे कौतूहल के साथ आत्वान की काली प्रेमिका को देख रहे थे। उस असाधारण रूप-रगवाली हबशी तरुणी को देखने के लिए इधर-उधर से स्त्री-पुरुष,

बालक-वृद्ध सभी दौडे चले आ रहे थे। एक मेला-सा लग गया। आत्वान के बूढे माँ-बाप उन तमाशबीनो को देखकर घबरा उठे और अपने बेटे को उसकी प्रेमिका के साथ छोडकर तेज चाल से चलते हुए अलग खिसक गये।

आत्वान को एकान्त मे पाकर हबशी लडकी ने उससे पूछा कि उसके माता-पिता ने अपना क्या मत प्रकट किया ? आत्वान ने कुछ हिच-किचाहट के साथ उत्तर दिया कि उसके माँ-बाप अभी अपना कोई मत निश्चित नही कर पाये।

जब वे लोग बीच गाँव में पहुँचे, तब उत्सुक नर-नारियो का ताँता लग गया। चारो ओर से लोग उन्हे घेरकर खडे हो गये। आत्वान के माँ-बाप भाग खडे हुए। पर आत्वान यद्यपि उस गँवार जनता की बेहूदगी देखकर मन ही मन क्रुद्ध हो रहा था, तथापि बाहर से बडी शान और अकड के साथ अपनी काली सगिनी का हाथ पकडकर तनी हुई बन्दूको के समान सैकडो कुतूहली आँखो के बीच से होकर साफ निकल गया।

आत्वान समझ गया था कि उसके लिए अब कोई आशा नही रह गई है, और उसके विचित्र 'रोमांस' का अन्त हो चुका है। हबशिन भी समझ चुकी थी कि आत्वान से उसका विवाह नही हो सकता। जब वे मकान के पास पहुँचे, तब दोनो विह्वल होकर रोने लगे। कुछ देर बाद दोनो भीतर गये। हबशी लडकी ने फिर एक बार अपने नये कपडे बदलकर साधारण वस्त्र पहने और वह प्रत्येक काम में आत्वान की बढी माँ की सहायता करने लगी। वह कठिन से कठिन काम को महज स्वाभाविक और सुन्दर रूप से चुटकियो मे कर डालती थी। सब समय वह यही कहती जाती थी—"मादाम ब्वातेल, यह काम मैं

करूँगी; मादाम ब्वातेल, वह काम भी मैं करूँगी।" बुढिया यद्यपि उसकी इस कार्य-तत्परता और सुशीलता से कुछ पिघली, तथापि वह अपने हठ पर दृढ रही। जब रात हो आई, तब उसने अपने लड़के से कहा—"लडकी शील-स्वभाव की बहुत अच्छी है, सदेह नही; पर बहुत ही काली है! ऐसी काली लडकी के साथ मेरी नही निभ सकती।"

अन्त मे पूर्णत: निराश होकर आत्वान ब्वातेल ने अपनी प्रेमिका से कहा—"मेरी माँ किसी तरह भी राजी नही होती। वह कहती है कि तुम बहुत ही काली हो। इसलिए तुम्हें लौट जाना होगा। मै तुम्हें स्टेशन तक पहुँचा आऊँगा। इस विषय पर अधिक चिन्ता करना छोड दो। तुम्हारे चले जाने पर मै फिर एक बार इस सम्बन्ध में इन लोगों से बाते करूँगा।"

इसके बाद वह हबशी लडकी को स्टेशन मे पहुँचा आया। रास्ते भर वह उसे आश्वासन देता रहा। वह बिलख-बिलखकर रो रही थी। जब गाड़ी चल दी, तब आंत्वान एकटक आँखो से उस हताश लडकी के विषाद-म्लान मुख की ओर तब तक देखता रहा जब तक गाडी आँखो से ओझल न हो गई। स्वय उसकी आँखो की पलकें भी आँसुओ की अविरल धारा से भीगते रहने के कारण सूज उठी थी। घर लौटकर उसने फिर एक बार अपने माँ-बाप से कातर प्रार्थना की, पर कोई फल न हुआ।

आत्वान ब्वातेल अपने निराश प्रेम की कहानी सुनाने के बाद कहा करता—"तब से मेरा जी किसी भी काम मे, किसी भी व्यवसाय मे नही लगा। मैं निकम्मा बन गया। अन्त में बाध्य होकर मुझे यह पेशा करना पडा—रात में घूरो और पनालो की सफाई का काम करके मैं किसी प्रकार अपना और बाल-बच्चो का पेट पालता हूँ।"

जब लोग उससे कहते—"अन्त मे तुमने विवाह कर ही लिया !" तब वह उत्तर देता—"जी हाँ, विवाह किया और पत्नी भी मुझे कुछ बुरी नही मिली। पर उस हबशी लडकी से उसकी तुलना किसी भी रूप मे नही हो सकती। वह काली लडकी अपनी आँखो की केवल एक झलक से मुझे सातवे स्वर्ग मे पहुँचा देती थी !"

अभागा

उसने जीवन के कुछ अच्छे दिन भी देखे थे। पर जब उसकी अवस्था पन्द्रह वर्ष की थी, तब बारविल नामक स्थान मे उसके दोनो पाँव एक गाडी से कट गये थे। तब से वह भीख माँगकर अपना पेट पालने के लिए विवश हो गया। वह दोनो ओर से बैसाखी पकडकर, गर्दन और पीठ को काफी नीचे तक झुकाकर अपने शरीर को किसी प्रकार ढकेले लिये चलता और दर-दर भीख माँगता फिरता।

जब वह एक छोटा-सा बच्चा था, तब एक पादडी ने उसे एक खाई मे पडा हुआ पाया। सदावर्त से पलकर वह बडा हुआ था और उसकी शिक्षा का कोई प्रबन्ध नही हो पाया था। गाँव के एक नानबाई को उसने एक दिन एक हास्यजनक कहानी सुनाई थी, उस कहानी से प्रसन्न होकर नानबाई ने उसे इतनी अधिक ब्राण्डी पिला दी कि तब से उसका मस्तिष्क बेकार हो गया और आवारा बनने के अतिरिक्त उसके लिए और कोई चारा नही रह गया।

पहले गाँव की एक धनी और सम्भ्रान्त महिला उसे अपने मुर्गी-खाने के पास कुत्तो के रहने योग्य एक पुआल से भरी कोठरी मे सोने की आज्ञा दे दिया करती थी। उसी महिला के रसोईघर से उसे खाने को कुछ-न-कुछ अवश्य मिल जाया करता था। वह दयाशीला बुढिया कभी-कभी दो-चार पैसे भी उसे दे दिया करती थी। पर अब उसकी मृत्यु हो चुकी थी।

गाँव के लोग उससे तग आगये थे। अब कोई उस पर दया नही दिखाता था, और कही से रोटी का एक टुकड़ा मिलने की भी आशा अब उसे नही रहती थी। प्राय. चालीस वर्ष से वह प्रतिदिन उसी एक गाँव मे भीख माँगता फिरता था; इसलिए स्वभावत गाँववाले उसके प्रति एकदम उदासीन हो चले थे। उस एक गाँव को छोडकर पृथ्वी का और कोई दूसरा टुकडा उसने अपने जीवन में कभी नही देखा था। दो-एक बार उसने उस गाँव की सीमा को पार करने की चेष्टा अवश्य की थी, पर इस महान् चेष्टा मे वह सफल न हो सका। कारण यह था कि चिर-परिचित गाँव के बाहर की भूमि उसे एक अधकारमय भौतिक लोक के समान लगती थी और वह किसी अज्ञात भय से भीत होने के कारण गाँव की सीमा को पार करने का साहस नही कर पाता था।

गाँव के क्षितिज के उस पार पृथ्वी का और कोई अश है भी या नही, इस बात में भी उसके मन में सन्देह था। और जब गाँव के किसान लोग प्रतिदिन खेतो और खाइयो में उसे देखते रहने के कारण उससे उकता-कर यह कहते—"तुम किसी दूसरे गाँव में क्यो नही जाते? इतने वर्षों से तुम एक ही गाँव मे हो, अब दूसरे गाँवो में जाकर अपना पेट पालो।" तब वह इस बात का कोई भी उत्तर न देकर बैसाखियो के बल अपने को घसीटता हुआ चुपचाप आगे बढ जाता। अपरिचित स्थान और अपरि-चित व्यक्तियो की कल्पना-मात्र से उसका सारा शरीर भय से कट-कित हो उठता था।

पुलिस के किसी सिपाही को देखते ही उसके प्राण सूख जाते। दूर से ही जब वह किसी कान्स्टेबल की वर्दी को धूप में चमकते हुए देखता, तब उसमे एक आश्चर्यजनक स्फूर्ति न जाने कहाँ से आ जाती—पशु-सस्कार से प्रेरित एक भीत जगली जानवर की-सी स्फूर्ति! वह दोनो बैसाखियो के

सहारे अपने को नीचे गिराकर चिथडो की एक गठरी का-सा रूप धारण कर लेता और एक फुटबॉल के समान लुढकता हुआ, खरहे के समान पृथ्वी से अपने शरीर को प्राय' मिलाकर बेतहाशा भागा चला जाता। उस समय वह सिमटकर, सिकुडकर इतना छोटा बन जाता कि प्राय अदृश्य-सा हो जाता। वास्तव मे पुलिस के किसी भी सिपाही ने कभी उसे तग नही किया। पर अज्ञात भय की भावना उसके रक्त के प्रति क्षण मे जन्म से ही वर्तमान थी।

उसके रहने का कोई भी निश्चित स्थान कही नही था, रात में सोने का कोई ठिकाना नही था। गर्मियो मे वह बाहर कही भी सो जाता था और जाडो मे खलिहानो, गोशालाओ अथवा अस्तबलो मे जहाँ कही भी सुविधा देखता चुपचाप जाकर सो जाता, किसी को पता तक न चलता। सुबह गाँववालो के जगने के पहले उठकर चुपचाप बाहर निकलकर रास्ता नापता। किस मकान के किस स्थान मे कौन ऐसा छिद्र है, जहाँ रात को एक आदमी चुपचाप आराम से सो सकता है, इसका पूरा-पूरा पता उसे रहता था। कभी-कभी वह सूखे घास की बडी-बडी गञ्जियो के भीतर जाकर लगातार कई दिनो तक आराम से छिपा रहता। ऐसा वह तभी करता जब उसके पास कुछ दिनो के भोजन का यथेष्ट सामान जुट जाता।

मनुष्यो के बीच मे रहने पर भी वह जगली पशुओ की तरह जीवन बिताता था। न किसी मनुष्य से उसका किसी प्रकार का व्यक्तिगत सम्बन्ध था, न किसी से घनिष्ठ परिचय, न कोई व्यक्ति उसे चाहता था, न उसके मन मे किसी विशेष व्यक्ति के प्रति ममता थी। गाँव के किसानो के मन मे उसके प्रति दया का भाव उत्पन्न होने के बदले, एक प्रकार की विद्वेषपूर्ण घृणा का भाव वर्तमान था। उन्होने उसका नाम 'घण्ट' रख छोडा था।

इसका कारण यह था कि वह दो बैसाखियो के बीच में घंटे की तरह लटकता हुआ दिखाई देता था।

इधर दो दिन से उसे खाने को कुछ भी नही मिला था। इतने वर्षों से उसे भीख देते-देते लोग उकता गये थे, और अब कोई एक टुकडा भी उसे नही देना चाहता था। कोई किसान जब उसे अपने दरवाज़े की ओर बढते देखता तब दूर ही से चिल्लाकर कह उठता—"यहाँ आने की कोई आवश्यकता नही है। तुम्हे यहाँ से अब कुछ नही मिलेगा। अभी उस दिन तुम्हें यहाँ से एक टुकड़ा रोटी का मिल चुका है।"

यह सुनते ही वह बैसाखी टेकता हुआ बगलवाले मकान की ओर चला जाता। पर वहाँ से भी ठीक उसी प्रकार की बात उसे सुननी पडती। गाँव की स्त्रियाँ स्पष्ट शब्दो मे आपस में यह कहने लगी थी कि "इस आवारे को वर्ष भर खिलाते रहने का ठेका किसी ने नही ले रक्खा।"

पर कोई चाहे कुछ कहे, आवारे के पेट मे प्रतिदिन कुछ न कुछ खाद्य पदार्थ तो अवश्य ही जाना चाहिए। वह गाँव के कोने-कोने मे चक्कर लगा आया; पर कही से न एक टुकडा रोटी का उसे मिला न एक अधेला। केवल एक स्थान शेष रह गया था, जहाँ से कुछ मिलने की आशा की जा सकती थी। पर वह स्थान काफी दूर था और दिन भर चलते रहने से 'धट' इस कदर थक गया था कि अब अधिक चलने की सामर्थ्य उसमें नही रह गई थी। एक तो वह भूख से विकल था, तिस पर दिन भर का परिश्रम व्यर्थ सिद्ध हो गया था। फिर भी उसने कमर कसी और चल पडा।

दिसम्बर का महीना था। कडाके की सर्दी पड़ रही थी। तलवार की धार के समान तीक्ष्ण हवा के झकोरे सारे शरीर को काटे खाते थे। आकाश में घने काले बादल लँगडे की तरह ही इधर-उधर चक्कर लगाते

फिरते थे। अभागा लँगडा दोनो बैसाखियो और काठ के एक पाँव को ज़मीन पर टेककर बडे कष्ट से धीरे-धीरे चल पाता था। बीच-बीच में किसी खाई के पास बैठकर वह कुछ क्षण के लिए सुस्ता लेता था। भूख के कारण भोजन के अतिरिक्त और किसी वात की चिन्ता उसे नही रह गई थी। पर कैसे, किस उपाय से भोजन प्राप्त हो सकेगा, यह वह नही सोच पाता था।

तीन घटे तक वह चलता रहा। अन्त में जब वह निर्दिष्ट स्थान के पास पहुँचा तब वह कुछ तेज चाल से चलने लगा। सबसे पहले वह जिस किसान के दरवाज़े पर भीख माँगने गया उसने उसे देखते ही दुतकारना आरम्भ कर दिया। उसने कहा—"तुम फिर आगये! न जाने कब तुमसे छुटकारा मिलेगा!"

'घट' ने जब यह फटकार सुनी, तब वह दूसरे मकान की ओर आगे बढा। पर जिस दरवाज़े पर भी वह जाता था वहाँ से फटकार और दुतकार के अतिरिक्त और कुछ न पाता था। फिर भी वह आत्म-रक्षा की पशु-प्रवृत्ति से प्रेरित होकर आगे बढता चला गया और भीख माँगता रहा। पर कही से एक पैसा भी उसे प्राप्त न हुआ। वह बडे-बडे खलिहानो के मालिको के पास गया, पर किसी ने उसे एक दाना भी देना स्वीकार न किया। आज सब लोग उसे भीख न देने पर तुले हुए थे। इसका एक कारण यह भी था कि उस दिन ऐसा भयकर शीत पड रहा था कि सबके हाथ-पाँव ठिठुर गये थे और दिल भी ठढे पड गये थे। किसी भिखारी को कुछ देने के लिए न तो किसी के भीतर कुछ उत्साह रह गया था, न जाडे से अकड़ी हुई मुट्ठी ही खुल पाती थी।

जब वह एक-एक करके अपने परिचित सब घरो में हो आया और कही से कुछ न मिला, तब हताश होकर मोशियो शिके के आँगन की बगल-

वाली खाई के पास बैठ गया। बैसाखियो को उतारकर उसने अलग रख दिया और भूख से अत्यन्त थकित होकर स्तब्ध भाव से वहाँ पड़ा रहा। वह इतना मूर्ख था कि अपनी अत्यन्त शोचनीय दुर्दशा की ठीक-ठीक कल्पना करने मे असमर्थ था। तथापि एक प्रकार की अवर्णनीय और असहनीय बेचैनी का अनुभव वह अपने भीतर कर रहा था।

मोशियो शिके के आँगन के कोने मे वह एक अज्ञात आशा लेकर किसी बात की प्रतीक्षा करता रहा। भयकर शीत से सिहरता और ठिठुरता हुआ वह किसी अलौकिक सहायता की प्रत्याशा में बैठा रहा। उसे विश्वास था कि उसे कही न कही से भोजन अवश्य मिलेगा, पर कहाँ से और कैसे मिलेगा, यह वह नही जानता था।

सहसा काले रग की मुर्गियो का एक दल चुगता हुआ उधर से निकला। एक-एक दाना अथवा एक-एक कीडा चोच से पकडकर मुँह मे डालते हुए वे मुर्गियाँ स्थिर, निश्चित पगो से आगे को बढती चली आ रही थी। 'घट' उनकी ओर निर्विकार दृष्टि से देख रहा था। अकस्मात् उसके मस्तिष्क मे यह कल्पना जगी, अथवा यह कहना अधिक उचित होगा कि उसके भूखे पेट को यह अनुभव हुआ कि उसके सामने चरने-चुगनेवाले वे जीव आग मे भूनकर खाये जा सकते है।

उसने इससे अधिक और कुछ न सोचकर सामने से एक पत्थर उठाया और जो मुर्गी सबसे निकट थी उसे उस पत्थर की चोट से मार डाला। दूसरी मुर्गियाँ मारे भय के आर्तनाद करती हुई बडी तेज़ी से वहाँ से भाग खडी हुई। 'घट' अपनी बैसाखियो के सहारे उठकर उनके पीछे-पीछे दौडा। उसके दौडने की चाल भी मुर्गियो की ही तरह थी।

ज्यो ही वह एक मुर्गी को पकडने के लिए झपटा त्यो ही किसी ने पीछे से एक बड़ा भयकर धक्का दिया, जिसके फलस्वरूप वह फुटबाल की तरह लुढकता हुआ दस पग आगे जा गिरा। मोशियो शिके क्रोध से अन्ध होकर उसे घूँसे पर घूँसे मारते चले गये और साथ ही लातो से भी उसकी वेभाव की पूजा करते गये। कोई भी कृषिजीवी किसी चोर या डाकू के अपराध को साधारण अपराध नही समझता, और जो चोर दुर्बल हो, और अपनी रक्षा करने मे असमर्थ हो उसे और अधिक निर्ममता से पीटने मे उसे सुख प्राप्त होता है।

जो किसान मोशियो शिके के अधीन काम करते थे, वे भी अपने मालिक का हाथ बटाने के उद्देश्य से दौडे चले आये और उस लँगडे भिखारी को मारते-मारते उन्होंने उसका कचूमर निकाल दिया। जब बहुत पीटने के कारण उनके हाथ-पाँव थक गये, तो उन्होंने उसे उठाकर एक कालकोठरी के भीतर बन्द कर दिया और किसी एक पुलिसवाले को बुलाने चले गये।

'घट' अधमरा, लहूलुहान और भूख से व्याकुल होकर पृथ्वी पर निश्चल अवस्था मे पडा हुआ था और ठढ से अकड रहा था। सध्या हुई, रात्रि आई और फिर सबेरा हुआ। उसे खाने को एक टुकडा भी कही से प्राप्त न हो सका।

दोपहर के समय पुलिस का सिपाही वहाँ पहुँचा और बडी सावधानी से दरवाजा खोलने लगा। मोशियो शिके ने यह झूठी रिपोर्ट दी थी कि कुछ डाकुओ ने उनके ऊपर आक्रमण किया और बडी कठिनाई से उन्होंने उन बदमाशो के हाथ से अपने प्राण बचाये। इसलिए पुलिस का सिपाही डर रहा था कि भीतर छिपे हुए डाकू प्रतिरोध करेंगे।

पुलिसवाले ने चिल्लाकर कहा—"चलो, उठो! खड़े होओ!"

पर 'घट' टस से मस न हो सका; यद्यपि उसने उठने की चेष्टा की। लोगो ने समझा कि यह केवल बहानेबाजी है। उसे फिर एक बार बुरी तरह पीटा गया और बलपूर्वक उसे बैसाखियो के बल खडा कराया गया। लँगडे के हृदय मे एक भीषण आतक समा गया था, उसकी वही दशा हो गई थी जो बिल्ली को देखने से चूहे की होती है, बाघ को देखने से गाय की होती है। उस आतक ने उसे एक अमानुषिक बल दे दिया और वह मृतप्राय होने पर भी उठ खडा हुआ।

पुलिसवाले ने अधिकार के स्वर मे कहा—"चलो!" 'घट' चलने लगा। खलिहान के सब किसान अत्यन्त कौतूहलपूर्वक उसे बैसाखियों के बल चलते हुए देखने लगे। किसान-स्त्रियाँ उस 'डाकू' के प्रति अत्यन्त रुष्ट होकर उसकी ओर घूँसे तान रही थी। वह शान्ति के सरक्षक के साथ चला जा रहा था। कैसे जा रहा है, क्यो जा रहा है, कहाँ जाना होगा, इस सम्बन्ध मे कुछ भी सोचने या समझने की शक्ति उसमे नही थी। वह केवल चला जा रहा था। रास्ते मे लोग उसे देखने के लिए खडे हो जाते थे और किसान लोग आपस में कहते थे—"वह देखो, 'डाकू' जा रहा है!"

रात तक वह पुलिसवाले के साथ लँगडाता हुआ चलता रहा। जब वे लोग शहर मे पहुँचे, तब एक नये अपरिचित जगत् मे अपने को पाकर वह अभागा लँगडा किसी अज्ञात भय से उद्विग्न हो उठा। रास्ते भर वह एक शब्द भी नही बोला था, और न उसके बाद ही कुछ बोलने की शक्ति उसमें रह गई थी। इसके अतिरिक्त इतने वर्षों से उसे किसी से कुछ न

बोलने की आदत-सी पडी हुई थी और उसके मस्तिष्क मे जो विचार बीच-बीच अत्यन्त क्षीण रूप से उत्पन्न होने थे, वे ऐसे उलझे हुए रहते थे कि उन्हे शब्दो के रूप में प्रकट करने मे वह अपने को असमर्थ पाता था।

उसे कोतवाली की एक कालकोठरी मे बन्द कर दिया गया। पुलिस के कर्मचारियों ने उसे खाने को कुछ देने की आवश्यकता नही समझी। रातभर वह बिना कुछ खाये पडा रहा। दूसरे दिन जब उससे प्रश्न करने के लिए कालकोठरी का दरवाजा खोला गया, तो पुलिसवालो ने उसे मरा पडा पाया। इस घटना से उन लोगो को बडा आश्चर्य हुआ।

आगामी २०० पुस्तकें

नीचे लिखी २०० पुस्तकें शीघ्र ही छप रही हैं। ये हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों-द्वारा लिखाई गई हैं। आप भी इनमें से अपनी रुचि की पुस्तकें अभी से चुन रखिए और अपने चुनाव से हमें सूचित भी करने की कृपा कीजिए।

विचार-धारा

मानव-संबंधी

(१) जीवन का आनन्द
(२) ज्ञान और कर्म
(३) मेरे अन्त समय के विचार
(४) मनुष्य के अधिकार
(५) प्राच्य और पाश्चात्य समस्या
(६) मानव-धर्म
(७) जातियों का विकास
(८) विश्व-प्रहेलिका

समाज-संबंधी

(१) संस्कृति और सभ्यता का विकास
(२) विवाह-प्रथा, प्राचीन और आधुनिक
(३) सामाजिक आन्दोलन
(४) धर्म का इतिहास
(५) नारी
(६) दरिद्र का क्रन्दन

राजनीति-संबंधी

(१) समाजवाद
(२) चीन का स्वातन्त्र्य-प्रयत्न
(३) राष्ट्रों का संघर्ष
(४) स्वाधीनता और आधुनिक युग
(५) युवक का स्वप्न
(६) योरपीय महायुद्ध
(७) मूल्य, दर और लाभ

विश्व-उपन्यास

(१) तावीज़
(२) आना कैरेनिना
(३) मिलितोना
(४) डा० जेकिल और मि० हाइड
(५) पंपियायी के अन्तिम दिन
(६) अमर नगरी
(७) काला फूल
(८) चार सवार
(९) रेबेका
(१०) डेविड कूपर फील्ड
(११) जेन्डा का कैदी
(१२) बेनहूर
(१३) केविडिस
(१४) रोमियो-जूलियट
(१५) दो नगरों की कहानी
(१६) टेस
(१७) रहस्यमयी

आधुनिक उपन्यास

(१) चुनारगढ़
(२) विषादिनी

(३) कालरात्रि
(४) मुक्ति
(५) यादगार
(६) द्वादशिकी
(७) दाना-पानी
(८) विप्लव
(९) जलती निशानी
(१०) ग्रहचक्र
(११) कजरी
(१२) जयमाला
(१३) उत्कंठिता
(१४) लहर
(१५) विचित्रा (नाटक)
(१६) जयंती
(१७) आलमगीर
(१८) कर्णार्जुन

रहस्य-रोमांच

(१) ताज का रहस्य
(२) शैतान
(३) धन का मोह
(४) कोशलगढ़ का किसान
(५) पहाड़ी फूल
(६) अन्तिम परिणाम
(७) अद्भुत जाल
(८) मृत्यु का व्यापारी
(९) यौवनशिखा
(१०) विद्रोही
(११) छिपा ख़ज़ाना
(१२) गर्विता
(१३) चेतावनी
(१४) देश के लिए
(१५) दोस्त
(१६) चाँदी की कुञ्जी
(१७) आदर्श युवक
(१८) हुल्लड़
(१९) शैतान डाक्टर
(२०) प्रतिशोध
(२१) अन्याय का अन्त
(२२) प्रोफ़ेसर चौधरी
(२३) वज्राघात
(२४) समय का फेर
(२५) डाक्टर कोठारी का लोभ
(२६) चीन का जादू
(२७) नीला चश्मा
(२८) हार
(२९) अफ़रीदी डाकू
(३०) ख़तरे की राह
(३१) जाला मकड़ी का
(३२) अदृश्य आदमी
(३३) साहस का पहाड़
(३४) अंधेरखाता
(३५) कंकन का चोर
(३६) अपूर्व सुन्दरी
(३७) लौह लेखनी
(३८) गुप-चुप
(३९) लाल लिफ़ाफ़ा
(४०) कल की डाक

कहानी-संग्रह

('क' विभाग)—विदेशी भाषाओं की चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

('ख' विभाग)—लेखकों की अपनी चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

('ग' विभाग)—विभिन्न विषयों पर चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

('घ' विभाग)—भारतीय भाषाओं की चुनी हुई कहानियाँ—६ भाग

विज्ञान

(१) स्वास्थ्य और रोग
(२) जानवरों की दुनिया
(३) आकाश की कथा
(४) समुद्र की कथा
(५) खाद-विज्ञान
(६) मनुष्य की उत्पत्ति
(७) प्राकृतिक चिकित्सा
(८) विज्ञान का व्यावहारिक रूप
(९) प्रकृति की विचित्रतायें
(१०) वायु पर विजय
(११) विज्ञान के चमत्कार
(१२) विचित्र जगत्
(१३) आधुनिक आविष्कार

हिन्दी-साहित्य

अमर साहित्य

(१) वैष्णवपदावली
(२) मीरा के पद
(३) नीति-संग्रह
(४) हिन्दी की सूफी कविता
(५) प्रेममार्गी रसखान और घनानन्द
(६) सन्तों की वाणी
(७) सूरदास
(८) तुलसीदास
(९) कबीरदास
(१०) बिहारी
(११) पद्माकर
(१२) श्री भारतेन्दु

साहित्य-विवेचन-निबंध-संग्रह, इत्यादि

(१) हिन्दी-साहित्य में नूतन प्रवृत्तियाँ
(२) हिन्दी-कविता में नारी
(३) हिन्दी के उपन्यास
(४) हिन्दी में हास्य-रस
(५) हिन्दी के पत्र और पत्रकार ?
(६) हिन्दी का वीर-काव्य
(७) नवीन कविता, किधर
(८) ब्रजभाषा की देन
(९) हिन्दी के निर्माता (द्वितीय भाग)
(१०) बालकृष्ण भट्ट
(११) बालमुकुन्द गुप्त
(१२) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(१३) बाबू श्यामसुन्दरदास

धर्म

(१) गीता (शङ्करभाष्य)
(२) „ (रामानुजभाष्य)
(३) „ (मधुसूदनी टीका)
(४) „ (शङ्करानन्दी टीका)
(५) „ (केशव काश्मीरी की टीका)
(६) योगवाशिष्ठ (११ मुख्य आख्यान)

(७) सरल उपनिषद् (ईश, केन, कठ, मुंडक, प्रश्न, ऐतरेय, तैतिरीय, श्वेताश्वतर आदि) २ भाग
(८) पुराण (समस्त पुराणों के चुने हुए शिक्षाप्रद और मनोमोहक कथानक)
(९) महाभारत के निम्नाङ्कित अंश
क–(विदुरनीति)
ख–(सनक सुजातीय)
ग–(नारायणीय उपाख्यान)
घ–(श्रीकृष्ण के समस्त व्याख्यान)
ङ–(वन, शान्ति और अनुशासन-पर्व के आख्यान)
(१०) पातञ्जल योगदर्शन (व्यास भाष्य)
(११) तंत्र सर्वस्व
(१२) पौराणिक संतों के चरित्र
(१३) उत्तर-भारत के मध्यकालीन संत
(१४) दक्षिण-भारत के संत
(१५) आधुनिक संतों की जीवनी (श्री अरविन्द, रमण महर्षि, विवेकानन्द, उड़िया बाबा आदि
(१६) पतिव्रताओं और सतियों के चरित्र

ऐतिहासिक विचित्र कथा

(१) भारत का प्राचीन गौरव
(२) प्राचीन मिस्र का रहस्य
(३) प्राचीन ग्रीक की सभ्यता
(४) मृत्युलोक की झाँकी
(५) अमेरिका का स्वाधीनता-युद्ध
(६) फ्रांस की राजक्रांति
(७) रोमनसाम्राज्य का पतन
(८) क्रांति की विभीषिका
(९) रोम के महापुरुष
(१०) इत्सिंग का भारत-भ्रमण
(११) ध्रुव प्रदेश की खोज में
(१२) प्राचीन तिब्बत
(१३) सहारा की विचित्र बातें
(१४) मरहठों का उदय और अस्त
(१५) सिक्खों का उत्थान और पतन
(१६) भारत के पूर्वी उपनिवेश
(१७) मुगलसाम्राज्य में भ्रमण
(१८) मुगलों का दरबार
(१९) लखनऊ की शाहजादियाँ
(२०) विदेशी यात्रियों का भारत-वर्णन
(२१) नरभक्षकों के देश में—
(२२) पशुओं, मानवों और देवों में—

जीवन-चरित्र

(१) नेपोलियन बोनापार्ट
(२) लेनिन
(३) भारतीय राजनीति के स्तम्भ (१)
(४) तुर्की का पिता कमाल
(५) मेजिनी—इटली का वीर
(६) सन-यात-सेन—चीन का नायक
(७) एब्राहिम लिंकन—अमेरिका का नेता

सरस्वती सिरीज़

(१) विचार-धारा

(१) दैनिक जीवन और मनोविज्ञान
(२) समाज और सेक्स
(३) भारत की राजनैतिक जागृति
(४) परलोक-रहस्य

(२) विश्व-उपन्यास

(१) क्रान्तिकारी
(२) ताया
(३) नाना
(४) अभिसारिका
(५) बुभुक्षा
(६) शुक्लवसना
(७) धरती माता
(८) पुनरुत्थान

(३) आधुनिक-उपन्यास

(१) समरकंद की सुन्दरी
(२) नरक
(३) दुर्गेशनन्दिनी
(४) नया कदम
(५) मृत्यु-किरण
(६) वंचिता

(४) रहस्य-रोमांच

(१) चक्रभेद
(२) चीनी डाक्टर
(३) निरपराधी
(४) छिपा महल
(५) महान् अपराधी
(६) विचित्र मूर्तियाँ
(७) जीवन-ज्योति
(८) अग्रणी
(९) चिता का भस्म
(१०) रहस्य-भेद
(११) इंसान की डायरी

(५) कहानी-संग्रह

(१) रूसी कहानी-संग्रह
(२) मोपासाँ की कहानियाँ
(३) समस्या का हल
(४) हिन्दी की चुनी हुई कहानियाँ

(६) विज्ञान

(१) पृथ्वी का इतिहास
(२) मानवशरीर

(७) हिन्दी-साहित्य

(१) सूर-संदर्भ
(२) हिन्दी के निर्माता [१ भाग]
(३) गद्यालोचन
(४) पद्यनिका (कविता-संग्रह)
(५) हिन्दी के वैष्णव कवि

(८) धर्म

(१) रामकृष्णवचनामृत
(२) हिन्दी ऋग्वेद—छः भागों में
(३) धर्म का उद्भव
(४) हिन्दू-धर्म का व्यावहारिक रूप

(९) ऐतिहासिक विचित्र कथा

(१) आधुनिक जापान
(२) पुरातन पूर्व
(३) रूस की क्रान्ति

(१०) जीवन-चरित्र

(१) मेरा संघर्ष (हिटलर)
(२) राजर्षि विवेकानन्द
(३) डिक्टेटर